कौं सकुद्धताविभावनिधैं ॐ गोराघचि दानंद अस्कंदविभाग प्रभाव स्मनका कौं त्रिभुवन
त्रिकाल तात अनंत पात म्याना कौं सुहात वात नहीं ता मंगल कौं बनारसी दास जु
कैं हृदय ॐकार वास असौ परकास ससि पंक्ति कासकन कौं ॥१॥ निरमल ध्यान के
प्रकार पंच नर लोक तामैं ऊर्ध्व ध्यान परधान करि पायौ है ताके मूल दोइ सत्रु अक्षर
अनक्षर मैं अनक्षर आदि दिन सैन मैं बनायौ है बावन बरन ताके अंस ज्ञान मंनि
पात तामैं रूप ॐकार सज्ञान कहायौ है बनारसीदास अंग बादसा विचार या मैं ऐसौ
ॐकार कं व मात्रा नाहि आयौ है ॥२॥ महामंत्र गायत्री के गुपित स्वरूप मैं कौं ज्ञात
म त्र देस कोई पद मप्रकास है तापर असौ कव बड़ सत्र धुन ना नर स्यौं प्रगट सम
गिनि गनवसै एक वास है सारी कौं अकार नामैं रुद्र रूप चित्त बनत महमं वाम

२६

नकुषवेव॥९९॥ कवित्त●३॥ अबओग॥ जैनवंससरोरहंस दिगंबर मुनिपति अजित
अति आरज ताके पद वादिमदभंजन प्रगटे विजैसेन आचारज ताके प[illegible]नर॥
सोमप्रभमुनि नगरंथ सु कियो हितकारज ताके पद जनसकनत अवधारत हौं किक
रुष गेकुरुप अनारज॥१००॥ दोहरा॥ कौंरपाल वनारसी मित्रजुगल इकचित्त तिन
गरंथ भाषा कियो बहुविधि छंद कवित्त॥१०१॥ सोरहसै इक्यानवे रितु ग्रीषम वै
साष सोमवार एकादसी करनखत्र सितपाष॥१०२॥ नाम सूक्तिमुक्तावली द
विंसति अधिकार सतसिलोक परवान सव इति गरंथ पाथि सार॥१०३॥ इति श्री
सिंदूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावली नामगरंथ सं[illegible]॥२॥ अथ बावनी लिख्यते
सवैया॥१॥ ॐकार सबद विहद याके उभय सरूप एक आतम भाव एक पुदगल

(ग) ५६ श्री जैनसिद्धांत भवन

BHAVAN * ARRAH

आनमानवृद्धौसरधानयानवानछूहोइद्यकरसैं करमव्याधिरोगलोगजोग
भोगरातेजोगीत्रियाजोगीकरामातिहकौंतरसै दुर्गतिविषादनउछाहस्करभवन
वाससमनासकौठिंति आतमीकमेघवरसै बानारसीदासजूकैवदनरसऐसैसरसि
यातेंअरसकौंपरसै ॥६॥ आवरणसमलविमलभयौताकेतुलैमोहआदिहनें
काहूकालग्यानकसिया लीनभयौलवलागीमगननविभावत्यागीजोनिजउद्योततहो
तौनिजग्यानपासिया बानारसीदासनिजआतमदकासभर आवैतेनजाइएक
ऐसेवासवसिया अरसपरसदस आधही अनंतजंतस्करससवादराज्यैसोई
मीचौरसिया ॥७॥ इसहीस्करसकेसवादीभएतेतौस्कनैतिथंकरचक्रवर्तिसेली
अध्यातमकी वलवासदेवपतिवासहैबबिग्या हरचारनमुनिंदइंदकैसीसुखि

सा

व्रततामैंवक्रभासहै ऐसौओंकारकौअमृतचूलमूलरसबानारसीदासजूकैंवंद
नविलासहै ॥३॥ सिद्धरूपत्रिविधरूपभेषअवभेषरूपनररूपनायरूपविधरूपवा
तमा पुरुरूपध्यानरूपध्यायकगंभीररूपभोगनूपभोगीरूपसकरसकहातमैं एक
रूपआदिरूपअगमअनादिरूपअसंखअनंतरूपजातिरूपजातिमा बनारसीदा
सद्रव्यपरजायविवहाररूपकै अतासभावरूपयहैकैआतमा ॥४॥ वंदनाउछंद
यमपौक्षनाविसारिगयोपरगुनरंगिरुघोपरहीकौदुषिया निजनिधिनिकटवि
कटभेईऐसैंनविलंकुषिनकमैंसषीतातैंषिनकमैंदुषिया समकितजलविनाशिषित
अनादिकालविषयकषायवनिअरणामैंदुषिया बानारसीदासजिनरीतिविप
रीतिजाकैंमेरेजानैतेतौनरमूढनिमैंसुषिया ॥५॥ अनभवध्यानवैतैंनिदानचै ७

नारसीदासजिनवचनप्रकासकानिऔरवैनकह्यौंचाहैंतासौंऐसौकहियै॥१०॥
ऊंचौवेसकीवडाईदीनतपणौंश्रीमतिताईगुणगरवाईपिकलाईघणौफिरैहै व
चनविलासकौनिवासवनमघनाईचतुरईनागरनरकौरनिकौघेरहै कीरति
सराहकौप्रवाहवहैमहानदीएतीहैसउपमाहैंसवैजगजेरहै हेरिहेरिदेषौ
कौऊऔर वअनेरौऐसौवानारसीदासवसुधामैंगिरमेरहै॥११॥रीतिविपरी
तिरंगराच्यौपरगुनरसछायौऊवैभ्रमनातैंछूटीनिधिघरकी तेरैघररिद्धिहै
अनंतआपुरंगआयेनेकुजोमन्नूरीकरैहारैहोईहोइहरकी काईकेउपाइ
सेतीएतीहोंसपूरैमलैनिजत्रियातूवैजेतीहोंसपूरैंजेनरकी वानारसीदासक
हैमूढकेविचारपहैकौटीधनजनभयौंचाहैआसकरैपरकी॥१२॥रितुवरसा

ग्रमकी अठावीसौ लवधि के विविध संधै साधा साधक सिद्धगति नराकी नीसरणी अग
गमकी बानारसीदास ऐसौ अमी कुंद पिक पायौ तहां लौं पकै त्रिकाल क्रम की
नजमकी ॥८॥ इतर निगोद मैं विभावता के वक्र रूप तामैं है स्वभावता के एक अं
स आवै है वहै अंस तेज पुंज बादर अगिनि जैसौ एकतें अनेक रस सरसना बढावै है
आगैं और बढौ घुन वक्र भ्रात नर देह देह देही मिलन देषे भिन्न नाहीं भावै है
बानारसीदास निज ग्यान कौ प्रकास भए सुद्धता मैं वास किए सिद्धपद पावै है
॥९॥ उदै भयौ भान कौ कुपंथी उग्रौ पंथ काज कहै नैंन तें जथा रो दीपक रचाहि
यै कोक कोटी धंजनू पछत्र छाह पुर तजि नाहि हौं सभै जाइ गुंम वास रहियै
मैंगल अवंन तजि काहू औसी इछा भई एक घर निज आसवारी काज चहियै बा

ह पढैं वधी कल वाजे पवन चाम ढोल मढियै दीपक सजोइ दीनौं चक्षुहीन ताकौं कर
विकट पहार वापै कव है न चढियै वानारसीदास तौसौ ग्यान के प्रकास भयैं लिख्यौ
कहा पढै कछु लिख्यौ है सो पढियै ॥१५॥ पंक मृतपिन तैसैं जल के संज्ञोग छूटै भाजन
विसेष कोटि विन कमैं भेद है तैसैं कर्मनीर चिदानंद की प्रनति सती ही सैं नर नारी
नपुंसक कौ विविधि वेद है वानारसीदास अब ताकौं धूप याकैं न पछूटत संज्ञाग एउ
पाधिन कौ छेद है पुमान के परचैं विसेष जीउ भेद मए पुग्गल प्रसंग विना आत
मत्र भेद है ॥१६॥ एही ग्यान सवद सौं नत भरता हि सग्या षटरस स्वाद मानैं तू तौला
हि मानिरं पिंड ह्वै देह नैक की पवरि न पाजे ता हि वाज परगुन निज गुन जानैं ता हि
जानिरं विषय क पाइ विनास मंनै नाहि छंदि अमल अषंड निरद्वि आनै ताहि र्म्र
के

तनदीनालसरजौंरवढैनाहिमारजादसागरकेफैलकी नीरकेप्रवाहतिनका
ववेंदवहैजातचित्रावेलिवाइचढैनाहीकाहूगैलकी वानारसीदासऐसेपं
चनकेपरपंचरचकनसेचित्रावेवीरकुप्रिछैलकी कठनआनीतिनकोप्रीति
परगुनमेतीऐसीरीतिविपरीतिअध्यातमसैलकी॥१३॥लिवरूपातीतलागी
पुन्यपापभ्रांतिभागीसहजसुभावमोहसैनावलभेदकी।ग्यानकीलवधिपाईआ
तमलवधिआईतेजपुंजकांतिजागीउमगअनंदकी।राहुकौविमानछूटैकला
प्रगटितपूरहोतिजगाजोतिजैसैंपूनिमकेचंदकी।वानारसीदासऐसेआठकर्म
करि भेदिंसककतिसंभालिदेषीराजाचिदानंदकी॥१४॥लिषतपढतठामगामलोकनन
कूकोटिऐसोपाठपढैकछुग्यानहूनवढियैमिथ्यामतीपाचिपचिसास्त्रकेसमू

कौन का अनुभव करत तव धरीन वस्त ज्ञानी न आगम ज्योति कै सौ जप करि है कौं
न को ज सलिता समुद जल को है आतम अमलनि सौ अवगाहन करि है काहे कौव
गाम से कलेस रूप करै त्रिय पुन्य पाप भेद कियै कहू न उध रि है बनारसीदास
जिन उक्त अमृत रस सोई ध्यान कबैं तू अनंत भव तरि है ॥२०॥ खेलत अनंत काल
भर पै न खेद पावै ती निसैनै ताल राजू माप की तलक मैं कैई स्वाग धरि खेलै वरष स्त्र
सेष कोटि कैई स्वाग करि ल्यावै पलक पलक मैं खेलै जेते जंतु तातै खेल हो अगणित गुणी
बानारसीदास जानैं ज्योति की झलक मैं खेलै तें बकत ख्याल देखै तें अलप जंतु देखे
भी खेल वैसे ख्यान है पलक मैं ॥२१॥ गुरु अनुभव तुव का का वका भर सकत सोर काल कील
वधि कल्प वेर्णी दूर ध्यान की गाम की आगम अनुछिद्र जोग उपयोग सकछिद्र जन रत्न

गिरै बानारसीदास ग्याता ग्याता होइ सोई जागै मेरे मीत ऐसी रीति चित साचि
गनिरै ॥१७॥ उद्यम करत नर स्वारथ के काज सब स्वारथ के उद्यम कौं फेर रह्यौ बहर
सौं स्वारथ कौं तजै निज स्वारथ कौं तजि रह्यौ सहर कौं बन जानै बन कौं सहर सौं
स्वारथ केरगराचे भलौ है जा तौ स्वारथ कौं पहिचानै स्वारथ पिछानै बिनु स्वारथ ज
हर सौं बानारसीदास ऐसे स्वारथ केरगराचे लोकन के स्वारथ कौं लागत कहर से
॥१८॥ उलट पलट नट खेलत मिलत सब याके उलटत भव एकती निवैर ह्यौ अजहूं
न गमि जावै विकथा श्रवन भावै महामोह निद्रा मैं अनादिकाल स्वैर ह्यौ बा
नारसीदास जागै आगै तासौं बनि आवै जिनवर उकत अमृत रस चौर ह्यौ उल
टि जो षलै तौ तौ ष्याल सो उवद धरै उलटि कै षिलै बिना षाटै ष्याल फेर ह्यौ ॥२०॥

रसमकित कौ ॥२४॥ चेचलानातावान वैमैं करी दे दे भूमि फेरै घर तरू भौंन दे सै घूंघ मत भर
मतैं यौंही पर जोग परनति सेती पर वंध उदय कौ भाव मूढ पावै न मरम तैं निजआतमातैंना
तैं घटन विसेष वान वढै पर जाय याही कठिन करम तैं बानारसीदास ऐसै विकल विभाउ
छूटै शुद्धि विसराम पावै सुभाव धर मतैं ॥२५॥ छत्रधारि वैठौ घनै लौंनि की भीर भार दीसत ग
स्वरूप सुसनेहनीसी नारी है सेना चारि सजि कै विरानै देससैं ही फेरी फेर सार करै मानौं औ
पर की सारी है कहत बानारसी वजाइ धौंसा वार वार राग रस राच्यौ दिन चार ही की वारी
है धु ल्यौन षजानौंन षजानची कौ वाज पायौ राज षसि जाइ स्वगौष ज्ञानैं विनु धारी है ॥२६॥
जाग्यौ राउ चेतन सहज उरलजुरि ञ्यारा जुरि कर्म रिपु भाव मन मैं उमाहिवी सरहद मैई
याकी लोकालोक परवान इइ वेद चितवत चौंप जर चाहिवी बानारसीदास ग्याता ग्याता-

रघज्वालाजागीफनध्यानकी हतम्यातादलजीतमोहसेनाआइवनीवानारसीदा
सज्ञू कुमकलीज्योग्यानकी जीवेनअवसजाकैवढूककीगालीलागेजागेनमिथ्या
तजोपैगोलीलागेग्यानकी॥२२॥घटमैंविघटघाटउलटकेरथवाटपरउनसाधेतेअनंत
कालतंथकौ फेकमुनिआरिइलापिंगलाकीसोजमईषटचक्रवेधिगैनजीत्यौमनमंथकौ
फलटोहैकमलवनारसीविसेषताकौफनिवेकीइछाभईजिनमतकूपकौ ऐसीहीकु
गतिपाइजोगीजोगनिधिसाधैजोगनिधिसाधैतोसिधावैसिद्धिपंथकौ॥२३॥नीचमतिहीनहैसो
तौनकैकेवलीपैकहैकर्महीनसोतौसिद्धपरमतकौ धियागारीधरैधियासारफतऐसी
धरीमेधाकेमिलापसोमथनानिजचितकौ मूरषकौहैतसोधैपरमअवधिवारतहांनविचारक
छुहितअनहितकौ वानारसीदासतासौंनिजग्यानगेहआएलोगनकीगारीलीसिंगा

मैनीपाहीघरकौ घरपरमारधनजानैं तातैं भ्रमघेरौ गेरबिना औरगेर अधरपदैधरसौंकौ पं
चकौ भगायौ करैपरपंचवेचडोह सेगूढसमूहकीयौ सोतौ पिंदपरकौ बानारसीदास ग्याता वृं
।दमैं विचारि देख्यौ परावर्त्तपूरनीत्रनम अैसेनर कौ ॥२०॥ गउमृगमद न्या नाभिकुदगलकु
नाविसस्यौ पवनतैं विसेषढैढै बनमैं साहिबकेकाजमूढ अटत अनेक गैर तनकौ ऊमि
न्नमानैं ततौलरैतनमैं कंव माहि मनिकौ कू मूरषविसरिगयौ सोतौ उपषानौं साचौ भयौ हीन
गनमैं बानारसीदास जाहिकाजकौ जगतफिरै सोतौ काजसरै तेरै एकहीवचनमैं ॥२१॥ कु
ल्यौ तूं निगोदकौ ऊ काल पाइ ताकि आयौ प्रत्येक सरीर पंचथावर मैं तैं धस्यौ कुनिविक
लिंद्री इंद्री पंचपरकार चारि नरक त्रिजंच देव कुनि कुनि संचस्यौ बानारसीदास अबनर
भवकर्मभूमि गंडे भेदकी नौ मोन्दू मारगमैं पवस्यौ चेतरे चतुर नर आज हैं तू क्यौ नचे

व

सेनावसि आई आदि जातैं अंत विना ऐसी ही निवाहिनी षजानची कनै ध्यान ग्यान कौ षजानौ
पूरौ सूरौ आपु सारिव स्कंधिर ऐसी साहिवी ॥२७॥ काया रुहि वासैं यामैं सौध केलि रहे त्रिव
लन रंग रंग रुहनिमैं आवता वामैं अनकाव धन धान परिग्रह पामैं वामैं मल पंक जाही वंधडोर
भावता वनारसी दास वामैं आकृति अनेक उवै षद कुलन कोंकि जोनि ज्ञाति दोष लावता व
सौ ज्ञात जलतामैं रातक विभौं उवै आतम वाहिर तामैं कहातें स्नावनो ॥२८॥ निज काज सब ही
कौ अध्यातम सैली साज मूढ क्यौं न षोजि देषै षोजे और वानमैं सदाय है लौ करीति सनी है
वानारसी जी वचन प्रसाद नैकु ध्यातानि कौ कानमैं चेरी जैनैं मलिन मलिन भावति विरानै पाउप
रसन रंजिवे कौं साज औ विहान है निज पाव क्यौं न धोवै कोऊ रस षी ऐसी कहे मौसी कोऊ
आलसिनि और न सहानमैं ॥२९॥ टेक करि सूरष विरानै घर टेकि रह्यौ जानैं मेरो है घर

षितनजोगपरजारेसे बानारसीदासएतौपुब्बकृतबंधताकैउदईकभावतैंईआमोदक
रिधारेसे जबलगमुततौलौंतत्वकीपछ्याचिनाहि तबपारामूढमतीलागेमतवारेसे॥
॥२५॥थिरध्यानउपलविपुलजोतिसरनीरसत्ताआपुआपनीनकौऊकाकैदलकौ
भासैअतिविव आभावइसोअनेकफेनबूजतोसौ दीसैपैनबूझैयाभघलकौ जाकीदि
हिपुग्गललौचेतननाभिन्न वितैंआचरनहै षैसरधानविमलकौ बानारसीदासम्य
नआतमसरूपरजनकोलैपरजाइसोबिकारकर्ममलकौ॥२६॥दर्वथकीकहैंनकीनर
द देहमात्रभावथकीलोकपरवानवाकीरधिना भावसरदहयाकीआलोकतेंअधिकाई
।तौकमनकाजकारीबातेंकछुसिधिना याकेतौअवेधरिद्धिअमलअवंदपूरवाकै
सेनापदलकछुनिजरिधिना बेनारसीदासदोज्ञनोढिदेपीउनिमामैराकदिसतेरी

तैऽसअवतार आयौ एते घाट उतस्यौ ॥३२॥ ढूंढे ज्यौं न सागर मैं नैकहूं मढी लक-
रै खार जल वसै वाके खार जल पैन ही ओतिवदासीता हरि कैतारचा श्रोत स्वा-
द स्वादी होइ सोई स्वाद कौ ऊका हू दैन ही सूभर विभावा सिध समता स्कभाव
श्रौत वानारसी ला भै ताकौ न मन कौ भैन ही सीतीमछरि वोस्क भाव ग्याता गहि-
रा ब्यौचा ब्यौ सोई जानै भै पाका हि न ही ॥३३॥ नैनन तै आगम आगम याही वैन न तैं
उलट पलट वहै काल कूट कहरी मूल विना पाएं मूढ कैसैं जोग सधि आवैं तौ तौ
भैया ते तौ वकी राज नीति वि हरी वानारसी दास ग्याता जापै सधै सोई जानै उदधि उथ-
न तैं आधिक मन लहरी ॥३४॥ तत्वा निज्र काज वस्यौ मत पर गुन गह्यौ मन कौ लहरि
मानौ मसै नाग कारसै षिनकमैं तपी षिनज - पी के कैं जाप जपै षिनक मैं जोगी

सहज मनाधिकी अगमगम्यि गहरी ॥
श्रीध्यानसमुद्रमोतैं [illegible] ग्रं: ६

हि जोगराज है छठी बुद्धि परपंच जेत बार बार काज जाके बानारसीदास सत्रु सत्र अगमत्र
माज है जैसे बास बसै लोइ तामैं तैसी बुद्धि होइ जैसी बुद्धि तैसी क्रिया क्रिया तैसो का
ज है ॥४०॥ फटिक पषान ताहि मोती करि मानै कोऊ घूंघची रकत कहै रतन समान
है हंस बग सेत दुहू सेत कौन हेत कछु रीरी पीरी नै कहा कंचन के वान है भेष भ
गवान के समान कोऊ ज्ञान न भयो मुजाकौ मैमान नय कहा मोक्ष कौ सथान है बाना
रसीदास ग्याता ग्यान मैं विचारि दे ष्यो काइ जोग के सो होउ गुन परधान है ॥४१॥ वेद पा
व वाल वृत्ति कहै पै विचार विना सिव कोई। भिन्न जानि सैव गुन-गावही जैनी पर जत
न जतन निज भिन्न जानै बानारसी कहै चार बाक धंध धावही बोधक है बुद्ध रूप काहू
कहै सब वसै न्याय के करनहार ऊरध बतावही छहों दरसन माहि छतो ग्या हि छिपिर

विधि एक दिसे विधिना ॥३७॥ धम हे व वचन रचन जैसे गिरिराज मिथ्यात वचन सि
धा रछापटे तरै. पाषान जैसे ज्ञाति एक जैतो भेद मूरष दरस जैसे दरस महेत रै ।
बानारसी के केसार अन्मसार जैसे जनम कस्यौ सज जैसे होसमन रनेतरै अध्यातम
सैली अन्मसैली कौ विचार ते सौष्पाता की सकइ ए माहि लागै ए तौ अंतरौ ॥३८॥ न
रभव पाइ पाइ वक्रम भूमि धाइ देषौ पर भुनगा इगाइ वक्र देह धारी है नरभव पीछे
देह नरक अनेक भव षिरि नर असंष्यात वारी है एक देह नभव पीछे तिर्यंच अनंत भव
बानारसी ऐसी निवाऽषकारी है पाइ कै सुमति पाइ मोह सैना विछुराइ अवचित
नैदराइ सकति सनारी है ॥३९॥ वाकर वरन सूद वास तव देह कुदी अस्कन कौ का
जता हि ताते वकी लाज है वैसकौ विचार वा कै कछू करतूति फेर वै लघा मसोतौ लौन ७

कीमहलमें सीरनीसकलध्यानअनहदनादतानगानगुनमानकरैसुजससहलमें
बानारसीदासमधनायकसभासमूहअध्यातमसैलीसैनमोखकेमहलमें॥५५॥र
सातालतलैपंचगोनकअनंतजंतुतामैंहोकरासिअंतुरहनसरूपहैंकंदुकमध्य
रजौलौंअगनितैंभिन्नताईचिक्कनाताभावताकजैसैंतेलरूपहै जैसैंकोऊगा
तिअंधचोरंदीनकहियतद्रव्यकौविचारमूढभावकौनिरूपहै बनारीदासप्रभु
वीरजिनेंऐसोकह्यौ आतमा अभव्य भैयासोभीसिद्धरूपहै॥५६॥लन्ककोटि
जोरिजोरि कंचनअंबारकियौकरतामैंयाकौएतोकरैमेरीसोनकौं ऐसोबन
वैतदेषिमोहनृपकुसीभयौसेनापतिथाप्यौजैसैंअहंकारमोनकौ धामधनभयौ
मेरैंऔरतौनंकामकछु सुषविसरामसौंनपावैकहूंथौनकौ बानारसीदास

सौ। छूटै। न मिथ्यात तातै प्रगट न पावही।।४२।। जे पद्धरि कोटि कनटौ। है लक्षचौ-
रासी मैं विना गुन वरतैन भवकौ विसातु मैं गुरु भगवान तूं ही भगवान भ्रांति छूटै भ्रांति सौं
सो गुरु नाथ जैसी षीर ताव मैं वानारसी दास पाता भगवान ने दपायौ गयौ है उछौ हस्तरेव
चनक हाथ मैं जेषधार कहै जैया जे वही मैं भगवान जेष मैं न भगवान भगवान भाव मैं।।४३।।
मोक्ष चलिवे कौं पंथ पंथिक ज्यौं पंथ वलहीन ताहि स्कंधरथ सारसी सहज अंग जोग सा-
धिवे कौं रंगभूमि परम अगम पद पढिवे कौं पार सी भवसिंधु तरिवे कौं सव दृढ धरे है पो-
त ध्यान घाट पारैं कृत लंगर लै नारसी समकित नैन निकै याकौं वैन अंजन से आतमा
निहारिवे कौं आंरसी वनारसी।।४४।। धन वानी ऊगध मैं विजया स्कसति नारि विजस्वाद कं-
द वूंद वहल पहल सैं विवेक विचार उपचार एक संजोकी नौं मिथ्यात सो मिटि गए ध्यान

नी बानारसीदासजीके वचनकी बात वनी याकी कथा ऐसी ख्यात ग्यानसमन लावनी
गुनवंत पुरुष के गुन की रतन की जे पीतांवर प्रीति करी सज्जन कहावनी वहे
अधिकार आयो उघतैं विछुरौ नापायौ जुकमप्रसाद तैं भई है ग्यानवावनी ॥५०॥ सोल
हसै छियासीयै संवत कुंआर मास पष उजियारै चंद चढिवे कौ चाउ है विधि जैनरसा
दि आयो सुद्ध परगास पायो उत्तर अषाढ उमुगन यहै दाव है बानारसीदास गुनज्ञा
ग हैसु के नवान पारिष प्रधान गिरिकरन कहाव है एक तौ अरथ सुभनु है रत
वरना उदूसरै अरथ यामैं दूजौ वरनाव है ॥५१॥ हेतवंत जेते ता कौ सहज उदार चि
त आगै कहौं ऐते वरदान मोहि दीजियौ उत्तम पुरुष सीरी बानारसीदासजू सुप
नगसुभाइक ध्यानसौं सुनीजियौ पव नंसुभाइ विसतार कीजौ है सव है स भरै मैंसु

ग्याता ग्यान मैं विचारि देष्यौ लोगनि कौं लोभ लाग्यौ लागे लोग लोभ कौं ॥४७॥ बावन
वरन राई पढत वरन चारि काहू पढै काहू कै षंड दजू वरन भंडार पेव वरन रतन सा
र भौर ही भंडार भाष वरन सो छेद जू वरन तैं भिन्न तो सैं वरन मैं श्रुति भासै काहू न क
नतता हि होत है आनंद जू वानारसीदास जिन वानी वर णा व कियौ तेरी वानी वरन
व करै वकै वृंद जू ॥४८॥ सकवंधी साचौ सिरीमाल जिनदास सु न्यौं ताकै वंस मूल
दास विरद वढायौ है ताकै वंस षिति मैं प्रगट भौ षरगसेन वानारसीदास ताकौ अ
वतार आयौ है वीहोलिया गोत गरव तन उद्योत नयौ आगरे नगर ताहि भेंट कै सु
षपायौ है वानारसीदास ताकौं पलक पधान करै ताकौ वंस णामवाम नाम रुन गौवे
है ॥४९॥ षूसी कै कैं मंदिर कपूर चंद साह बेटवै वैं कौर पाल सभाऊ रुनी मन भाव

१२ मात्र
पंचासिका जिनवानी अनुसार अरु अज्ञान जानै न ही जो जानैं सो ज्ञान ॥४॥ ब्र
ह्मा मुनीं जु आदि जिन रूप चतुर्मुष धारि समोसरन मंडान में वेद बरवाने च्या
रि ॥५॥ सवैया ॥३१॥ प्रथम अनुनीत प्रथमान जोग वेद जामैं त्रेसठि सलाका म॥
हापुरुष की कथा है दूजा वेद करनानुजोग जाके गरभ में बरनी अनादि
लोकालोक थिति जथा है चरनानुजोग वेद तीसरो प्रगट जामैं मोष पंथ क
रन अचार सिधांत कहा है चौथौ वेद दरवानुजोग जामैं दरव के षट भेद करम
उछेद सरवथा है ॥६॥ प्रथम वेद जथा ॥ छप्पै छंद ॥ तीर्थंकर चौवीस काम चौ
वीस मनुज तनु जिन माता जिन पिता सकल चालीस अरु अठ पुनु चक्रवर्ति द
दस प्रवान एकादस सकर नव प्रति हरि नव बाल देव नराम कसैं कर कुल
कर पुनि महंत चौदह हपुरुष नव नारद इत्यादि नर इनकौ चरित्र अरु पुनि क

भाइ निजस्वारथ सषी जिसौ बावनकवित्त तातौ मेरी मतिमान भए है सके स
भाउ ग्मानाा गुन गहिल्ली जिसौ ॥५२॥ इति श्री बानारसीदास कृत नामांकित
बावनी सवैया ५२ संपूर्णं ॥ अथ वेद निर्णय पंचासिका लिष्यते ॥ आदीनाथ
आष्य दूहा ॥ चूनामनि छंद ॥ जगतविलोचन जगतहित जगतारन जगजान
वंदौं जगचूडामनी जगनायक जगतपरधान ॥१॥ नमौं रिषभजिनस्वामी प्रभुषभजि
न चौवीस महंत गुरु चरन चित राषौ सुधना बौ वेद विरतंत ॥२॥ सवैया ॥ श्री के
वली उकत वेद श्रत रगुपत भए जिन्हके सबद मै अम्रतरस चुवा है अब रि
गुवेद यजुर्वेद साम अथर्वन इन्ह ही का परभाव जगत मैं हुवा है कहत बनारसी
तथापि मैं कहूंगा कछु तेईस सुऊंगत्रिन्हका मिथ्यात मुवा है मतवाला मूरष न
मानैं उपदेस जैसै उलून्क बान जानैं किहिं ओर भान उवा है ॥३॥ दोहा ॥ कहौ वेद

थ्या करतूति नाषी सासदन रीति भाषी मिश्र गुनथान की नराषी मिश्र करनी सम्यकचरन सार कह्यो नाना परकार श्रावक अचार गुन एकादस धरनी परमादी मुनि की क्रिया कही अनेक रूप भाषी मुनिराज की क्रिया अप्रमाद हरनी चारित कारन त्रिधा श्रेनि धारा है दुविधा एक सोध मुषी एक मोहमुषी वरनी ॥२०॥ चौपई ॥ उपसम षिपक अथावत चारित पर कृत अनुमोद कृत कारित दुविधि त्रिविधि पंचविधि अचारा तेर विधि सत्रह परकारा ॥२१॥ दोहा ॥ वरनन - सेष असेष विधि तिन के भेद अनंत सदा चार गुन कथन यह व्रतीय वेद विरतंत ॥२२॥ अथ चतुर्दर ग्रंथा ॥ सवैया ॥३१॥ जीव पुदगल धर्म अधर्म आकास काल एई छहौं दरव जगत के धरनहार एक एक दरव मैं

षनप्रथमवेदयहनेदवर ॥७॥ अथद्वतीयवेदजथा ॥ छप्पयछंद ॥ अगमअ
नंतअलोकअकृतअनमितअषंडसम असंष्यातपरदेसपुरुष आकारलो
कनम ऊरधसरगअधोपातालनरलोकमध्यनुव द्वीपअसंषउदधिअस
षमहलोकारछव तिसमध्यअढाईदीपलगु पंचमेरुसागरजुगम यहमनु
ष्यषेतपरवानथितिसकराविद्याधरकौसगम ॥८॥ सवैया ॥३१॥ सोलहसरगनव
ग्रीवननवननोत्तरपंचपांचौनुत्तरउपरासिद्धसिलाहै ताकूपरसिद्धषेततहाहैअ
नंतसिद्धएकमैंअनेककोऊकाहसोनमिलाहै अधोलोकपतालकीरचनाअ
नेविधिनीचैसातनरकनिवासवक्रबिलाहै इत्यादिजगतथितिकहीदूजेवेद
माहिसोईजीउमानेजिनिमिथ्यातउमिलाहै ॥९॥ अथत्रतीयवेदजथा ॥ सवैया३१ ॥ मि

हितिन मानें कोऊ ॥१७॥ दोहरा ॥ सुरसे सीरसौ मसे नऊ रागी वक्र मित्र हौं
हि एकसे जुगल सब कौतूहली विचित्र ॥१८॥ सवैया ॥३१॥ सबही के चित सब
सरल सुभाई नित सबही के थिर चित्त कोऊ न सुगुलिया हि हैं जुनर
सपोष लियें सहज सतोष गुननि के कोष दुषदोष के उगालिया कोऊ न
हि लरै कोऊ काहू कौन धन हरै कोऊ कबहू न करै काहू की चुगुलि
या समता सहित संकलेस ता रहित सब सुषिया सदीव ऐसे जीव हैं जुगु
लिया ॥१९॥ भूषन नवीन वस्त्र मलहीन सबही कें घर घर निकट कलप
तरु वाटिका नाहीं वैर भाउ नाहीं बंध को बढाउ नाहीं रोगता उनविलौ केको
ऊ नाटिका विविध परिगह सब कें घर देषियै पै काहू के न पोरि परदार नक
पाटिका अलप अहारी सब मृदुतनुधारी सब संदर अकारी सब ऐसे सीप

२७

ख मैं अनंत अनंत गुन अनंत अनंत परजाइ कै करनहार ॥ एक रहै ख
मैं अनंत सकति वसै कोऊ न जनम धरै कोऊ न मरनहार ॥ निहचै निवेदक
मैं भेद चौथो वेद माहि वषानै सुगुरु मानै मोह कहरनहार ॥१३॥ वेसरी
छंद ॥ चौपई ॥ एई च्यारि वेद जगमाहीं सव गरंथ इनकी परछाहीं ज्यौं ज्यौं
धरम मरम सौं विछेद त्यौं त्यौं उपजत भरम वेद ॥१४॥ दोहरा ॥ बारह सांग बानी वि
मल गर्भित च्यारो वेद तो किनि कीनै कवन भरम सो सव वरनौं भेद ॥१५॥ जुगल
धर्म रचना कहौ कुल गुरु रीति वषान रिषभदेव वृसा कथा सुन जन
धरि कान ॥१६॥ अथ जुगल धर्म जथा ॥ चौपई ॥ प्रथम माहि जुगल धर्म है जै
सा गुरु प्रसाद कहौं कछु तैसा जनम हि जुगल नारि नर होऊ भाई व

जैसौ जिनवानी मैं जुगलधर्म वरना ॥२३॥ कुलकर वर्णनं ॥ चौपई छंद ॥ जुगल
धर्म जव लेइ मरोरा वाकौ काल रहै कछु थोरा प्रगट होंहि तहां चतुर्दस ग्यानी
कुलकर नाउ कहावहि ग्यानी ॥२४॥ सव सुज्ञान सव की गति नीकी सव संसमे
टहि सव जी की होंहि उछिन्न कलपतरु ज्यौं ज्यौं कुलकर आगम भाषहि त्यौं त्यौं
॥२५॥ दोहरा ॥ कह्यौ सवनि नरि रज्जनम हरि र भांति कहाउ धरि रतनमरि रग
ए करि र पूरन आउ ॥२६॥ इहि विधि चौदह मनु भए कछु क अंतरकाल तीनि ग्या
न संजुत्त सव मति श्रुति अवधि रसाल ॥२७॥ चौपई ॥ तेरह मनु के नाउ वखानें
नाभिराइ चौदहें वषानें मरुदेवी ता की वर नारी सीलवंत सुंदर सुकुमारी
॥२८॥ ता के गर्भ भए अवतारी रिषभदेव जिन समकितधारी तीनि ग्यान संयुक्त ग

४०॥

रपादिक॥२०॥दोहा॥घर घर नाटक होंहि नित घर घर गीत संगीत कबहीं को उन
देषियो वदन पीत भयभीत॥२१॥सवैया॥२१॥जिनकै अलप संकलप विकलप
दोऊ षोरा मुष जलप अलप अहमेवता जिनकैं न कोऊ अरि दीरघ सरीर
धरि त्रिपति की दसा धरै। विपति न वेवता जिन्हकैं विषै वढाउ परलोप मानि आउ
सवै नर नांउ को ऊ काहू कौं न सेवता अैसे भद्र मानुष कुगल अवतार पाइक
रि करि भोग मरि मरि होंहि देवता॥२२॥जिनके जनम माहि मात पिता मरि जांहि
मापै न वियोग दुष सोग नाहि धरना अपनै अनूपताकौ अमृतरस पान करि जिन्ह
कौ अनोपतन वर्द्धमान करना अंतकाल जिन्हकौं असाता वेदनी न होय छी
क आऐं अधवा जम्हाई आऐं मरना जिन्हकौ सरीर षिरि जाइ ज्यौं उडै कपूर

हा॥ कियो नृत्य कादह समै नटी अपछरा वाम जगत कहै असारवी तियतिलोत
मना॥३६॥चौपई॥ रुद्र विनु भरा महामुनि जवही नाउ स्वयंभू अगटु ततवही ध्या
नारूढ होइ तपसाधै परम इष्ट कहि जगत अराधै॥३७॥ भरतषंड के ग्यानी जेते प्रजा
भरत राजा के तेते भरत नरेस रिषभ की साषा तातै लोक पितामहि भाषा॥३८॥ के
वल ग्यान रूप जव होई तव वृह्मा भाषै सब कोई कंचनगढ गर्भित जिन भासे नो
उ हिरन्यगर्भ वरगासे॥३९॥दोहा॥ कमलासन पर वैठि कै देइ धर्म उपदेस च
मर छत्र लषि जग कहै कमलासन लोकेस॥४०॥चौपई॥ आतमभूमिरूप इह रमा
वै तव आतमभू नाम कहावै सकल जीव की रछा भावै नाउ सहस्रष्यात जगराषै
॥४१॥ समोसरन महं चौमुषी दीसै चतुरानन कहि जगत असीसै अक्षर विनावै

कहाए अगनित नाम जगत मैं गाए॥१९॥ रिषभदेव वर्ननं॥ दोहा॥ रिषभदेव जे जे
दसा धरी किए जे काम ते ते पद गर्भित भए प्रगट जगत मैं नाम॥२०॥ जे ख्साके
नाउ सब जगत माहि विख्यात ते गुन लौं करतूति सौं रिषभदेव की वात॥२१॥ चौ
पई छंद॥ जनमत नाउ भयौ स्कम वेला आदि पुरुष अवतार अकेला माता पित
नाउ जब राषा रिषभकुमार जगत सब भाषा॥२२॥ नाभि नाम राजा के जाए ना
भि कमल उतपन्न कहाए इंद नरिंद करि सब सेवा तब कहियै देवनि कौ देवा॥२३॥
जुगल रीति तिन जिनी नीति उधरता तातैं कहे सिष्टि के करता असि मसि कृषि वानिज
के दाता ता कारन विधि नाउ विधाता॥२४॥ क्रिया विसेष रची जग जेती जगत विरं
चि कहै प्रभु सेती जुग की आदि प्रजा जब पाले तब जग नाउ प्रजापति आले॥२५॥ दो

पंचानुत्तर नाम धाम एका अवतारी तहां पूरव भव वसे रिषभ जिन समकित धारी उ
स लोक सौं चए भए ब्रह्मा इहि भू पर तातैं लोक कहांन देव ब्रह्मा सब ऊपर ॥४८
॥चौपई॥ आदीस्वर जुगादि सिवगामी तीनि लोक जन अंतर जामी रिषभ
देव ब्रह्मा जग साषी जिनि नव जैन धर्म विधि भाषी ॥४९॥ रिषभदेव कैं अ
गनित नाउ कहौं कहां लौं पार न पाऊं वे अगाध मेरी मति हीनी तातैं कथा
समापत कीनी ॥५०॥ छप्पय छंद ॥ इहि विधि ब्रह्मा भए रिषभ देवाधिदेव मुनि
रूप चतुर्मुष धारि करी जिनि प्रगट वेद धुनि तिन्ह के नाम अनंत ध्यानन
रमित गुन गूझै मैं तेते वरनए अरथ जिन्ह के बूझै यह सब ब्रह्म सागर
अगम परम ब्रह्म गुन जल सहित किमल है वनारसि पार पद नर विवेक नु
जवल रहित ॥५१॥ इति श्री वेद निर्णय पंचासिका समाप्ता ॥ ७ ॥ अथ सलाका पुरु

दधलिनासै रचनारचि गनधर परगासै ॥४२॥ चार वेद कहियै तव सेती बाद
सांग की रचना एती जब धनिसकानि अनंतता गहिए तब प्रभु अनंतनामा काहिए ॥
॥४३॥ आदिनाथ आदीसर जोई आदि अंत विनु कहिए सोई करै जग नइ
नहीं की पूजा दई ब्रह्मा और न दूजा ॥४४॥ जब लौं जीव विपर्ययमग दौरै तब लौं जा
नै ब्रह्मा औरै जब समकित नैननि सौं सूझै ब्रह्मा रिषभ न देव तब बूझै ॥४५॥ दो
हा॥ आदीसर ब्रह्मा भए किये वेद तिनि च्यारि नाम भेद मत भेद सौं वढी जगत मैं रा
ति रि ॥४६॥ चौपई ॥ ब्रह्मलोक वर्नन ॥ और उर्कें मेर मत आवै साची बात सबनि कौं भा
वै ब्रह्मा ब्रह्मलोक कौ वासी सो विरतंत कह्यौ परगासी ॥४७॥ कुंडलिया ॥ ऊपर स
वकर लोक कै ब्रह्मलोक अभिराम सो सरवारथसिद्धि तसक पंचानुत्तर नाम

क्रविष्टि हरि ॥४॥ वस्तु छंद ॥ विमलजिनवर २ मेरु प्रतिविस्नु वलधर्मस्वयंभु हरिजि
नअनंतमधुप्रतिसोदर वलसुप्रभनामज्ञव पुरुसोतम हरि तासुसोदर धर्मजिनेस
निसुंभ प्रतिनारायणनर मेस रामसुदरसननामज्ञव हरि नरसिंघनरेस ॥सोरठा॥
५॥ मघवनामचक्रेस चक्रीसनतकुमारज्ञव चक्रीसांतिनरेस भयौसांतिजिनसांतिकर
॥६॥ वस्तु छंद ॥ कुंथु चक्री २ कुंथसरवप्प अरसारवभौमज्ञव अरजिनेस प्रहलाद
प्रतिहरि वलभद्र सुनंदि ज्ञव पुंडरीक हरि वंछत सुघरि सारवभौम सुभौम ज्ञ
व वलिप्रतिहरि अवतार नंद मित्र वलदेव हित केसवदत्तकुमार ॥७॥ सोरठा ॥
पदमचक्रि जिनमल्लि विजयसेन भटबंद जित मुनिसुव्रत हरि अहिनि चक्रवर्ति ह
रिषेन ज्ञव ॥८॥ वस्तु छंद ॥ भयौ रावन २ नाम प्रति किसन रघुनंदन राम ज्ञव व

४३॥

षनाम॥ वस्तुछंद॥ नमौं जिनवर नमौं जिनवर देव चौवीस नर द्वादस चक्रधर
नव मुकुंद नव प्रति नाराइन वलधर सकल मिलि इमु त्रिसठि सिवपद्य पाराइ
न एम हंत त्रिभुवन मुकट परम धरम धन धाम ज्यौं ज्यौं अनुक्रम अवतरे
त्यौं त्यौं वरनौं नाम॥१॥ सोरठा॥ केई तदभव सिद्ध निकट भव्य कोई फुनसष
मुषा गंभिर विद्य क्रमति सलाका धर सकल॥२॥ वस्तुछंद॥ रिषभ जिनवर र
भरत चक्रीस सिरि अजित जिनेस हूव सगर चक्रि संभव तिथंकर अभिनंदन सु
मति जिन पदुमप्रभ सुपास संकर श्री चंद्रप्रभ सुविधि जिन सीतल जिन सिरि
अंस अश्वग्रीव प्रतिहरि भयौ हलधर विजय सु वंस॥३॥ सोरठा॥ हरि त्रिवि
ष्टि जिन जीय वासपूज जिन द्वादस मैं तारक प्रतिहर वीय हलधर अचल

१२॥

लि रा नारवन जरासिंध ए प्रतिहरि वाद ॥ अथ नारायन के नाम त्रिपिष्ठ द्वि
ष्ठ स्वयंभू पुरुस सोत्तम नरसिंघ स पुंडरीक दत्ताधिपति लक्षिमन हरि मधुरेस ॥१३॥
अथ बलभद्र नाम ॥ विजय अचल बलधर्मधर सुप्रभ सुदर्सन नाम नंदि नं
दिमित्र सरष नाम पद्म नवराम ॥१४॥ इति श्री त्रिसष्ठि सलाका पुरुष नाम कथ
न॥ अथ मारगना विधान लिष्यते॥ दोहरा॥ वंदौं देव जुगादि जिन क्रमि रिस
हु सनमुष भाष चौदह मारगना कहौं वरनौं वास विसाष ॥१॥ चौपई॥ [illegible] भव्य अल
रकषाइ दरसन ग्यान जोग गति काइ लेस्या समकित सैनी वेद इंद्री सहित चतुर्दस ने
द ॥२॥ चौदह मारगना सार इनके वास विभेद ३ दार वासवि संसारी जियभाउ इनहि
लं ये होइ सिवराउ ॥३॥ संयम सात ग्यानविविनाइ ५ विविधि आहारी चारि कषाइ दरसन

५५॥

सुदेव लछिमन गनीजै नमि जिनवर नेमि जिन जरासिंध प्रतिहनि मनीजै हलध
रपद्म मुरारि हरि[illegible] ब्रह्मदत्त चक्रीस पास जिनेसर वीर जिनराज नर तीनि त्रिवीस॥१६
॥सोरठा॥ त्रिभुवन मांहि उदार त्रेसठि पद उनसठि जिय भावि भूत उपजै चार
बंदै चरन बनारसी॥१७॥ अथ तीर्थंकर नाम॥ छप्पय छंद॥ रिषभ अजित संभव जि
नंद अभिनंद सुमतिधर विमल अनंत सुधर्म साति जिन कुंथनाथ अर श्रीपदमप्र
भ श्रीसुपास चंद्रप्रभ जिनवर सुविधि नाथ सीतल श्रियास प्रभु वासुपुज्जवर
विमल अनंत सुधर्म साति जिन कुंथनाथ अर प्रभु मल्लिनाथ त्रिभुवन तिलक मु
निसुव्रत नमि नेमि नर पारस जिनेस वीरेस पद नमत बनारसि जोरि कर॥१८॥ अथ
प्रतिनारायनके नाम दोहरा॥ अश्वग्रीव तारक मेरु मधुनिसुंभ बलि प्रहलाद ब

य चतुर्विधि भेष धरि जिय नाटक करै विसेष कवहूं चषु दरसन सौं लषै कवहूं अ
चषु दरसन रस चषै ॥११॥ कवहूं अवधि दरसन परजुंज कवहूं सु केवल दरसनजु
ज धरि दरसन मारगना चारि नाटक नटै जीउ संसार ॥१२॥ कुमति ग्यान मिथ्याम
तिलीन कुश्रुति कुआगम मैं परवीन धरै औ विभंगा अवधि अजान सुमति ग्या
न समकित परवान ॥१३॥ कुश्रुति ग्यान परमागम सुनै सुअवधि ग्यान जथारथ मु
नै मनपरजै जानैं मनभेद केवल ग्यान प्रगट सव भेद ॥१४॥ ए ई आठ ग्यान के अंकं ग
नचै जीउ इन रूप परसंग मनाजोग मय होइ कदाचि वोलै वचन योग सौ राचि ॥१५॥ का
य जोग मह मगन सु कीउ नाचै त्रिविधि जोग धरि जीउ सुरगति पाइ करै सुष भोग सम
दुष सुष नरगति संजोग ॥१६॥ वहु दुष अल्प सुषी तिरजंच नरक महा दुष देषै पं

चारि आठ विधि ग्यान जोग तीनि गति चारि विधान ॥४॥ षट काया लेस्या षट हो-
इ षट सम्कित सैनी विधि दोइ वेद तीनि विधि इंद्री पंच सकल गीक गनि वास वि-
संच ॥५॥ इनके नाम भेद विस्तार वरनौं जिनवानी अनुसार वास विरूप स्वांग
धरि जीउ करै नृत्य जग मांहि सदीउ ॥६॥ प्रथम असंजम रूप विसेष देससंज-
मी दूजा भेष तीजा समाइक सुषधाम चौथ छेदउपथापन नाम ॥७॥ पंचम पद परि-
हारि विसुद्धि सूक्षिम संपराय षटवुधि जथाख्यात चारित सात मों सातौ स्वांग धरै
आतमा ॥८॥ भव्य अभव्य स्वांग धरि दुधा करै जीव जग नाँकै दुधा अनाहार आ-
हारी होइ नाचै जीव स्वांग धरि दोइ ॥९॥ कबहूं क्रोध अगनि जिलहलहै कबहूं अष्ट
महा मद गहै कबहूं माया मई सरूप कबहूं मान लोभ रस कूप ॥१०॥ चारि कषा

वनदववदाहनकुंसकवेर नटैजीउधारिरूपविनेद थावर माहि एकेंद्री होइ त्रसभेदा
दिकइंद्री दोय ॥२४॥ पीपीलिकादिक इंद्री तीनि चौरिंद्रिय भ्रमरादीतें पंचेंद्री देवा
दिकदेह सववासठि मारगना एह ॥२५॥ जावत जीय मारगनारूप तावत कालवसै भ
वकूप जव मारगना मूल उछेद तव जिय आपै आप अभेद ॥२६॥ दोहरा ॥ एवासठि
विधि जीउके तन सवे धीनाउ तजि तन वुधि वनारसी कीजे मोषउपाउ ॥२७॥ इति श्री वा
सठि मारगनां विधान समाप्ता ॥ ६ ॥ अथ कर्म प्रकृति विधान लिष्यते ॥ वस्तु छंद ॥
परमसंकर परम भगवान परमब्रह्म निरंजनादि सिव अज अनंत गनपति विनायक पर
मेसुर परम गुरु परम पंथ उपदेसदायक इत्यादिक वहु नामधर जगतवंद्य जिनराज
तिनके चरन वनारसी वंदौं निजहितकाज ॥१॥ दोहरा ॥ नमौं केवली के वचन नमौं आ

च चऊगति जन्म मरन कलेस नटै त्रीउ नानारस भेस ॥१७॥ प्रिथिवीकाय देह जिय
धरै आपकाइ मय देहीय अवतरै अगिनिकाय महै तपतस भाउ वाउकाय मह कहिये
वाउ ॥१८॥ वनसपती पती रूपी कंदमूल लहि त्रसकाय धरै तन थूल षटकाया षटवि
धि अवतार धरि धरि मरै अनंती वार ॥१९॥ धरै कृस्न लेस्या परिनाम करै कुकुल
लेस्या रसपान इहि विधि षट लिस्या परपाइ जगवासी सम न अलक्ष न कमाइ ॥२०॥
धरि मिथ्यात ८ जू।व मर रहै वमि समकित सासादन गहै सम्य असत्य मिश्र समका
ल साधै समकित ष्यायक चाल ॥२१॥ उपसम वोध धरै वऊ वार वेदै वेदक रस विचार
धरि षट समकित स्वांग विधान करै नृत्य जिय जान अजान ॥२२॥ सैनी रूप असैनी ह
प उविध स्वांग जिय धरै अनूंप पुरुषवेद त्रिन आगनि उछाह त्रियवेदी कारीसा दाह ॥२३॥

हौं कर्म तरु माल सरीस प्रकृति एक सौ अठतालीस मतिग्यानावरनी जो कर्म सो आवरि रा
षै मति धर्म ॥९॥ श्रुतग्यानावरनी बल जहां सकल श्रुतग्यान फुरै नहि तहां अवधिग्यान
आवरन उदोत जिऽय कों अवधिग्यान नहि होत ॥१०॥ मनपर्यै आवरन प्रवान नहि
उपजै मनपरजै ग्यान केवलग्यानावरनी रूप ताम दिगर नित केवलरूप ॥११॥ दोहा ॥ व
रनी ग्यानावरन की प्रकृति पंच परकार अब दरसन आवरन तरु कहौं तासकन वकार
॥१२॥ चोपई ॥ चषु दरसनावरनी बंध जो जिय करै होइ सो अंध अचषु दरसन
वरन वधेव सबद फरस रस गंध न वेव ॥१३॥ अवधि दरसनावरन उदोत विमल अवं
धि दरसन नहि होत केवल दरसन आवरन जहां केवलदरसन होइ न तहां ॥१४॥ था
नग्रद्धि निद्रा वसि परै सो प्रानी विसेष बल धरै उठि र चलै कहै कछु वात करै पचंक्क

धपु।

तमाराम कहौं करमकी प्रकृतिके भिन्न भिन्न पद नाम ॥ चौपई ॥ छंद ॥ एकै करम आठविधि दीस प्रकृति एकसौ अडतालीस तिनके नाम भेद विस्तार वरनौं जिनवानी अनुसार ॥१॥ प्रथम करम ग्यानावरनीय जिनि सव जीव अग्यानी कीय दुतिय दरसनावरन पहार जाकी ओट अलष करतार ॥२॥ तीजौ करम वेदनी जानि जासौं निराबाध गुन हानि चौथा महामोह जिनमतै जो समकित अरु चारित हनै ॥३॥ पंचम आउ करम परधान हनै सूक्षम अवगाह प्रवान छठा नाम करम विरतंत करै जीवकौं मूरतिवंत ॥४॥ गोतम करम सातमा वषानि जासौं ऊंच नीच कुल मानै अष्टम अंतराय विष्यात करै अनंत सकतिकौ घात ॥५॥ दोहा ॥ एई आठौ करम मल इनमैं गरभित जीव इन दहि त्यागि निरमल भयौ सो सिवरूप सदीव ॥६॥ चौपई ॥ क

तकीरसा अवकषायसोलैविधिकहैं नौकषायनौविधिसरदहौं॥२२॥ प्रथम
कषायकहावैकोप जाकेउदैं छमागुनलोप दुतियकषाइ मानपरचंड विनै
विनासिकरैसतषंड॥२३॥ तीजीमायारूपकषाइ जाकेउदैंसरलताजाइ लो
भकषाइचतुर्थमभेद जाकेउदैंसंतोषउछेद॥२४॥ दोहा॥ एईचारिकषायमल
अनुक्रमसूछमथूल चारोकीजहिचौगुनौं वंदकलासमतूल॥२५॥ चौपई॥ अ
नंतानुवंधीयाकषाय जाकेउदैं नसमकितथाइ अप्रत्याषानीकियेउदोत पंच
मगुनथानकनहिहोत॥२६॥ प्रत्याख्यानकहावैसोइ जहासर्वसंजमनहीहोइ सो
संजलनामगुनहनै जथाख्यातचारितजोहनै॥२७॥ क्रोधमानमायाअरुलोभ चौ
रौचारिरविधसोभ एकषायसोलहइवधाम अवननवनोकषायकेनाम॥२८॥ राग

रमउलघात ॥१५॥ निद्रा २ उदै सकौ उ पलक उघाडि सकै नहि जीउ प्रचलाप्रचल
जावत काल चंचल अंग वहै मुष लाल ॥१६॥ निद्रा उदै जीव उषनरे उवै चलै वैठै
गिरि परे रहै आंषि प्रचला सो घुली आधी मुंदित आधी षुली ॥१७॥ सोवत माहि
सरति कछु रहै वारवार लघु निद्रा गहै इति दरसनावरन नव धार कहौं वेदनी
द्वै परकार ॥१८॥ दोहा ॥ साता करम उदोत सौं जीव विषय सुष वेद करम असात
के उदै जिय वेदै उष वेद ॥१९॥ चौपई ॥ अव मोहनी उ विधि गुरु समनें इक दरस
न इक चारित हनैं दरसन मोह तीनि विधि दीस चारित मोह विधान पचीस ॥२०॥ प्र
थम मिथ्यात मोह की दौर जिय सरदहै और की और दूजी मिश्र मोहनी चाल
सत्य असत्य गहै सम काल ॥२१॥ समकित मोह तीसरी दसा करै मलीन समकि

पटसो आपुकौं करै कुगति कौ बंध पाप पंथ उपदेस दै करै और कौ बंध ॥२६॥ आ
पी हति और निहतै वनिता वेदी सोइ अवलखन ताके कहै पुरष वेद जो हो
इ ॥२७॥ जौं त्रिनपूला की अगिनि दीसै सिषा उतंग अनवसरूप आन आपधर अलप
काल मैं भंग ॥२८॥ चौपई ॥ तैसैं पुरष वेद धर जीव धर्मकर्म मेर है सदीव महा मगन तप
संजम माहि तनता वैतन कौं दुष नाहि ॥२९॥ चित उदार उद्धत परिनाम पुरुष वेद धर
आतमराम तीनि मिथ्यात पचीस कषाइ अठाईस प्रकृति समुदाइ ॥३०॥ अव
खनु आउ चारि परकार नरपसु देव नरक थिति धार मानुष आउ उदै नर भोग ल
हि तिरजंच आउ दसु जोग ॥३१॥ देव आउ सुरपद विष्यात नरक आउ सौं नरक निपा
त वरनी आउ करम की बानि नामकर्म अब कहौं वषानि ॥३२॥ पिंड प्रकृति चौदह रूप

धर्मि

द्वेषकी हासी जोइ हासकर्षय कहावै सोइ सुषमैं मगन होइ जिय जहा रतिकषाय रस वरतै तहा ॥२९॥ जहा जीवकौ कछु न सुहाइ तहा मानियै अरतिकषाइ घरहर कंपै आतमराम जामैं सो कषाय भयनाम ॥३०॥ दोहा ॥ सदन विलाप वियोग दुष जहा होइ सो सोग जह गिलान मन ऊपजै सो दुरगंछा रोग ॥३१॥ चौपई ॥ नगरदाह सम परगट दीस गुपत पजावा अगिनि सरीस महाकलुषता धरै सदीव वेद नपुंसक धारी जीव ॥३२॥ दोहा ॥ अव वरनौं तिय वेदकी रचना सुनि गुरुभाष कारीसा की सी अगिनि गरभित वल अभिलाष ॥३३॥ ज्यौं कारीसा की अगिनि छयो न परगट होय सिलगि रहै अंतर दहै रहै निरंतर सोइ ॥३४॥ त्यौं वनिता वेदी पुरुष वोलै मीठे वोल वाहिर सव जग वस करै भीतर कपट कलोल ॥३५॥ कपटन

CC0.In Public D0main. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भू जल अगिनि वनसपति वाइ ॥४९॥ जाके तन रसना द्वै थोक संषगिंडोवा जल
चर जोंक इत्यादिक जे जंगम जंत ते वेइंद्री कहे सिद्धंत ॥५०॥ जाके तन मुष नाक
रु जूर घुन पिपीलिका षानषजूर इत्यादिक तेइंद्री जीव आंषि कान सौं रहित स
दीव ॥५१॥ जाके तन मुष नासा आंषि वीछू सलभ टीड अलि माषि इत्यादिक जे
आतमरांम ते जग मैं चौइंद्री नाम ॥५२॥ देह रसन नासा डिग कान जिनकै ते पचेंद्री
जान नर नारकी देव तिरजंच इन चारिहु कै इंद्री पंच ॥५३॥ चौथी प्रकृति सरीर वि
चार औदारिक वैक्रिय आहार तेजस कारमांन मिलि पंच उदारिक मानुष ति
रजंच ॥५४॥ वैक्रियक देव नारकी धरै मुनि नितपवल आहारक करै तेजस कारमान
मिलि तन दोइ इनकौं सदा धरै सब कोइ ॥५५॥ जैसी उदै तथा तिंगही चौथी पिं

नि
५० ॥

रकार अठाईस अपिंड विसतार पिंड भेद पैंसठ विपरस सत मिलि तिरानवै होहि
समस्त ॥५३॥ ते तिरानवै कहे ते वषानि पिंड अपिंड वयालिस वानि प्रथम पिंड प
रकति गति नाम सुर नर पसु नरक उषधाम ॥५४॥ सोरठा ॥ सुर गति सो सुर गेह
नर सरीर नरगति जु है पसु गति सो पसु देह नरक वसावै नरकगति ॥५५॥ चोपई ॥
चऊ गति आनपूरवी चार इति य पिंड परकति अवधार मरन समै तजि देह सुक
उ परभव गमन करै जब जीउ ॥५६॥ आनपूरवी प्रकृति परेरि भावी गति मैं आनै
घेरि आनपूरवी होइ सहाइ गहै जीउ नौतन पर जाइ ॥५७॥ तृतीय प्रकृति इंद्री अ
धिकार इग दुग तिग चउ पंच विचार फरस रसन नासा द्रग कान जथा जोग जिय नाम व
षान ॥५८॥ तन इंद्री धारै जो कोइ मुष नासा द्रिग कान न होइ सो एकेंद्री थावर काइ

तास्क ॥६२॥ लघकरूपी लघक अंगविधान सो कहि। वामनसंठान ५ जो सरवंग असुंदर हुंडक सो संठान कहावै जान ॥६३॥ कही आठमी प्रकृति छह भेद अब नौमी संघननि वेद है संघनन हाडको नाम सो षटविधि वरनै तन धाम ॥६४॥ वज्रकीलकीलित संधान ऊपर वज्र० पट वेधान अंतर हाड वज्रमय वाच सो है वज्ररिषभनाराच ॥६५॥ जहं सब हाड वज्रमय जोइ वज्रमेष सो अविचल होइ ऊपरि वेढ सरूप समान नाम वज्रनाराचसमान ॥६६॥ वज्र समान होहि जहां हाड ऊपर वज्र रहित पट आड वज्र रहित कीली सो विद्ध सो नाराच नाम परसिद्ध ॥६७॥ जाके हाड वज्रमय नाहि अरध वेध कीली तसमाहि ऊपर वेढ वेधन नहि होइ अर्द्ध नाराच कहावै सोइ ॥६८॥ जहां न होइ वज्रमय हाड नाहि पट वेधन कीली गाढ कीलितवंत

न प्रकृति यह कही अब बंधन संघातन दोइ प्रकृति पंचमी छठी सोइ ॥५६॥ बंधन जु है काय बंधान संघातन सौं दिढ संधान इहूं की दस साषा है बंध जथाजोग काया संबंध ॥५७॥ अब सातमी प्रकृति परसंग कहौं तीनि तन अंग उपंग औदारिक वैक्रियक आहार अंग उपंग तीनि तन धार ॥५८॥ दोहा ॥ सिर नितंब उर पीठि कर जुगल जुगल पद टेक आठ अंग ए तन विषैं और उपंग अनेक ॥५९॥ चौपई ॥ तैजस कारमान तन दोइ इनके अंग उपंग न होइ कहौं आठमी प्रकृति विचार षट संठान रूप आकार ॥६०॥ जो सरवंग चारु सपरधान सो है समचतुरस संठान ऊपर थूल अधोगत वाम सो निगोध परिमंडल नाम ॥६१॥ हेठ थूल ऊपर कृस होइ सातिक नाम कहावै सोइ कुबर सहित बक्र बपु जासु कुबज आकार नाम है

ताकौंतननतैसोस्वादहोत॥९५॥तेरहीप्रक्रतिगंधमयहोइ दुरगधसुगंधप्रकारदे १
२ जोजीवजोप्रक्रतिकरैवंध तिसउदैताकूतनसोइगंध॥९६॥अवफरसनाम
चौदहींबानि तिसंकहैंआठभाषावषानि चिकनीरूषकोमलकठोर लघुभा
रीसीतउतपतजोर॥९७॥दोहा॥प्रक्रतिचीकनीकेउदै गहैचीकनीदेह रूषीप्रक्र
तिउदोतसौं रूषीकायागेह॥९८॥कठिनउदैसौंकठिनतन मृदुउदोतमृदुअंग
तपतउदैसौंतपततन सीतउदैसीतंग॥९९॥पद्धरीछंद॥जयभारीनामप्रक्रतिउदो
त तहभारीतनधरजीवहोत लघुप्रक्रतिउदैधरजीवजोइ अतिहरुईकायाध
रैसोइ॥१००॥एपिंडप्रक्रतिदसच्यारिभाष इनहीकीपैसठिकहीसर्व अवअ
ठाईसअपिंडवानि तिनकेगुनरूपकहौंवषानि॥१०१॥जवप्रक्रतिअगुरुल

दिढ वंधन होइ नाम कीलिका कहिए सोइ ॥६९॥ जंह हाड नसौं हाड नन वंधै अमि
लपरसपर संधिन मधै ऊपर नसाजाल अरु चाम सो सेवट्ट संघनन नाम ॥७०॥ य
ह संघनन षट विधि वरनई नामी प्रकृति समापत भई दसमीं प्रकृति गमन आका
स ताके दोइ भेद परगास ॥७१॥दोहा॥ सुभ विहायगति के उदै भली चाल जिय ध
र असुभ विहाय उदोतसौं गनै असुभ विहार ॥७२॥पद्धडी छंद॥ अव कहौं
ग्यारमी प्रकृति संच जो वर्न भेद पर कहै पंच सित अरुन पीत अति हरित स्याम ए व
र्न प्रकृति के पंच नाम ॥७३॥ जो वर्न प्रकृति जाके उदोत ताको सरीर ते दिव वर्न हो
त रस नाम प्रकृति वारमी जानि सो पंच भेद विवरन वषानि ॥७४॥ कठ टुक मधुर
तिकत आमल कषाइ रस उदै रसीली होइ काइ जाको जो रस परकिति उदोत

है बीजसहित जियरासि सात जो एक देह मैं जीव एक सो जीवरासि कहियै प्रत्ये
क ॥८८॥ प्रत्येक वनस्पति दुविधि जानि सुप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित वषानि जो धा
रै रासि अनंतकाय सो सुप्रतिष्ठित कहियै सुभाय ॥८९॥ जामैं नाहि होइ नि
गोद धाम सो अप्रतिष्ठित प्रत्येक नाम अब साधारन वनसपती काइ सो सू
छम बादर दुविधि थाइ ॥९०॥ सूछम निगोद जग मैं अमेय बादर यह दूजा नाम
धेय धरि भिन्न रकार मान काइ मिलि जीव अनंत इकत्र आइ ॥९१॥ संग्रहहि
एक नोकर्म देह तिस कारन नाम निगोद एह सो पिंड निगोद अनंतरासि जिय
सूप अनंतानंत भासि ॥९२॥ भरि रहै लोक नभ मैं सदीव ज्यौं घना माहि भरि रहै
घीव सूछिम[illegible]क बादर दोय साष फुनि नित्य अनित्य दुभेद नाष ॥९३॥ जे

उदैसो

घ उदै देइ तब जीव आपु ललघ तन धरेइ उपघातैं अंग व्याप जासौं उपघावै जीव
आप ॥८२॥ परघात उदै सो होइ अंग जो करै और कौ प्रान भंग उस्सास प्रकृति
जब उदै देइ तब प्रानी सास उसास लेइ ॥८३॥ आताप उतौं होत तन जथा भान
उदोत उदै तन ससि समान त्रस प्रकृति उदै धर जीव जोइ जंगम सरीर धरि चलै सो
इ ॥८४॥ थावर उदोत धर प्रान धार नहि थिर सरीर न करै विहार सूछिम उ
होत लघ देह जास सो मारै मरै न और पास ॥८५॥ बादर उदोत तन थूल हो
इ सब ही के मारै मरै सोइ पर्याय प्रकृति उदै करंति जिय पूरी पर्यापति धरं
ति ॥८६॥ जो प्रकृति अपर्यापति धरेइ सो पूरी पर्यापति न लेइ प्रत्येक प्रकृति
जाके उदोत सो जीव वनस्पति काय होत ॥८७॥ जर तुवा काव फल फूल पात ज

होत सो अथिर अंग सुभ प्रकृति उदै सुभ रीति सर्व जह असुभ उदै तह असु
भ पर्व ॥१०१॥ सोभाग प्रकृति जाके उदै होत सो प्रानी सब कौ इष्ट होत दुर्भाग प्रकृति
के उदै जीव सब कौं अनिष्ट लागे सदीव ॥१०२॥ जह सुसुर प्रकृति उदै वषानि
तहां कंठ कोकिला मधुर वानि जो दुस्वर प्रकृति उदै होत धार ताकी धुनि ज्यौं गर्धव
प्रकार ॥१०३॥ आदेय प्रकृति जाकें होत ताकौ वहु आदर मान होत जब अना
देय कौ उदौ होइ तब आदर मान न करै कोइ ॥१०४॥ जस नाम उदै जिस जीव पाहि
ताकी जस कीरति जगत माहि जहां प्रगट भाल महं अजस रेष तह अपजस अ
पकीरति विसेष ॥१०५॥ निर्मान चितेरा उदै आइ सब अंग उपंग रचै वनाइ तिथंक
र नाम प्रकृति उदै होत लहि जीव तिथंकर देव होत ॥१०६॥ दोहा ॥ रातिरानवै औ

गोलकरूपी [illegible]चधाम अंमरषंगर इत्यादि नाम ते सात नरकके हैव ज्ञानि ति
नके दुष कौन सकै वषानि ॥१४ दोहा॥ एक निगोद सरीर मैं जीव अनंत अपा
र धरैं जन्नम सव एक वे मरैं एक ही वार ॥१५॥ मरन अठारह वार करि जनम
अठारह्वेव एकै स्वास उस्वास मैं यह निगोद की टेव ॥१६॥ एक निगोद सरीर
मैं एते जीव वषान तीनि काल के सिद्ध सव एक अंस परवान ॥१७॥ वढै न सिद्ध
अनंतता घटै न रासि निगोद जैसे के तैसे रहैं यह जिनवचन विनोद ॥१८॥ तातें
वात निगोद की कहै कहालौं कोइ साधारन प्रकृति उदै जिय निगोदिया होइ ॥१९॥ ॥
यह साधारन प्रकृति लौं वरनी चौदह साष वाकी चौदह हजार ही ते वर नौं मुष
नाष ॥१००॥ पद्धडी छंद॥ जयमालकी ढा॥ थिर प्रकृति उदै थिरता अंग अस थिर उ

॥१२३॥ आतमतत्वलाभकी हानि लाभअंतराइ सोजानि जबलौं आतमभोग न
होइ भोगअंतराइ है सोइ ॥१२४॥ वारवार नजगै उपयोग सो है अंतरायउपभोग
अष्ट कर्मकौं करै नऊदा वीरजअंतरायवलकाउदा ॥१२५॥ नह्चै कही पंचप
रकार अवसकु अंतरायव्यवहार छती वस्तु कछु देइ न सकै दांन अंतरा
इ वलढकै ॥१२६॥ उद्यम करै न संपति होइ लाभअंतराय है सोइ विषै भोगसामि
ग्री जिती जीव भोग करि सकै न रती ॥१२७॥ रोग होइ कै जोग न ऊरै भोगअंतरायव
लफुरै एक भोग सामग्री सार ताकौ भोगऊ वारंबार ॥१२८॥ कीजै सो कहिए उ
पभोग ताकौं नऊरै संजोग यह उपभोगघातकी कथा वीरजअंतराइ सकऊ ग
था ॥१२९॥ सकति अनंत जीवकी कही सो जगदसा माहि दवि रही जग मैं सकति

रदस तनसंबंधी आनि मिलै एक सौ तीनि सब होहिं नाम की वानि ॥१०७॥ चौपई ॥
नाम प्रकृति संपूरन भई पिंड अपिंड कही जु दुही पिंड प्रकृति चौदह रूप तिरह १
तिनकी यह संहि साषा कही ॥८॥ अठाईस अपिंड वरनई ते सब मिलि तिरान
वै भई वरनौ गोत करम सातमा जासौं ऊंच नीच आतमा ॥१०९॥ ऊंच गोत उदोत
प्रवान पावै जीव ऊंच कुल थान नीच गोत फल संगति पाइ जीव नीच कुल उपजैं इ आ
॥११०॥ दोहरा ॥ गोत कर्म की द्वै प्रकृति तेऊ कहीं वषानि अंतराय अब पंच विधि
तिनकी कहौं वषानि ॥१११॥ चौपई ॥ अंतराय अष्टम वटपार सो है भेद पंच पर
कार अंतराय तरु की द्वै डार निहचै एक र विवहार ॥११२॥ कहौं प्रथम निहचै
की वात जासौं उदै आतम गुन घात पर गुन त्याग होइ न जिहां दान अंतराय है तहां

की कही विंसति एक वषानि अवबरनौं छब्बीसा विधि देसघातिया वानि ॥१२७॥
॥चौपई॥ केवलग्यानावरनी विना वाकी चारि आवरन गिना केवलदरस आ
वरन छोडि वाकी तीनौं लीजहि जानि ॥१२८॥ चारि भेद संजलन कषाइ नव वि
धि नोकषाइ समकुदाइ समयप्रकृति मिथ्यात वषानि अंतराय की पाचौ वानि ॥१२
९॥ एछवीस प्रकृति सव नई देसघातिया की वरनई वाकी रही एकसौ एक ते
सव कही घात अतिरेक ॥१३०॥ दोहा॥ ८ विधि गोत द्वै वेदनी आउ चारि विधि जा
नि मिलि तिरानवै नामकी एकोतरसौ वानि ॥१३१॥ चौपई॥ जे घातहि सव आत
म दर्व तेई कहे घातिया सर्व जे कछु घात करहि कि नांहि देसघाति घातै इनमा
हि ॥१३२॥ जे न करहि आतमवल घात ते अघातिया कही विष्यात अवकछु

करम आधीन कवहं सवल कवहं वलहीन॥२२०॥ तन दंडी वल फरै न जहां वी
रज अंतराय है तहां तातैं जगत दसा परवान नय राषी भाषी भगवान॥२२१॥दो
हा॥ आवरनी विवहार की अंतराइ विधि पंच अंतर वाहिर विचारतैं संसै रहै न
रंच॥२२२॥ स्याद वाद जिन के वचन जो मानै परवान सो जानै सव नेदसा औरन
को अज्ञान॥२२३॥ इति प्रकृति विचार॥दोहा॥ सर्वघातिया की प्रकृति देसघातिया वा
नि वाकी और अघातिया ते सव कहौं वषानि॥२२४॥चौपई॥ केवलग्यानआवर
नीवानि केवलदरसआवरनी जानि निद्रा पांच चौकरी तीनि प्रकृति आद
सली जहिं वीनि॥२२५॥ अनंतवंध अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान चौकड़े कज्ञान स
वे मिथ्यात मिश्रमिथ्यात एकवीस प्रकृति सर्वघात॥२२६॥दोहा॥ सर्वघातिया

पस्कनारकइनइंकेंजुकी आनपूरवीजोइ॥१४०॥चौपई॥ च्यारिजातिपंचेंद्रीविना पंचसंघ
ननप्रथमनगिना-समचतुरसविनुपंचअकार वर्नादिकविंसतिपरकार॥१४१॥कुरी
चालथावरउपघात सूछमसाधारनविख्यात अनादेयअपर्यापतदसा दुर्भगदुस्वरअ
सुभनअजसा॥१४२॥ अथिरसमेतएकसोवानि एसवपापप्रकृतिपरवानि केतीवंधउदै
केतीक तिन्हकीवातकहैं अवठीक॥१४३॥दोहा॥ चारिवंधवरनादिमैंवाकीसोलह
नाहिं एकवंधमिथ्यातसैंद्वैगरभितइसमाहिं॥१४४॥ तनवंधनसंघातकी प्रकृतिपंचद
सजानि पंचवंधदसवंधविकुएअठाईसवानि॥१४५॥ अठाइसकौंवंधनहिं वंधएकसौ
वीस इनमैंदोयवढाइयै होंहिंउदैवावीस॥१४६॥चौपई॥ वंधउदैविसेषयहवात एक
मिथ्याततीनिमिथ्यात द्वैदोयअधिकपरिनई प्रकृतिएकसौवाइसभई॥१४७॥ अववि

पुन्नपापके भेद भिन्नरसवकरौंनिवेद ॥१२३॥ इकसातावेदनीसुभाउ नरकआउबिनु
तीनौंआउ ऊंचगोत मानुषगतिभली मानुषआनपूरवी रली ॥१२४॥ सुरगतिसुरानु
पूरवजानि जातिपचेंद्रीएकवषानि पंचसरीर पंचसंघात वंधनससहितपंचदसगात
॥१२५॥ अंगउपंगतीनिविधिभास विंसतिवर्न्नगंधरसफास पहिलासमचोतुरसंसठन
वज्रारिषभनाराचवषान ॥१२६॥ भलीचालआतपउद्योत परघातअगुरुलघुहोत
सासउसासप्रत्येकप्रवान त्रसवादरपर्यापतिजानि ॥१२७॥ थिरसुभसुभगसुस्वरआ
देय जसनिरमानतिथंकरधेय पुन्यप्रकृतिकीअडसठिवानि पापप्रकृतिअवकहौंव
षानि ॥१२८॥ सर्वघातियाकीइकवीस देसघातियाकीछब्बीस एपरकृतिसेंतालीसकई
वाकीऔरकहौंजूजुई ॥१२९॥ दोहरा ॥ प्रकृतिअसातानीचकुल नरकआउगतिदोइ

कथा जैसी कछु कही सो परल्योपम कहिरा सही परल्योपम दस कोडाकोडि सकल रा
कहे कीजहि जोडि ॥१६९॥ एक सारोपम सो काल यह बखान जिनमत की चाल यहे
सागरोपम की कथा जथा सकती मैं वरनी तथा ॥१७०॥ दोहा ॥ आवकर्म अवतार सो
प्रकृति भेद विस्तार कै जानैं जिन केवली कै जानैं गनधार ॥१७१॥ चौपई ॥ अलप बुद्धि जै
सी कछु पाहि तैसी मैं वरनी इस माहि पंडित गुनी हसै मति कोइ अलपमती भाषा क
वि होइ ॥१७२॥ दोहा ॥ कर्मकांड आगम अगम जथा सकति मन आनि भाषा रचे नामै
करी बालबोध हित जानि ॥१७३॥ कलसागीता छंद ॥ षट् कर्म प्रकृति विधान अवि
चल नाम ग्रंथ सोहावना इस माहि गरभित सूपुत चेतन गुन तवार रूभावना जो
जानि भेद वषानि सरदहि सवद अरथ विचारसी सो होइ कर्म विनासि निरमल शि

पणि॥

रतेतीस थिति जघन्यसु महूरत एक यौ गुरु कही विचारि विवेक॥६२॥ छठा नाम कर्म थिति कहौं कोडाकोडि वीस सरदहौ सागर यह उतकिष्ट विचार आठ महूरत जघन विचार॥१६३॥ गोत कर्म सातवा सरील उतकिष्टी थिति सागर वीस कोडाकोडि काल परवान लघु थिति आठ महूरात मान॥१६४॥ अष्टम अंतराय दुषदानि उतकिष्टी स्थिति कहौं वषानि सागर कोडाकौडी तीस लघु थिति एक महूरति दीस॥१६५॥ दोहा॥ वरनी आठौ करम की थिति उतकिष्ट जघन्य वाकी मधम और थिति ते अपसंषधा अन्य॥१६६॥ चौपई छंद॥ अब वरनौं परलोपम काल तथा सागरोपम कौं चाल कुवानरके रोम अपार ते वरनौं जाना परकार॥१६७॥ परलोपम के भेद अनेक तातैं इहां न वरना एक जोजन कूप रोम की वात कही जैनमत मैं विख्यात॥१६८॥ कूप

प्रगटहि रतन गिनैं तिहिं कौन ॥५॥ तुम असंष निरमल गुनषानि मैं मतिहीन
कहौं निज वानि ज्यौं वालक निज वाह पसारि सागर परमिति कहै विचारि ॥६॥
जो जोगिंद करहि तप षेद तऊ न जानहि तुम गुन भेद भगति भाउ मुझ मन अभि
लाष ज्यौं पंषी वोलहि निज भाष ॥७॥ तुम जग महिमा अगम अपार नाम ए
क त्रिभुवन आधार आवै पवन पदमसर होइ ग्रीषम तपत निवारै सोइ
॥८॥ तुम आवत भविजन मन माहिं करम निवंध सिथिल होइ जाहि ज्यौं चंदन
तरु वोलहिं मोर डरहिं भुअंग भगै चहुं ओर ॥९॥ तुम निरषत जिन दीनदया
ल संकट तैं छूटै ततकाल ज्यौं पसु घेरि लेहि निसि चोर ते तजि भागहि दे
षत भो ॥१०॥ तूं भविजन तारक क्यौं होहि ते चित धारि तिरहि लै तोहि यह ऐसे

६० ॥

वसरूप वनारसी ॥१२४॥ दोहा ॥ संवत सत्रहसै समय फागुन मास वसंत रितु
ससि वासर सत्तमी तवयह भयौ सिद्धंत ॥१२५॥ इति श्री प्रकृति विधान संपूरण ॥
॥ अथ कल्याणमंदिर भाषा लिष्यते ॥ दोहा ॥ परम ज्योति परमातमा परमज्ञानि
परवीन वंदौं परमानंदमय घटघट अंतर लीन ॥१॥ चौपई ॥ निरभै करन परमपर
धान भवसमुद्र जलतारन जान सिव मंदिर अघहरन अनिंद वंदौं पासचरन अर
रविंद ॥२॥ कमठमान भंजन वरवीर । गरिमा सागर गुन गंभीर करगुरु पार लहै
नहिं जासु मैं अजान जंपु जसु तासु ॥३॥ प्रभु सरूप अति अगम अथाह क्यौं
हमसे पद होइ निवाह ज्यौं दिन अंध उलूको पोत कहि न सकै रवि किरन उदोत
॥४॥ मोहहीन जानैं मनमाहि तौ वन तुम गुन वरनैं जाहिं प्रलैपयोधि करै जल वौन

कोइ विग्रहमूलनिमैंटैसोइ ॥१७॥ करहिविवुधजे आतमध्यान तुमप्रभातैंहोइबि
दान जैसैनीरसुधाअनुमानि पीवतविषविकारकीहानि ॥१८॥ तुमभगवंतवि
मलगुनलीन समलरूपमानहिमतिहीन । ज्यौंनीलियारोगदृगगहै वर्न्नविव
र्न्नसंखसोकहै ॥१९॥ दोहा ॥ निकटरहतउपदेससुनि तरुवरभएअसोक ज्यौं
रविऊगतजीवसव प्रगटहोतभुवलोक ॥२०॥ सुमनवृष्टिज्यौंसुरकरहि हेठवी
टमुषसोहि त्यौंतुमसेवतसुमनजन वंधअधोमुषहोहि ॥२१॥ उपजीतुमहियउद
धितैंवानीसुधासमान जिंहिपीवतभविजनलहै अजरअमरपदथान ॥२२॥
करहिंसारतिहुंलोककौं एसुरचामरदोइ भावसहितजोजिननमैं तिसुगतिऊ
रधहोइ ॥२३॥ सिंघासनगिरिमेरुसम प्रभुधुनिगरजितघोर स्यामसुतनघनरूप

सैंकरि जानु सुभाउ तिरै मसक ज्यौं गरभित वाउ ॥११॥ जिन सब देव किये वसि वा
म तैं छिनमैं जीत्यौ सो काम ज्यौं जल करै अगिनि कुल हानि वडवानल पीवै सो
पानि ॥१२॥ तुम अनंत गरुवा गुन लियें क्यौं करि भगति धरै निज हियें कै लघु रू
प तिरहि संसार यह प्रभु महिमा अकथ अपार ॥१३॥ क्रोध निवारि कियो मन सां
ति करम सुभट जीते किहि भांति यह पटतर देषहु संसार नील विरष ज्यौं दहै तु
सार ॥१४॥ मुनिजन हिए कमल निज टोहि सिद्धसरूप सम ध्यावहि जोहि कमल कर्णि
का विनु नहीं और कमल बीज उपजन की ठौर ॥१५॥ जब तुम ध्यान धरै मुनि कोइ
तब विदेह परमातम होइ जैसैं धातु सिला तनु त्यागि कनक सरूप धवै जब आगि
॥१६॥ जाके मन तुम करहु निवास विनसि जाइ सब विग्रह तास ज्यौं महंत विच आवै

रामतजिविभ्रमोविभौसवज्ञगविकास अक्षरसुभाउसुलषैनकोइ महिमाअ
नंतभगवंतसोइ ॥३१॥ कोपिउकमठनिजवैरदेषि तिनिकरीधूलिवरषाविसे
ष प्रभुतुमछायानहीभईहीन सोभयौपापीलंपटमलीन ॥३२॥ गरजंतघोरघन
अंधकार चमकंतविज्जुलजलमुसलधार वरषंतकमठधरिध्यानरुद्र उस्तरक
रंतनिजभवसमुद्र ॥३३॥ वस्तु ॥ मेघमालीमेघमाली आपुबलवफोरि भेजेतु
रतपिसाचगन नाथपासउपसर्गकारन अगिनिजालझूकंतमुष धुनिकरंत
जिममत्तवारन कालरूपविकरालतनमुंडमालतिन्हकंठि वै निसंक यहरं
कनिजकरैकर्मदिढगांठि ॥३४॥ चौपई ॥ जेतुमचरनकमलतिहुंकाल सेवहिंत
जिमायाजंजाल भावभगतिमनहरष अपार धन्यधन्यजगतिन्हअवतार ॥३५॥ म

६२

लषि नाचत मनि जिन मोर ॥२४॥ बवि हत होहि असोकदल तुम भामंडल देषि वी
तराग के निकट रहहि रहै न राग विसेष ॥२५॥ सीष कहैं तिहुं लोक को यह सुर दुंद
भि नाद सिवपथ सारथवाह जिन भजहु तजहु परमाद ॥२६॥ तीनि छत्र त्रिभुवन
उदित मुंकतागन छवि देत त्रिविधि रूप धरि मनहु ससि सेवत नषत समेत ॥२७॥
पद्धडी छंद ॥ प्रभु तुम सरीर दुति रतन जेम परताप पुंज जिम सुद्ध हेम अति धवल सु
जस रूपा समान तिन्हके गढ तीनि विराजमान ॥२८॥ सेवहि सुरिंद करि नमित भाल ति
न्ह सीस मुकट तजि देवमाल तुम चरन लगत लहलहे प्रीति नहि रमहि और जन सु
मन रीति ॥२९॥ प्रभु भोग विमुष तन कर्म दाहि जन पार करत भवजल निवाहि ज्यौं मा
टी कलस सुपक होइ लै भार अधोमुष तिरै तोइ ॥३०॥ तुम महाराजा निर्धननि

पतिजग जान दुषसागरतैं मोहि निकासि निरभै थांन देहु सुषरासि ॥४२॥ मैं तुम च
रन कमल गुन गाइ बहु विधि भगति करी मन लाइ जनम २ प्रभु पावौं तोहि यह से
वाफल दीजै मोहि ॥४३॥ धौदौ कात वैसरि छंद ॥ छप्पय ॥ इहि विधि श्री भगवं
त सुजस जे भविजन भाषहि ते निज पुंन भंडार संचि चिर पाप पनासहि रोमराइ
हुलसित अंग प्रभु गुन ध्यावहि स्वरग संपई भुंजि वेगि पंचम गति पावहि यह
कल्यानमंदिर कियौ कुमुदचंद की बुधि भाषा कहत बनारसी कारन समकित
सुद्धि ॥४४॥ इति श्री कल्याणमंदिर भाषा समाप्त ॥ ॥ अथ साधु वंदना लिष्यते ॥

दोहा ॥ श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुष पाठ कहौं मूल गुन साधु के
परमिति विंसति आठ ॥१॥ पंच महाव्रत आदरन समति पंच परकार प्रबल पं

वसागर मद्धि फिरत अजान मैं तुम सुजस सुन्यौ नहिं कान जो प्रभु नाम मंत्र मन धरै ता
सौं विपाति भुअंग मे न डरै ॥३६॥ मन वंछित फल जिनपद माहिं मैं पूरव भव पूजे नाहिं
माया मगन फिस्यौ अग्यान करहिं रंक जन मुझ औ अपमान ॥३७॥ मोह तिमिर छाए
डिग मोहि जन मंतर देष्यो नहिं तोहि तौ दुरजन मुझ संगति गहै मरम छेदि कैं कुव
चन कहैं ॥३८॥ सुन्यौ कान जस पूजे पाइ नैंन निदेष्यौ रूप अघाइ भगति हेतु न भयो
चित चाउ दुषदायक किरिया विनु भाउ ॥३९॥ महाराज सरनागत पाल पतित उधा
रन दीनदयाल सुमिरन करौं नाइ निज सीस मुझ दुष दूरि करहु जगदीस ॥४०॥
करम निकंदन महिमा सार असरन सरन सुजस विस्तार नहिं सेवैं तुम से प्रभु पा
इ तौ मुझ जनम अकारथ जाइ ॥४१॥ सुर गन वंदित दयानिधान जगतारन जग

नुसरै प्रासुक भूमि निरषि पग धरै सदय हृदय साधै सिवपंथ सो तपसी निरभै नि
रगंथ ॥९॥ निरभिमान निरवैद्य अदीन कौमल मधकर दोषरुपहीन ऐसे सु वचन
कहै सुभाउ सो रिषिराजन मैं धरि भाउ ॥१०॥ उत्तम कुल श्रावक साचार तासु गेह प्रा
सुक आहार भुंजै दोष छयालिस टालि सो मुनि वंदौं सुरति संभालि ॥११॥ उचित
वसु निज हित पर हेत तथा धरम उपकरन अवेत निरषि जतन सौं गहै जु कोइ सो
मुनिन मैं जोरि कर दोइ ॥१२॥ रोग विकृत पूरव आदान नवउवार मल अंग उवा
न मारै प्रासुक भूमि निहारि सो मुनिन मैं भगति उर धारि ॥१३॥ कौमल करकस ह
रु वस भार रूछम चिकन तत पत अनुसार इनके फरसन उपसु षल है सो मुनिरा
ज जिनेसुर कहै ॥१४॥ आमल कटक कसाय लमिष्ट तिकत छार रस इष्ट अनिष्ट

चइंद्री विजय षट आवश्यिक आचार ॥२॥ भूमिशायन मंजिन तजन वसन त्याग कच लौंच
एकवार लघु असन थिति असन दंतवान मोच ॥३॥ चौ.पई॥ थावर जंतु पंच परका
र चारि भेद जंगम तन धार जो सब जीवनि कौ रषपाल सो साधक वंदौं तिरकाल ॥
४॥ संतत सत्य वचन मुष कहै अथवा मौन वरत धर रहै मृषावाद नाहिं बोलै र
ती सो जिन मारग सांचा जती ॥५॥ कौडी आदि रतन परजंत घटित अघट धन मे
द अनंत दत्त अदत्तन फरसै जोइ तारन तरन मुनीसर सोइ ॥६॥ पसु पंछी नर
दानव देव इत्यादिक रमनी रति सेव तजे निरंतर मदन विकार सो मुनि निन मौं ज
गत हितकार ॥७॥ विकुधि परिग्रह दस विधि जानि संघ असंघ अनंत वषानि
सकल संग तजि होइ निरास सो मुनि लहै मोष पद वास ॥८॥ अधो दिष्टि मारग अ

चित्त दोष विलोकि करै प्राछित्त नित प्रक्रति मन क्रियारसलीन सो साधु संजम परवी
न॥२२॥ श्री जिन वचन रचन विसार द्वादसांग परमागत सार निज मति मान करै सब ग्या
न सो मुनिवर वंदौं धरि भाव॥२३॥ काउसग मुद्रा धरि नित्त सुद्ध सरूप विचारै चित्त त्या
गै त्रिविधि जोग ममकार सो मुनिराज नमौं निरधार॥२४॥ प्रासुक सिला उचित भू
षेत अचल अंग सम भाव सचेत पश्चिम रैनि अलप निद्राल सो जोगीसर वं चैकाल
॥२५॥ धरम ध्यान जुत परम विचित्र अंतर बाह्य सहज पवित्त ग्यान विलेपन तजै त्रिका
ल। वंदौं सो मुनि दीनदयाल॥२६॥ लोक लाज विगलित भय हीन विषै वासना रहित अ
दीन नगन दिगंबर मुद्राधार सो मुनिराज जगत सुषकार॥२७॥ सघन केस गरभित
च मल कीच त्रस अलंघ तन तपतितस वीच कंलु चैयह कारन जानि सो मुनि नमौं जोरि

हि

इनैं स्वाद रति अरति न वेव सो रिषिराज नमौं हितसेव ॥१५॥ सुभन सुगंध नानापरका
र दुषदायक दुरगंध अपार नासा विषैं गनैं सम तूल सो मुनि जिनसासन तरु मूल ॥
१६॥ स्याम हरित सित लोहित पीत वरन विवरन मनोहर भीत ए निरषै तजि राग विरो
ध सो मुनि करै करम मल सोध ॥१७॥ कुसवद सुसवद सम रस स्वाद श्रवन सुनत नहि
हरष विषाद थुति निंदा दोऊ सम सुनैं सो मुनिराज परमपद मुनैं ॥१८॥ सामाइक साधै
तिहुं काल मुक्तिपंथ की करहि सम्हाल सत्रु मित्र दोऊ सम गिनैं सो मुनिराज करम रिपु
हनैं ॥१९॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाइ साधु पंचपद परम सहाइ इनके चरनन मैं म
न लाइ तिस मुनिवर के वंदौं पाइ ॥२०॥ पावन पंच परमपद एह जानैं जगत माहि उत्तं
किष्ट इनकैं गुन थुति वारंबार सो मुनिराज लहै भव पार ॥२१॥ ध्यान क्रिया गुन धारै

सोउपदवंदयहन्ना॥ जिसदागिरदापेषसोहिरदौदाकलमलहन्ना॥ जिसनासंसैतिमिरसौ
सूझैऊलमन्ना॥ षनैंजिन्हांदीभूमिनौंकुग्यानकुदहन्ना॥ संहजतिन्हांदावजमोंचि
नरहैऊदहन्ना॥३॥ जिन्हांइककरमहद्दा॥ ३विधिपदमन्ना॥ इकअ।निठअसोहना॥ इ
कऊ।कऊमन्ना॥ तिन्हांइक्कनसूऊई३उपदेसअहन्ना वेककटाछेलोयनाज्यौंचंद
गूहन्ना॥४॥ जिन्हांचितइतवारसौंगुरुवचननऊहन्ना॥ तिन्हांआगेकथयोज्यौंकौंदौंद
हन्ना॥ वरसैपाहनभूमिमैंनाहिहोइचेहन्ना॥ वोएवीजनउप्पजैजललाइवहन्ना॥५॥ चेत
नइससंसारमैंतूसंदांइकहन्ना॥ आपेरूपपिसाचकैतैंआपाछहन्ना॥ आपेधंम्यागि
रिवया।किनिदिन्नाटहन्ना॥ जिन्हसौंमिलननवियोगहैतिन्हसौंक्यातहन्ना॥६॥ इसऊनियाही
गेजसौंतूगरवगहन्ना॥ नयाभौरषमकुरूषओ। छप्परविच्चवहन्ना। सुपनेंदासुषमानितैं

६६॥

कुगयानि ॥२८॥ छ॥ थावेदनी उपसम हेत रस अनरस सम भाव समेत एकवार लघु
भोजन करै सो मुनि मुकति पंथ पग धरै ॥२९॥ देह सहारौ साधत मोष तव लौं उचित का
य वल पोष यह विचारि थिति लेइ आहार सो मुनि परम धरम धनधार ॥३०॥ जहां र न
वउ आरमल पात तहां र अमित जीव उतपात यह लषि तजै दंतवन काज सो सिव
मूल पंथ साधक रिषिराज ॥३१॥ दोहा ॥ एई अठावीसं गुन जो पालै निरदोष सो मुनि कह
त वनारसी पावै अविचल मोष ॥३२॥ इति साधुवंदना समाप्त ॥ ॥ अथ मोक्षपैंडी लि
ष्यते ॥ व इक समैं रुचिवंत नौं ॥ गुरु अषै सुन मल्ल ॥ जो तुझ अंदर चेतना वहै तुसा
डी अल्ल ॥१॥ पैंडी ॥ एजिन वचन सुहावनें सुन चतुर छयल्ल ॥ आपै रोचक सिष्य नौं गु
रु दीनदयल्ल ॥२॥ इस वूझे वुधि लहलहे नहि रहै मयल्ल ॥ इस दा मरम न जानसी ई

पइकहन्नो॥२०॥ यातें दारिद मानिया कै ठल्लम वहन्नो। योंतू मानहिं से पदहा म-
रिदम्मकृपहन्नो। जो तू ऊवाकरंकसा अरु मोगरमहन्नो॥ सो सब नानारूप कै
नाचै पुदगहन्नो॥२१॥ जो कुरूप ऊरलन्दूना जो रूपरसहन्नो॥ वे संधा भरि जो व-
ना वूढा अरु वहन्नो॥ लवम जोला गनागोरा अरु कहन्नो॥ सो लवा नानारूप
कै नाचै पुदगहन्नो॥२२॥ जो जीरन कै जरि पवै जो होइ नवहन्नो॥ जो मुरिजावै क-
छि कैं फुहन्नो। अरु फहन्नो॥ जो पानी मैं वहि चलै पावकमैं जहन्नो॥ सो सब नाना
रूप कै नाचै पुदगहन्नो॥२३॥ इक्क करम दीसै ऊधा ज्यों तुलदापहन्नो॥ हरु वसन
गरु वत्तसौ अधकरधयहन्नो॥ अरु कनरूप कनरू कै ऊकोंदि सिनोचहन्नो॥ धरैऊ
विधि विसार ज्यों वटविरषजटहन्नो॥२४॥ षिन रोवै षिन मैं हसै ज्यों मदमतवङ्क

हन्नो॥

सिद्धान्त भवन
आरा।
BHAVAN
ARRAH

ग

अपना घर घल्ला ॥ फिरया नरक के घोर मैं तू सहन विलल्ला ॥ जौं अंबर तैं किया
करि अंबर मल्ला ॥ अंग विभूति लगाइ कै लीया मृगछल्ला ॥ कै वनवासी तैं तज १
घर वार महल्ला ॥ आपा पर न पिछानिया सवँगी गल्ला ॥७॥ माया मिथ्या अगु
सोचए तीनौं सल्ला ॥ तिहिं वादी कर तू तिसौं जियै दा उरझल्ला ॥ ज्यौं दधि रादी
फुटसौं पटदी मैलल्ला ॥ दधि रा नाल पपालि ये नहिं होइ उजल्ला ॥८॥ जब ल
गु तेरी समुझि मैं होदी हलचल्ला फुजसवकाईला मनौं करदा छलवल्ला त
मा वलगु तू स्यांना नहीं क्यौं रहि कल्ला सो रक रैदा पाल नैं क्यौं झल्लै लल्ला ॥९
॥ किनि तू उकरा सांकला किनि पकरा पल्ला भरम करा ज्यौं उर झिया उरझाल
उगल्ला चेतन जड संजोग मैं तैं टोका झल्ला तु ही छुडावहि आपकौं लखि

षटविंदरियां भ्रमतिमिरपटहन्ना। सन्यप्रतापभंजियाकुरगतिदहहन्ना॥ अगिअंगारे
दहिआ आसौं तूलपटहन्ना॥२०॥ दोहा॥ यहमलगुरुदीदेसना करिआश्रवदीढालि
लदीये मोमोषकी द्री करमपाटउघाडि॥२१॥ भवथितिजिन्हकीघटिगई तिन्ह
कौयहउपदेस कहतबनारसीदासयौं मूढनसमझैलेस॥२२॥ इतिश्रीमोक्षमार्ग
पैडीसमाप्त॥ ॥अथकर्मछत्तीसीलिष्यते॥ दोहरा॥ परमनिरंजनपरमगुरु पर
मपुरुषपरधान। वंदौंपरमसमाधिगत। भयभंजनभगवान॥१॥ जिनबानीपरवान
करि सुगुरुसीषमनआनि कछुकजीवअरुकरमकौ निरनैकहौंबषानि॥२॥
आगमअनंतअलोकनभ तामैंलोकअकास सदाकालताकेउदर जीवअजी
वनिवास॥३॥ जीवदरबकीद्वैदसा संसारीअरुसिद्ध पंचविकल्पअजीवके

त्यौंउनकौं वांदीमौंजैसा वैहौमस भहन्ना॥ एकसवीचविनादहै। इकमैंषल भहन्ना। समदिष्टी
सज्ञानकरै। उनकौंसौं हल भहन्ना॥२५॥ जातिउनकौंइकज्यौंमनपष्यार फहन्ना जलविषा
रसंकोचसौंकहिध्यानदहन्ना उद्धतजलपरवाहमैंज्यौंभौंरचलहन्ना ऊंचनीचइक
समकरै कलिकालपटहन्ना अधक्ररधउरमैं ध अध्याविति उथलपथहन्ना अरहट
हारविहारमैं क्याऊपरतहन्ना॥२७॥ मायादेवसरीरज्यौंनलनीरनछहन्ना भवपूरनकरि
ढहिपयाफिरिजलज्यौं ढहन्ना पुनपापविचषेदहै यहभेदनभहन्ना ध्यानक्रियानिरदे
षहै जहमोषमहन्ना॥२८॥ वतनतुसातामोरमैं जो रोहस हहन्ना थितिसवानतुजनौंम
यागुरुध्यानकहन्ना आवघटअंतरघटिगई भवभीरचुहन्ना परमचाहपरगट
भईसिवराहसकहन्ना॥२९॥ ध्यानदिवाकरऊगियो मतिकिरनप्रवहन्ना कैसत

त्यौं इसकरमविपाकहै विचउक्षापलन्ना॥२६॥ उकेदा
आथिरस्वभावहैनहिंकौंइुटहन्ना: ३:३

गलकौरूप अवपुदगलपरजायकी महिमाकहैं अनूप ॥२२॥ सवद वंध सूछम सरल
लंववक्रलघुथूल विछुरनिभिदनिरदौततम इनकौपुदगलमूल ॥२३॥ छाया
आ कृतितेजदुति इत्यादिकवहुभेद एपुदगलपरजायसव प्रगटहिं होंहिं उछेद ॥२४॥
केईसुभ केईअसुभ रुचिर भयानकभेष सहजसुभाउविभाउ अति अद सामा
नविसेष ॥२५॥ गरभितपुदगलपिंडमैं अलषअमूरतिदेव फिरै सहजभवच
क्रमैं यहअनादिकीटेव ॥२६॥ पुदगलकी संगतिकरै पुदगलहीसौं प्रीति पुदगल
कौं आपागनैं यहभरमकीरीति ॥२७॥ जेजेपुदगलकीदसा तेनिजमानैं हंस याहीभ
रमविभाउसौं वढैकरमकौ वंस ॥२८॥ ज्यौं ज्यौं कर्मविपाकवसि गनै भ्रमरकीमौज
त्यौं त्यौं निजसंपतिदुरै जुरैपरिग्रहफौज ॥२९॥ ज्यौं वानरमदिरापियै वीछू डंकि

अनंत अनादि अखिंड ॥४॥ गगन काल पुदगल धरम अरु अधर्म अभिधान अवकछु पुदगल दरव कौ कहौं विसेष बषान ॥५॥ चरम दिष्टि सौं प्रगट है पुदगल दरव अनंत जड़ लछन निरजीव दल रूपी मूरतिवंत ॥६॥ जो त्रिभुवन थिति देषियै थिर जंगम आकार सो पुदगल परवान कौ है अनादि विस्तार ॥७॥ अब पुदगल के वीस गुन कहौं प्रगट समुझाइ गरभित और अनंत गुन अरु अनंत परजाइ ॥८॥ स्याम पीत उज्जल अरुन हरित मिश्र बहु भांति विविध वरन जो देषियै सो पुदगल की कांति ॥९॥ आमल तिक्त कषाइ कटु षार मधुर रस भोग ए पुदगल के पांच गुन घट मानहि सब लोग ॥१०॥ तातौ सीरौ चीकनौ रूषौ नरम कठोर हलवौ अरु भारी सहज आठ फरस गुन जोर ॥११॥ जो सुगंध दुरगंध गुन सो पुद

लियैंउरवेगता एकलियैंउपसांति ॥२८॥ कछपकीसीसकुचहै वकतुरंगीचाल
अंधकारकोसोसमै कंपरोगकेभाल ॥२९॥ वकरकूदसीउमगहै गकरवंधकीचा
ल मकरचांदनीसीदिपै अकररोगकेभाल ॥३०॥ तमउदोत दोऊप्रकृति पुदगलकीप
रजाइ भेदग्यानविनुमूढमन भटकिरमैरमाइ ॥३१॥ उभैरोगकोएकपद उभैसौंमोषनहोइ
विनासीकउभैकीदसा विरलाबूझैकोइ ॥३२॥ ज्यौंकोउगिरैपहारचढि ज्यौंकोउबूडैकूप
मरनउभैकोएकसो कहिवेकौंद्वैरूप ॥३३॥ भववासीउविधाधरै तातैंलषैनएक रूपन
जानैंजलधिकौ कूपकौसकैनेष ॥३४॥ माताउभैकीवेदनी पिताउभैकोमोह उभैवे
नीसौंबंधिरहे कहावतिकंचनलोह ॥३५॥ जातिउभैकीएकहै दोषकहैजोकोइ
गहैआचरैसमझहै मूरषवल्लभहैसोइ ॥३६॥ जाकैचितजैसीदिसा ताकीतैसीदिष्टि

तगात भूतलतै कौतुक करै त्यौं भ्रमकौ उतपात॥२०॥ भ्रमसंसैकौ मूलसौं लखैन
सहेजसकौउ करमरोग समुझै न हीयद संसारी जीउ॥२१॥ करमरोगके है कर
न विषम ठकूंकी चाल एक कैपपरकिति लिए एक अविअसरान॥२२॥ कंप
रोग है पापपद अकर रोग है पुंन ध्यानरूप है आतमा ठकं रोगसौं सुन॥२३॥
मूरष मिथ्यादिष्टिसौं निरषै जगकी रीस डरहि जीव सब पापसौं करहि पुंनकी
हौंस॥२४॥ उपजै पापविकारसौं भयतापादिक रोग चिंताषेद विथा वढै दुष
मानैं सब लोग॥२५॥ उपजै पुन्यविकारसौं विषैरोग विस्तार आरत रुद्र विथा
वढै दुष मानैं संसार॥२६॥ दोउ रोग समान हैं मूढ न जानैं रीति कंपरोगसौं भयक
रै अकंपरोगसौं प्रीति॥२७॥ भिन्न भिन्न लक्षन लखै प्रगट दुहूंकी भांति एक

निज सुभाउ महि आवै ॥ तव सौ निहचै सील कहावै ॥ करम निरजरा होइ विसेषै ॥ निहचै त
प कहियै इह लेषै ॥ ७ ॥ विमल रूप चेतन अभासै ॥ निहचै भाव तहां परगासै ॥ अब सद
गुरु विवहार वषानै ॥ जाकी महिमा सब जग जानै ॥ ८ ॥ मन वच काय सकति कछु दीजै ॥ सो
विवहारी दान कहीजै ॥ मन वच काइ तजै जब नारी ॥ कही पैसोई सील विवहारी ॥ ९ ॥ मन
वच काय कष्ट जब सहियै ॥ ता सौं विवहारी तप कहियै ॥ मन वच काय लगनि वढावै ॥ सो
विवहारी भाउ कहावै ॥ १० ॥ दोहा ॥ दान सील तप भावना ॥ चारौ सुषदातार ॥ निहचै
सौं निहचै मिलै ॥ व्यवहारी विवहार ॥ ११ ॥ चौपई ॥ अब सुनु चारि ध्यान हितकारी
साधहिं मुकति पंथ वेपारी ॥ सुद्धा मूरति छवि चतुराई ॥ कर्लजेष वल वैसवका
ई ॥ १२ ॥ फरस रंग रस गंध सुभाषा ए रूपस्थ ध्यान की साषा इनकी संगति मन मा साधै

पंडितनवरवंक्ति तकरै मूढवढावैसिष्टि॥३७॥इति श्री कर्मछत्तीसी समाप्त॥ ॥अथ ध्यानवत्तीसी लिख्यते॥दोहरा॥ग्यानसरूप अनंतगुन निरावाधनिरुपाधि अविनासी आनंदमैं वंदौं व्रह्मसमाधि॥१॥भानउदै दिनकेसमैं चंदउदै निसि होत दोऊ जाके नाममैं सोगुरुसदाउदोत॥२॥चौपई॥चेतनरु ग्यानीकानिगुरुवानी अमूर्तरूपसिद्धंतवखानी परगटहोइ जैसेसमुझावै मरमीहोइ मरमसोपावै॥३॥चेतननिजनअनादिसंजोगी आपुहिकरता आपुहिभोगी सहजस्वभाउसकतिजवजागी भववनहयैकेमारगलागै॥४॥फिरिकैंदेहकुविजवहोइ नैविवहारकहावैसोइ भेदभाउगुनवंदितवूझै जाकौं अगमअगोचरसूझै॥५॥प्रथममाहिंदानसीलतपभाव नैनिहचैविवहारलखाउ परगुनत्यागकुविजवहोई निहचैंदोनकहावैसोई॥६॥चेतनि

तवनकहिये॥ जाकीसंगतिउरगतिलहिये॥ इष्टवियोगविकलताभारी। अरुअनि
ष्टसंजोगदुषारी॥२०॥ तनकीविथामगनमनजूरै। अग्रसोचकरिवंछितपूरै॥ ऐआ
रतिकेचारोपाए। महामोहरससौंलपटाए॥२१॥ अवकनुरुद्रध्यानकीसैली। जहां
पापसौंमतिगतिमैली। मनइछाहुसौंजीवविराधै। हिंस्यैहरषधरिचोरीसाधै॥२२॥
विगसितरूववचनमृषभाषै॥ आनंदितचित्तविषयाराषै। चारोरुद्रध्यानकेपाए
कर्मवंधकेहेतुवनाए॥२३॥दोहा॥ आरतरुद्रविचारतैं। दुषचिंताअधिकाइ।
जैसैवढैतरंगनी। महामेघजलपाइ॥२४॥चौपई॥ आरतिरुद्रकुध्यानवषानैं। धर
मध्यानअवकनसुसयानैं। केवलभाषितवानीमानैं। कर्मनासकौउद्यमठानैं॥२५॥
पूरवकरमउदैपहिचानैं पुरुषाकारलोकथितिजानैं चारोधर्मध्यानकेपाए

लगमसीषि निज गुन आराधै ॥२३॥ रहै मगन सो मूढ कहावै । अलष लषाउ विचंछन
पावै । अरिहंत आदि पंच पद लीजै । तिनके गुनकौ सुमिरन कीजै ॥२४॥ गुनकौ षोज
करत गुन लहियै । परमपदस्थ ध्यान सो कहियै । चंचलता तजि चित्त निरोधै । ग्यानदि
ष्टि घट अंतर सोधै ॥२५॥ भिन्न भिन्न जड चेतन जोवै । गुन विलेछि गुन मांहि समोवै
यह पिंडस्थ ध्यान सुषदाई ॥ करम निरजरा है तौ पाई ॥२६॥ आपु संभार आपु सूं जो
रै ॥ पर गुन सौं सब नाता तोरै ॥ लगै समाधि ब्रह्ममय होई । रूपातीत कहावै सोई ॥
२७॥ दोहा ॥ यह रूपस्थ पदस्थ विधि अरु पिंडस्थ विचार रूपातीत विनीतमल
ध्यान च्यारि परकार ॥२८॥ चौपई ॥ ग्यानी ग्यान भेद परगासै । ध्यानी होइ सो ध्यान अभ्या
सै ॥ आरत रुद्र कुध्यान हि त्यागै । धरम सुकल के मारग लागै ॥२९॥ आरति ध्यान चिं

कतिपंथ कारन समुझाए॥ ३४॥ दोहा॥ सुकलध्यान औषध लगे॥ मिटे कर्मकौ रोग॥
कुइलो छांमैं कालिमा होत अगनि संजोग॥ ३५॥ यह परमारथ पंथ गुन॥ अगम अ
नंत बखान॥ कहत बनारसि अलपमति॥ जथासकति परवान॥ ३६॥ इति श्री ध्यानब
त्तीसी समाप्त॥ ॥ अथ अध्यातमबत्तीसी लिष्यते॥ दोहरा॥ सुद्ध वचन सदगुरु क
है केवल भाषित अंग॥ लोक पुरुष परवान सब॥ चौदह राजु उतंग॥ १॥ घृतघट पू
रित लोक मैं॥ धर्म अधर्म अकास॥ काल जीव पुदगल सहित॥ छहो दर्वकौ वास॥ २॥
छहौ दर्व न्यारे सदा॥ मिलै न काहू कोइ॥ छीर नीर ज्यौं मिलि रहै॥ चेतन पुदगल
दोइ॥ ३॥ चेतन पुदगल यौं मिले॥ ज्यौं तिल मैं षल तेल॥ प्रगट एक से देषिये॥ यह
अनादि कौ षेल॥ ४॥ वह वाके रस सौं रमैं॥ वह वा सौं लपटाइ॥ चुंबक करषै लो

जेसमुझैंतेमारगआरा॥२६॥ अवसुनुसुकलध्यानकीबातैं॥ मिटैमोहकीस
त्ताजातैं॥ जोगसाधिसिद्धंतविचारै॥ आतमगुनपरगुननिरवारै॥२७॥ उपसममा
षिपिकश्रेनिआरोहै॥ प्रथकवितर्कआदिपदसोहै॥ उपसमपैंथचढैनहिंकोई
षिपकपैंथनिरमलमनहोई॥२८॥ तबमनलोकालोकविकासी। रहहिंकर्मकी
प्रकृतिपचासी। केवलग्यानलहैजगपूजा। एकवितर्कनाउपददूजा॥२९॥ जिनव
रआगेनिकटजबआवै॥ तबबहत्तरिप्रकृतिषपावै॥ सूछिमचित्तमनोवलछीजा।
सूछिमक्रियानामपदतीजा॥३०॥ सकतिअनंततहांपरगासै। तबतिनतेरहप्रकृ
तिविनासै॥ पंचलघुअक्षरपरमितवेरा। अष्टकर्मकोहोइनिवेरा॥३१॥ वरनचतु
र्थेसाधिसिवपावै विपरीतिक्रियानिवृत्तिकहावै सुकलध्यानकेचारौपाए मु

अंतरगुपत कर्मचक्रपरतक्ष दोऊ चेतनभावज्यौं सुकलपक्ष तमपक्ष ॥१५॥ नि
जगुन निजपरजाइमैं ग्यानचक्रकीभूमि परगुनपरपरजाइसौं कर्मचक्रकीभू
मि ॥१६॥ ग्यानचक्रकीढरनिमैं सजगभांतिसवठौर कर्मचक्रकीनींदसौं मृषासु
पनकीदौर ॥१७॥ ग्यानचक्रजौंदरसनी कर्मचक्रजौं अंध ग्यानचक्रमैंनिर्जरा क
र्मचक्रमैंवंध ॥१८॥ ग्यनचक्रअनुसरनकौ देवधरमगुरुद्वार देवधरमगुरुजेल
षैं तेपावैंभवपार ॥१९॥ भववासीजानैंनहीं देवधर्मगुरुभेद पस्यौमोहकैफंदमैं
करैमोषकौषेद ॥२०॥ उदै कुकर्मसुकर्मकौ ॥ रुलै चतुर्गतिमाहिं ॥ निरषैवाहि
जड़दृष्टिसौं ॥ तहांसिवमारगनाहिं ॥२१॥ देवधर्मगुरुहै निकट मूढनजानैंठौरवां
धीदृष्टिमिथ्यातसौं लषैऔरकौऔर ॥२२॥ भेषधारकौंगुरुकहैं पुन्नवंतकौं

हे ज्यौं लोह लगै ताहि घाइ ॥५॥ जड़ परगट चेतन गुप्त दुविधा लखैन कोइ यहु
दुविधा सो इक लखै जो सु विचछन होइ ॥६॥ ज्यौं सुवास फल फूल मैं दही दूध मैं घीउ
पावक काठ पषान मैं त्यौं सरीर मैं जीउ ॥७॥ कर्म सरूपी कर्म मैं व घटाकार घट
माहि गुन प्रदेस परछन्न सब यातै परगट नाहि ॥८॥ सहज स्वच्छ चेतन वसै भावक
मै कीउ ओट दर्व कर्म नोकर्म सौं वधी पिंड की पोट ॥९॥ ग्यान रूप भगवान सिव भावक
मै चित भर्म दर्व कर्म तन कारमन यह सरीर नोकर्म ॥१०॥ ज्यौं कोठी मैं धान है चमी
माहि कन वीच चमी धोइ कन पारषिये कोठी धोयै कीच ॥११॥ कोठी सम नोकर्म मल
दर्व कर्म ज्यौं धान भाव कर्म मल ज्यौं चमी कन समान भगवान ॥१२॥ दर्व कर्म नौं चाल
सौ दुविध चक्र कौ फेर एक ग्यान कौ परिनमन एक करम कौ घेर ॥१४॥ ग्यान चक्र
कर्म मल दोऊ पुद्गल जाल भाव कर्म गति ग्यान मति दुविध ब्रह्म की चाल ॥१५॥ दुविधि वृत्तक १ ३:३

दरसन देवता। चरचै चारित धर्म। दिढ परचै गुनैर ग्यानसौं॥ यहै सुमतकौ कर्म॥
सुमति कर्मनितैं सिवसधै॥ औरु उपाउ न कोइ॥ सिवसरूप परगाससौं॥ आवा
गमन न होइ॥३२॥ इतिश्री अध्यानबतीसी समाप्ता॥ ॥अथ ध्यानपचीसी लिख्य
ते॥ दोहा॥ सुरनर तिरजग जोनिमैं नरक निगोद भमंत महामोहकी नींदसौं
सोयौ काल अनंत॥१॥ जैसैं जुरके जोरसौं भोजनकी रुचि जाइ तैसैं कुकरम
के उदै धरम वचन न सुहाइ॥२॥ लगै भूष जुरके गयै रुचिसौं लेइ अहार अ
सुभ गयैं सुभके जगैं जानै धर्म विचार॥३॥ जैसैं पौन झकोरतैं जलमैं उठै
तरंग त्यौं मनसा चंचल भई परिगहके परसंग॥४॥ जहां पौन नहिं संचरै
तहां न जलकल्लोल त्यौं सब परिगह त्यागतैं मनसा होइ अडोल॥५॥

दैव धर्म कहै कुलरीतिकौं यहु कुकर्म कीटेव ॥२३॥ देव निरंजन कौं कहै धर्म
वचन परवान साधक पुरुष कौं गुरु कहै यह सुधर्म कौ ग्यान ॥२४॥ जानैं मानैं अ
नुभवै करै भगति मनलाइ परसंगति आश्रव सधै करम वंध अधिकाइ ॥२५॥
करम वंधतैं भ्रम वढै भ्रमतैं लषै न वाट अंधरूप चेतन निरहै विना सुमति उद
घाट ॥२६॥ सहज मोह जव उपसमै रुचै सुगुरु उपदेस तव विभाव भव थिति
घटै जगै ग्यान गुन लेस ॥२७॥ ग्यान लेस सो है सुमति लषै सुकति की लीक नि
रषै अंतर दिष्टि सौं देव धरम गुरु ठीक ॥२८॥ ज्यौं सुपरीक्षित जौंहरी काच
डारि मनि लेइ त्यौं सुबुद्धि मारग गहै देव धर्म गुरु सेइ ॥२९॥ दरसन चारित ग्या
न गुन देव धर्म गुरु रूढ परषै आतम संपदा तजै सनेह विरुद्ध ॥३०॥ अरचै

सद्गुरु उपदेस सूं संसौ वेग विलाइ ॥१३॥ जैसें सव ज्ञा दौं जरे घारावति
की आगि त्यौं माया में तुम परे कहा जाउगे भागि ॥१४॥ दीपाकुललौं तव
चे ते तपसी निरगंथ तजि माया समता गहै यह है मुकति कौ पंथ ॥१५॥ ज्यौं
कुधातु के फेटसौं घटि वढि कंचन कांति पाप पुन्य करि त्यौं भए मू
ढातम वहु भांति ॥१६॥ कंचन निज गुन नहि तजे वानहीन के होत घ
ट घट अंतर आतमा सहज सुभाउ उदोत ॥१७॥ पन्नापीटि पकाइये सुद्ध
कनक ज्यौं होइ त्यौं परगट परमातमा पुंन पाप मल षोइ ॥१८॥ परव राहु
के गहनसौं सूर सोम छवि छीन संगति पाइ कुसाधुकी सज्जन होइ मली
न ॥१९॥ निंवादिक चंदन करै मलयाचल की वास दुरजन तें सज्जन भए र

९६

ज्यौं काहू विषधर डसै रुचि सौं नीव चबाइ त्यौं तुम ममता सौं मढे मगन विषै
सुष पाइ ॥६॥ नींव रसन परसै नहीं निर्विष तन जब होइ मोह घटै ममता
मिटै विषै न वंछै कोइ ॥७॥ ज्यौं सछिद्र नौका चढै बूडै अंध अदेष त्यौं तु
म भवजल मैं परे विनु विवेक धरि भेष ॥८॥ जहां अषंडित गुन लगे षेवट सु
द्ध विचार आतम रुचि नौका चढै पावहु भवजल पार ॥९॥ ज्यौं अंकुस मानै
नहीं महामत्त गजराज त्यौं मन तिस्ना मैं फिरै गनै न काज अकाज ॥१०॥ ज्यौं न
र दाउ उपाउ कै गहि आनै गज साधि त्यौं या मन वसि करन कौं निर्मल ध्यान
समाधि ॥११॥ तिमर रोग सौं नैन ज्यौं लषै और की और त्यौं तुम संसै मैं परे
मिथ्या मत की दौर ॥१२॥ ज्यौं औषद अंजन कियैं तिमर रोग मिटि जाइ त्यौं

भगवान अवाची सिवमहिमा अनु जो भगति सांची सिवमहिमा जाकै घट भासी सो सिवरूप
होइ अविनासी ॥३॥ जीउ और सिव अवर न कोई सोई जीव वस्त सिव सोई जीउ ना
उ कहिये विवहारी सिवसरूप निहचैं गुनधारी ॥४॥ करै जीउ जव सिव की पूजा ना
उ भेद तैं होइ न दूजा विधिविधान सौं पूजा ठानैं तव सिव आपु आपु कौं जानैं ॥५॥ त
न मंडप मनसा जहं वेदी सुकल लेस्या गच सहज सपेदी आतम सुचि कुंडली वषा
नी तहां जलहरी गुरु की वानी ॥६॥ भावलिंग सो मूरति थापी जो उपाधि सो सदा अ
व्यापी निरगुन रूप निरंजन देवा सगुन सरूप करै विधि सेवा ॥७॥ समरस जल अ
भिषेक करावै उपसम रस चंदन घसि लावै सहजानंद पुहप उपजावै गुनगर्भि
त जैमाल चढावै ॥८॥ ग्यान दीप की सिखा संवारे स्यादवाद घंटा झुनकारे आगम

हतसाधकेपास ॥२०॥ जैसैंतालसदांभरै जलआवैचहुंओर तैसैंआश्रवद्वारसैं
कर्मबंधकोजोर ॥२१॥ ज्योंजलआवतमूंदियै सूषैसरवरपानि तैसैंसंवरकै
कियैं कर्मनिर्ज्जराजानि ॥२२॥ ज्यौंबूटीसंजोगतैं पारामूर्छितहोइ त्यौंपुद्गल
सौंतुममिले आतमसकतिसमोइ ॥२३॥ मेलिषटाईमांजियै पारापरगटरूपसु
कलध्यानअभ्यासतैं दरसनग्यानअनूप ॥२४॥ कहिउपदेसबनारसी चेतनअबक
छुचेत आपुवुझावतआपकौं उदैकरनकेहेत ॥२५॥ इतिश्रीग्यानपचीसीसमाप्त
॥ ॥अथसिदपचीसीलिष्यते॥दोहा॥ ग्यानविलासविकासधर चिदानंदगुन
वान वंदौंसिद्धसमाधिमय सिवसरूपभगवान ॥१॥ मोहमहातमनासनी ग्यानउ
दधिकीसीउ वंदौंजगतविकासनी सिवमहिमासिवनीउ ॥२॥ चौपई॥ सिवसरूप

रविभाउविषमविषसो है॥ महामोहविसहर नहिं षोहै॥१६॥ संजमजटासहजसुषभो
गी॥ निहचैंरूपदिगंवरजोगी। ब्रह्मसमाधिध्यानजहांसाजै॥ तहांअनाहतडौरूवाजै
॥१७॥ दोहा॥ पंचभेदसम्यकग्यानगुन। पंचवदनपरधान॥ ग्यारहप्रतिमासाधतें॥
ग्यारहरुद्रकहान॥१८॥ चौपई॥ मंगलकरनमोषपददाता। यातैंसंकरनाउविष्यात
जेव। मिथ्यामततिमरविनासै॥ अंधकहरननाउपरगासै॥१९॥ ईसमहेसअषैनिधि
स्वामी। सरवनाउजगअंतरजामी। त्रिभुवनत्यागिरमैसिववाउ। कहिए त्रिपुरहर
नेतवनाउ॥२०॥ अष्टकर्मसौंजितैअकेला॥ महारुद्रकहियैतिहिंवेला॥ मनकाम
नारहैनहीकोई। कामदहनकहियैतवसोई॥२१॥ मववासीनवनाउधरावै॥ महादे
वयहउपमापावै। आदिअंतकोईनहीजानै। संभुनाउसवजगतवषानै॥२२॥ मोहद

ध्यानमौरकुलावै व्यापकधूपसरूपजगावै ॥१९॥ निहचैदान अरघविधि
होवै सहजसीलगुनअक्षत ढोवै तपनैवजकाठैरसपागै विमलभातिफ
लराखै आगै ॥२०॥ दोहा ॥ जो जैसी पूजा करै ध्यानमगनसिवलीन सिवसरूप
जगमेंरहै सोइसाधकपरवीन ॥२१॥ चौपई ॥ सोपरवीनमुनीसरसोई सिव
मुद्रामंडितजोहोई सुरसरिताकरुनारसवानी सुमतिगौरिअरधंगवखानी
॥२२॥ त्रिगुनभेदजटनयनविसेषा विमलभाउसमकितससिरेषा सुगुरु
सीषसींगीउरबांधै नैविवहारवघंवरकाधै ॥२३॥ कबहूंतनकैलासकलो
लै कबहूंविवेकबैलचढिलोलै हंसमालपरिनामत्रिभंगी मनसाचक्रफिरै
सरवंगी ॥२४॥ सकतिविभूतिअंगछविछाजै तीनगुपतितिरसूलविराजै के

केतरनकौं। मनजिहाजसौंकाज॥२॥ मनजहाजघटमैंप्रगट भवसमुद्रघटमाहि मूर
षमरमनजानहीं बाहरषोजनजाहिं॥३॥ मूरषदृकेघटविषैं॥ जलजहाजअरुपौ
न। डिगमुडितमालिमनहा॥ लषैसमुद्रकौंन॥४॥ कर्मसमुद्रविभावजल।
विषैकषायतरंग॥ वडवागिनितिस्नाप्रबल॥ ममताधुनिसरवंग॥५॥ भरमभौंरता
मैं फिरै। मनजहाजचहुंओर॥ गिरैषिरैबूडैतिरै उदयपवनकेजोर॥६॥ जबचे
तनमालिमजगै। लषैविपाकनिजूम॥ जारैममताअपला। थकैभौंरकीघूम॥७॥ मा
लिमसहजसमुद्रकौ॥ जानैंसबविरतंतु॥ क्रमउपयोगतहँरतनसम॥ असमभा
वजलजंतु॥८॥ जंतुदेषिनहीभयकरै॥ रतनदेषिनउछाह॥ करैगमनसिवदीप
कौं। यहमालिमकीचाह॥९॥ दिसिपरषैगुनजंत्रसौं फेरैमतिकीसुकान धरै

गुन॥

रन हरनाउ कहीजें। सिवसरूप सिवसाधन कीजै। तजि करनी निहचैं मैं आवै। तव
जगभंजन विरद कहावै॥२३॥ विश्वनाथ जगपति जगजानैं॥ मृत्युंजय तव मृत्युन
मानैं॥ सकल ध्यानगुन जव आरोहै॥ नांउ कपूर २ गौर सव सोहै॥२४॥ दोहा॥ इहि
विधि जे गुन आदरै। रहैं राचि जिहिं गउ॥ जिहि २ मारग अनुसरै। ते सव सिवके ना
उ॥२५॥ नाउ जथा मति कलपना। करै परगट कहै मूढ॥ गुनी विचारै वस्तु गुन
नाउ विचारै मूढ॥२६॥ मूढ मरम जानैं नहीं करै न सिवसौं प्रीति पंडित लषै वना
रसी। सिवमाहिमा सिवरीति॥२७॥ इतिश्री सिवपचीसी समाप्ता॥ ॥अथ सिंध
चतुर्दसी लिष्यते॥ दोहा॥ जैसैं काहू पुरुष कौं। पार पहूंचिवौ काज॥ मारग माहिं समु
द्र तहां। कारन रूप जहाज॥१॥ तैसैं समकित वंत कौं औरन कछू इलाज भवसमुद्र

हि गही हो । वही अपूरब वाउ ॥ भरम कुहेरि वादर फटे हो ॥ घरी जडाज गमौ जात ॥३ हो मे॥
मायारजनी लघु भै हो । समरस दिवस सजीत ॥ मोह पंकप की घिति घटी हो ॥ संसै सिसि
र वितीत ॥४॥ हो मे॥ सुभ दल पल्लव लहलहे हो ॥ होहि असुभ पतझार ॥ मलिन
विषयरति मालती हो ॥ विरति वेलि विस्तार ॥५॥ हो मे॥ ससि विवेक निर्मल भयौ हो
थिरता अमिय झकोर ॥ फैली सकति सुचंद्रिका हो ॥ प्रमुदित नैन चकोर ॥६॥ हो
॥ सुरति अगिनि ज्वाला जगी हो ॥ समकित भानु अमंद ॥ हृदय कमल विकसित भयौ हो
प्रगट सुजस मकरंद ॥७॥ हो मेरे ॥ दिढ कषाइ हिमगिरि गले हो ॥ नदी निर्जरा जोर ॥ धा
रर नाव हि चली हो ॥ सिवसागर सुष ओर ॥८॥ हो मे॥ वितथ वात प्रभुता मिटी हो ॥ ज
ग्यौ जथारथ काज ॥ जंगल भूमि सोहावनी हो ॥ नृप वसंत के राज ॥९॥ हो मेरे ॥ भव प

८५॥

साधि सिवदीप मुषा। वादवान समध्यान॥१७॥ वहै सकद उदत पवन। गहै षिपक दस
लीक॥ लहै षवरि सिवदीपकी। रहै दिष्टि गति टीक॥१८॥ मन जहाज इहि विधि च
लै। कटै सिंधु जल वाट। आवै निज संपति निकट। पावै केवल घाट॥१९॥ मालिम त
तरि जिहाज सौं। करै दीपकौं दौर। तहां नहीं जल जहाज गति। नहीं करनी कछु औ
र॥२०॥ मालिम की कालिम मिटी। मालिम दीपन दोइ॥ महमनव सिंधु चतुर्दसी॥ मुनि
चतुर्दसी होइ॥२१॥ इति सिंधुचतुर्दसी समाप्ता॥ ॥अथ अध्यातमफाग लिष्यते॥ अध्या
तम विनु क्यौं पाइयै हो मेरे ललना। परमपुरुषकौ रूप॥ अघट अंग घट मिलिरह्यौ हो
महिमा अगम अनूप। अनूपकौ रूप॥१॥ हो मेरे॥ विषम विरष पूरौ भयौ हो॥ आयौ सहज ब
संत। प्रगटी सुरुचि सुगंध ता हो। मन मधुकर मयमंत॥२॥ हो मेरे॥ समति कोकिला ग

मषेल है सोइं न्हाइ धोइ उज्जल भए हो फिरि तहां षेलन कोइ ॥१७॥ हो मं०॥ सहज सक
ति गुन षेलहीं ॥ चिंत बनारसिदास ॥ समसषा सहुनै कहै हो ॥ मिटो मोह दधि पास ॥१
८॥ हो मं॥ इति श्री अध्यातम फाग समाप्ता॥ ॥ अथ पनरह तिथि लिष्यते ॥ अथ पडि
परिवा प्रथम कला घट जागी ॥ परम प्रतीति रीति रस पागी ॥ प्रतिपद परम प्रीति उपजा
वै ॥ वहै प्रतिपदा नाउ कहावै ॥१॥ ऊजु जऊ ऊंघा दिष्टि पसारे ॥ स्वपर विवेक धारना
धारै ॥ दरबित भावित दीसै दोई ॥ द्वै नै मानत ऊतिया होई ॥२॥ तीज त्रिकाल त्रिगु
ण परगासै ॥ त्रिविधि रूप त्रिभुवन आभासै ॥ तीनौं सल्य उपाधि उछेदै ॥ त्रिध्य करम की
परनति भेदै ॥३॥ चौथि चतुर्गति गवन निवारै ॥ कारि चक चूरि चौकरी चारै ॥ चारौं व
देस मुक्ति घर आवै ॥ तब सो अनंत चतुष्टय पावै ॥४॥ पाचैं पंचम चारित पालै पंचम्या

रनतिवसंधमनई हो। आठकर्मवनजाल। अलषअमूरतिआतमा हो॥ षेलैधरमधमाल॥२०॥ होमे०॥ नेपंकतिचाचरिमिली हो॥ ग्यानध्यानडफताल॥ पिचकारीपदसाधना हो॥ संवरभावगुलाल॥२१॥ होमे०॥ रागवैरागअलापीये हो॥ भावमगनगतिस्तानतान। रीझेपरमरसलीनता हो। दीजैदसविधिदान॥२२॥ होमेरे॥ दयामिठाईरसभरी हो॥ तपमेवापरधान। सीलसलिलअतिसीयला हो। संजमनागरपान॥२३॥ होमे०॥ गुरुकुलअंगपरगासियै हो। यहनिलजतारीति। अकथकहामुषभाषियै हो॥ यहगारीनिरमीति॥२४॥ होमे०॥ उद्धतगुनरासियामिले हो। अमलविमलरसपेम। कथतरंगमहिछकिरहि हो। मनसावाचानेम॥२५॥ होमे०॥ परमजोतिपरगटभई हो॥ लगीहोलीकाआगि। आठकाठसबजरिबुझे हो। गईतताईभागि॥२६॥ होमे०॥ प्रकृतिपचासीलगिरही हो भस

॥२१॥ वारसि वारह विरत वढावै। वारह विधि तप सौं तन तावै। वारह भेद भावना भावै
वारह अंग जिनागम गावै ॥२२॥ तेरसि तेरह क्रिया सभालै। तेरह विघन काठिया टालै
तेरह विधि संजम अवधारै। तेरह थानक जीव विचारै ॥२३॥ चौदसि चौदह विद्या मानै
चौदह गुनथानक पहिचानै। चौदह मारगना मन आनै। चौदह राजू लोक परमानै॥
॥२४॥ पंद्रसि पंद्रह तिथि गिनि लीजै। पंद्रह पात्र परिषि धन दीजै। पंद्रह जोग रहित जो
धरनी। सो घट सुन्न अमावसि वरनी ॥२५॥ पूनौ पूरन ब्रह्म विलासा। पूरन गुन पूरन
परगासा। पूरन व्रमृता पूरन मासी। कहै जती तुलसी वनवासी ॥२६॥ इति श्री तिथि वाक
सी समाप्ता ॥ ॥ अथ तेरह काठिया लिष्यते। दोहरा ॥ जे वटपारै वाट मैं। करैं उप
द्रव जोर तिन्है देस गुजरात मैं। कहहिं काठिया चोर ॥१॥ त्यौं ए तेरह काठिया करहिं

नकी स्रत तिस भाले ॥ पांचौं इंद्री करै निरासा । तब पावै पंचम गति वासा ॥५॥ छविधि छका
इ स्वांग धरि सोवै ॥ ९ । छहरस मगन छयाकत होवै ॥ जे छह दरसन मैं न अरूझै । तब
षट्दरव सौं न्यारा सूझै ॥६॥ साते साते प्रकृति षपावै । सपत भंग नै सो मन लावै । त्यागे सात
विसन विधि जेती ॥ निरभै रहै सात भय सेती ॥७॥ आठौं आठ महामद भंजै । आठ रिद्धि
रति सौं न दिरंजै ॥ आठ कर्म मलमूल वहावै ॥ आठ गुन आतम सिद्ध कहावै ॥८॥ नौमी नौ
रस मैं रस वेवै ॥ नौ समकित धरि नौ पद सेवै ॥ करै भगति विधि नौ परकारा । निरषै नौ तत्व
निसौं न्यारा ॥९॥ दसमी दस दिसि सौं मन मोरै । दस प्रान जिसौं नाता तोरै । दस विधि दा
न अंतर साधै । दस लछिन मुनि धर्म अराधै ॥१०॥ ग्यारसि ग्यारह प्रकृति विनासै
ग्यारह प्रतिमा पद परगासै ॥ ग्यारह रुद्र कुलिंग वषानै ॥ ग्यारह विद्या अंग जिन मानै

रूप निरखै धरि ध्यान। विनसि जाइ सत्मारस्य ध्यान॥९॥ कोप क्रिया है आतमा। आगनि
समान तहां आतमा। आपा दाहि और कौं दहै। तहां धर्म रुचि रंच न रहै॥१०॥ कपन कु
छि अष्टम वटपार। जामैं प्रगट लोभ अधिकार। लोभ माहि ममता परगास। ममता करै
धर्म कौ नास॥११॥ नौमौ वग अग्यान अगाध। जासु उदै उपजै अपराध। जो अपराध पाप
है सोइ। जहां पाप तहां धर्म न होइ॥१२॥ दसम क्रिया भ्रम विछेप। भ्रम सौं असुभ करम
कौ लेप॥ असुभ करम उरमति की खानि। उरमति करै धरम की हानि॥१३॥ एकादस
म क्रिया नींद। जासु उदै जिय वस्तु न वींद। मन वच काय होहि जड रूप। बूडै धर्म
कर्म घन कूप॥१४॥ द्वादस अष्टमद भार। जामैं अकर रोग अधिकार॥ अकर रोग
अरु विनय विरोध॥ जहां अविनय तहां धर्म विरोध॥१५॥ तेरम करम क्रिया मोह

धर्मकी हानि ॥ तातैं कछु इनकी कथा । कहौं विसेष वषानि ॥२॥ जूवा आलस सोक
भय । कुकथा कौतुक कोह । कपट कुबुद्धि अग्यानता । भ्रम अनिष्ट मद मोह ॥३॥
चौपई ॥ प्रथम कौ विया जूवा जानि । जामैं पाचव्रतकी हानि । अक्तना घटै हटै सुभ कर्म । मिटै
साज सविन सैं धन धर्म ॥४॥ द्वितिय कौ विया आलस भाउ । जासकउदैं नासै विवसाउ । बाहिर स
थिल होइ सब अंग । अंतर धरम वासना भंग ॥५॥ त्रितीसरौ सोग संताप । जासकउदैं जियक
रै विलाप । सूतक पातक जिस घर होइ । धर्म क्रिया तहां करै न कोइ ॥६॥ भय चतुर्थ कौ वि
या वषानि । जाके उदै होइ बल हानि । उर कंपै न हि फुरै उपाइ । तव सु धर्म उद्यम मिटि जाइ
॥७॥ गा पंचम कुकथा वकवाद । मिथ्या पाठ तथा कैनिनाद । जवलौं जीव मगन इस मांहि
तवलौं धर्म वासना नाहिं ॥८॥ कौतूहल षष्ठम कौ विया । भ्रम विलाससौं दरषै हिया । जूवा

ज्यौं देषौं पिय की उनहार । तन मन सर्वसु गारौं वारि ॥८॥ मेरे०॥ हौं तुम गन मैं दरसन प्या
इ ॥ ज्यौं दरिआउ मैं बूंद समाइ ॥९॥ मेरे०॥ पिय कौं मिलौं अपनपौ षोइ । उँ लागलि पानी ज्यौं
होइ ॥१०॥ मेरे०॥ मैं जग ढूंढि फिरी सब ठौर । पिय के पटंतर रूप न और ॥११॥ मेरे०॥
पिय सुमिरत सब दुष मिटि जाइ । भोर निरषि ज्यौं चोर पराहि ॥१२॥ मेरे०॥ पिय जग ना
यक पिय जग सार । पिय की महिमा अगम अपार ॥१३॥ मेरे०॥ भय भंजन पिय कौ गुनवा
द । गज गंजन ज्यौं केहरि नाद ॥१४॥ मेरे०॥ भागे भरम करत पिय ध्यान । फटै तिमिर ज्यौं
उगत भान ॥१५॥ मेरे०॥ दोष दवै देषत पिय ओर । नाग डरै ज्यौं बोलत मोर ॥१६॥ मेरे०॥
वसौं सदा मैं पिय के गाउ । पिय तजि और कहां मैं जाऊ ॥१७॥ मेरे०॥ जो पिय जाति जा
ति मोरी सोइ । जाति हि जाति मिलै सब कोइ ॥१८॥ मेरे०॥ पिय मोरे घट मैं पिय माहि

२४॥

जो विवेकसौं करै विंगेह । अविवेकी मानुष तिरजंच । धरम धारना धरै न रंच ॥ १६ ॥ दोहा ।
राई तेरह कर्मवग । लेहि रतनत्रय भीनि । यातैं संसारी दसा । कहियै तेरह तीनि ॥ १७ ॥
॥ इति श्री त्रयोदस कर्म का विद्या समाप्त ॥ ॥ अथ राग गौरी ॥ मेरा मन का प्यारा
जौ मिलै ॥ अरे मेरा सहज सनेही जो मिलै ॥ आंचली ॥ औधि अजुध्या आतमराम त्री
ता सुमति करै परनाम ॥ १ ॥ मेरा० ॥ उपजौ कंत मिलन को चाउ । समता सखि सौं कहै
सुभाउ ॥ २ ॥ मेरा० ॥ मैं विरहनि पिय के आधीन । यौं तलफौं ज्यौं जल विनु मीन ॥ ३ ॥ मेरा० ॥
वाहिर देषूं तौ पिय दूर । घट देषौं घट मैं भरपूर ॥ ४ ॥ मेरा० ॥ घट मैं गुपत रहै निरधा
र । वचन अगोचर मन को पार ॥ ५ ॥ मेरा० ॥ अलष अमूरति वरनन कोइ । कव धौं पिय के
दरसन होइ ॥ ६ ॥ मेरा० ॥ सुगम सुपंथ निकट है ठौर । अंतर आड विरह की डोर ॥ ७ ॥ मे

पियकौ गुनष्यान॥ परुप परमारथ पंथ निदांन॥ कहै उपदेस बनारसनाम॥ चेतनि सुमति स ९
दौइक ठाम॥ ३५॥ इति मन का प्यार॥ ॥ अथ पंचपद विधान लिष्यते॥ दोहा॥ नमोध्या ७
नधरि पंचपद पंच सु ष्यान अराधि॥ पंच सरन चिंतारि चित पंच करम सूरि गु साधि॥ १॥
॥ चौपई॥ वंदौं श्री अरिहंत अधीस॥ वंदौं स्वयंसिद्ध जगदीस॥ वंदौं आचारिज उवझाय॥ वंदौं
साधु पुरुष के पाय॥ २॥ ए पद पंच इष्ट अवधारि॥ इन मैं देव एक गुरु च्यारि॥ सिद्ध देव परसि
द्ध उदार॥ गुरु अरिहंतादिक अनगार॥ ३॥ सिद्ध सोइ जिस्कारे न कोइ॥ भयौ कदाचिन
कब हू होइ॥ अषै अषंडित अविचल धाम॥ निरमल निराकार निरनाम॥ ४॥ अब गुरु
कहौं च्यारि परकार॥ परम निधान धरम धनधार॥ मरम वेत सुभ करम सुग्यान॥ त्रिभुव
न माहि पुरुष परधान॥ ५॥ प्रथम परम गुरु श्री अरिहंत॥ दुतिय धरम गुरु सूरि महंत

८५।

जलतरंगज्यौंदुविधानाहिं॥१९॥मेरे०॥ पियमोकरतामैंकरतूति पियग्यानीमैंग्या
नविभूति॥२०॥ पियसुषसागरमैंसुषसींव॥ पियसिवमंदिरमैंसिवनीव॥२१॥मेरे०
पियब्रह्मामैंसरस्वतिवाम॥ पियमाधौमैंकमलानाम॥२२॥मेरे०॥ पियसंकरमैंदेव
भवानि॥ पियजिनवरमैंकेवलबानि॥२३॥मेरे०॥ पियभोगीमैंभुगतिविसेष॥ पि
यजोगीमैंमुद्राभेष॥२४॥मेरे०॥ पियमेरोरसियामैंरसरीति॥ पियविवहारीया
मैंपरतीति॥२५॥मेरे०॥ जहांपियसाधकतहांमैंसिद्ध। जहांपियठाकुरतहांमैंरि
द्धि॥२६॥मेरे०॥ जहांपियराजातहांपियनीति। जहांपियजोधातहांमैंजीति॥२७॥
॥मेरे॥ पियगुनगाहकमैंगुनपाति। पियबहुनायकमैंबहुभांति॥२८॥मेरे०॥जह०
पियतहांमैंपियकेसंग॥ ज्यौंससिहरमैंज्योतिअभंग॥२९॥मेरे०॥ पियसुमिरन

सिद्ध साधक पुरुष। नमौं। आतमाराम। बरनौं देवी सुमति के। अष्टोतर सौ नाम ॥१॥ ढाल कि
कपत्तन की ॥ सुमति सुबुद्धि सुधी सुबोधनिधि सती पुनीता। ससिवदनी सिवमती
सेमुषी पधिषना सीता। सिद्धा संजनवती स्यादवादिनी विनीता ॥ निरदोषा नीरजा
निरमला जगतअतीता। सीलवती सोभागवती सुचि धर्मा रुचि रीति। सिवा सुभद्रा
संकरी मेधा दिढ परतीति ॥२॥ ब्रह्मानी ब्रह्मजा ब्रह्मरति ब्रह्म अधीता। पद्मा पद्मा
वती वीतरागगुनगीता। सिवदाइनि सीतला राधिका रमा अतीता। समता सिद्धकारी
सत्यभामा निरतीता ॥ कल्यानी कमला कुसली भुवनजनी भवानी। लीलावती मनोर
मा आनंदी सुषदानी ॥३॥ परमा परमेसुरी परमपंडिता अनेता असहाया आमोदवती
अभया अघहेता ग्यानवती गुनवती गोमती गौरी गंगा लछिमी विद्याधरी आदि सुंदर ।

त्रतीय परमगुरु स्री उवझाइ। चतुरथ परमगुरु मुनिराइ॥६॥ परम ग्यान दरसन वेतार
वानी खिरै परमसरूप प्रकार। परम उदारिक तन धारंत। परमसरूप कहियै अरिहंत॥७॥ धरम
ध्यान धरै उतकिष्ट॥ भाषै धरम देसना मिष्ट। धरम निधान धरम सौं पेम। धरमसरूप सुआ
चारज नाम॥८॥ चौदह पूरव ग्यारह अंग। पढै परम ज्ञानै सरवंग। परकौं परम कहै समुझा
इ। यातै परमसरूप उवझाइ॥९॥ षट आवस्यक करम नित करै। त्रिविधि करम मम ताप
र हरै। विफल करम साधै समकती। करमसरूप सामानिक जती॥१०॥ पंच सरूप पद कीजै
चितौन दुरित हरन दुष दारिद दौन यह जप मुष्य और सव गौन इस गुन महिमा वरनै कौ
न॥११॥ दोहा॥ महामंत्र ए पंच पद आराधै जो कोइ कहत वनारसिदास पद उलटि सदा
सिव होइ॥१२॥ इति पंचपद विधान॥ ॥अथ सुमति देवी सतक लिष्यते॥ दोहरा॥ नमो

जिनादेसजाता जिनिंद्र विष्याता॥ विसुद्धा प्रबुद्धा ननालोकमाता। दुराचार दुर्नैहरा सं
करानी। नमोंदेवि वागीस्वरी जैनवानी॥२॥ सुधाधर्म संसाधिनी धर्मसाला। सुधाताप
निर्नासिनी मेघमाला। महामोह विध्वंसिनी मोक्षदानी॥ नमोंदेवि वागीस्वरी जैनवानी
॥३॥ अषैवृक्षसाषा व्यतीताभिलाषा। कथासंस्कृता प्राकृता देसभाषा॥ चिदानंद भू
पालकी राजधानी॥ नमौंदेवि वागीस्वरी जैनवानी॥४॥ समाधानरूपा अनूपा अछुद्रा। अ
नेकांतधा स्याद्वादांकमुद्रा॥ त्रिधासप्तधा द्वादसांगी वषानी। नमोंदेवि वागीस्वरी जै
नवानी॥५॥ अकोपा अमाना अदंभा अलोपा। श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञानसोभा। महा
पावनी भावना भव्यमानी॥ नमोंदेवि वागीस्वरी जैनवानी॥६॥ अतीता अजीता सदा
निर्विकारा। विषैवाटिका षंडनी षड्गधारा॥ पुरापापविक्षेपकर्त्री कृपानी॥ नमो०॥ ॥७॥

८१॥

असंगा ॥ चंगा भाचिंता हरनी चिदविधा चिदचेलि । चेतनवती निराकुल कला सिवकुंज
सिवकेलि ॥ ४ ॥ चिदस्वदनी चिद्रूप कला वसुमती विचित्रा । अरधंगी अकूरा जगतजन
नी जगमित्रा ॥ अविकारी चेतना चमत्कारिनी चिदंगा ॥ दुगादरसनवती दुरित हरनी
निर्कलंका । धर्मधरा धीर उधरनी मोह नासनी वाम । जगत विकासिनि भगवती भरम भेदनी
नाम ॥ ५ ॥ घत्ता ॥ निपुनानवनीता । वितथ विनीता सुजसा भवसागर तरनी ॥ निरगमा निरमो
नी दया निधानी । परम सुबुद्धि देवी वरनी ॥ ६ ॥ इति सुमति देवी सतक ॥ ॥ अथ सार
दाष्टक लिष्यते ॥ दोहा ॥ नमो केवल रूप भगवान । मुष ओंकार धुनि सुनि अर्थ
थ गनधर विचारै । रचि आगम उपदेसैं भविक जीव संसै निवारै । सो सत्यारथ सारदा
तासु भगति उर आनि । छंद भुजंगप्रयात मैं अष्टक कहौं बषानि ॥ १ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥

धकारजसरूपीगढभूमिगिरिसिंगहै तैसैंसाधिपददेवकेवलकुरंषलिंगसाधक
कुमतिदेवीरूपतियलिंगहै ध्यानकीअवरस्याद्वादऊनिहचैनभेदकोऊविवहारभे
ददेवदेवीयहविंगहै ऐसैसाधिसाधकसरूपसूधौमोषपंथमेतनिकौसत्यारथमू
ढनिकौंहिंगहै ॥२॥ जाकौभौनभवकूपवमुकुटविवेकसरूपअनाचाररासभअरूढ
ढतिमूगंझीहै। जाकैएकहाथपरमारथकलससदूजैहाथत्यागसकतिवोहारीविधिवू
झीहै। जाकेगुनश्रवनविचारयहैवासीसोगऔपनसगतिरसरागसोंअरूझीहै। सोहैदेवीसीतला
सुमतिसफैसंतनिकोंदुरवुधीलोगनिकौरोगरूपसफीहै ॥३॥ कूपसौनिकासिजवलपरतदे
नलईतवऔरैजोतिमुख्यरूपविराजीहै। सुजासईचौगुनीसकतिलईसौगुनीलजाइगएऔनु
नीरजाइछुछितवाजीहै। कुलसोंप्रघटनररीसलयौसरसूपसयैछत्रसुवोहारीसत्वराजीहै।
औपनकोअंगसोतोकंचनकोअंगसयौछत्रपतीनोंतसयौवासीरीतनताजीहै ॥४॥ दोहरा

अगोधा अवाधा निरंधा निरासा॥ अनंता अनादीश्वरी कर्मनासा॥ निसंका निरंका चि
दंका भवानी॥ नमों०॥८॥ असोका मुदेका विवेका विधानी जगज्जंतु मित्रा विचित्रा
वसानी समस्तावलोका निरस्ता निदानी॥ नमों०॥९॥ वस्तछंद॥ जैनवानी रसकनैदजै
जीव॥ जे आगम रुचि धरहिं जे प्रतीति मन माहिं आनहिं॥ अवधारहिं जे पुरुष जे समर्थ
पद अर्थ जानहिं॥ जे हित हेत बनारसी देहिं धर्म उपदेस॥ ते सब पावहिं परम सुष तजि संस
रकलेस॥१०॥ इति सारदाष्टकं॥ ॥अथ नवदुर्गाविधान लिष्यते॥ सवैया॥३१॥ प्रथम
हिं समकित चेतन लषि आपापर परकौ स्वरूप त्यागि आपा गहि लेतु है॥ वजरौ विलोकि
साधि साधक अवस्था भेद साधक कै साधि पद कौं सु रुद्र दिष्टि देतु है॥ अविरत गुनथा
न आदि छीन मोह अंत नव गुनथान मति साधक कौ षेतु है॥ संजम चिहन विना साधक
कुपुत रूप त्यौं त्यौं परगट ज्यौं ज्यौं संजम सरूप चेतु है॥ ॥१॥ जैसैं काहू पुरुष कौं कारन ऊरधपं

छिमी विलोकियत यहै गुन रतन भंडार भार नरनी यहै गंगा त्रिविधि विचार मैं त्रिपथगौनी यहै मोषसाधन कौ तीरथ की धरनी यहै गोपी यहै राधा राधै भगवान भाव यहै देवी सुमति अनेक भांति वरनी ॥८॥ यहै परम सुरी परम रिद्धि सिद्धि साधै यहै जोगमाया विवहार ढार ढरनी यहै पदमावती पदमनैज्यौं अलेपर है यहै स्याद्वद सकति मिथ्यात की कतरनी यहै जिन महिमा वषानी जिनसासन मैं यहै सिव महिमा अवजित अमरनी यहै रस भोगनी वियोगनी है यहै देवी यहै देवी सुमति अनेक भांति वरनी ॥९॥ इति श्री नवदुर्गाविधान ॥

॥ अथ नाम निर्णय विधान लिष्यते ॥ दोहा ॥

कहदिन काहु समै करुनाभाव समेत सुगुरु नाम निरनय करै भविक जीव हित हेत ॥१॥ जीव दुविधि संसार मैं। अथिर रूप थिर रूप। अथिर देहधारी अलष थिर भगवान अनूप ॥२॥ सवैया ॥ ३१॥ जो है अविनासी वंहैलैं वस्तु ताकौ अविनासी नाउ अविनासीक

जाके परसते परम सरूप दरसनतें दुष मिटि जाहि ॥ यह है सक्ति देवी प्रगट । नगरको
ट घर माहि ॥ ५ ॥ सवैया ॥ ३१ ॥ यह है वेद वेदक सरूप मानि वेदी मैं यहै है आनंदी चिदा
नंद अनुसरनी । यह है ध्यान अगिनि प्रगट भए ज्वालामुषी यह है चंडी मोह महिषासु
रनि दरनी । यह है अष्ट भुजी अष्ट कर्म की सकति मैं जै यह है कालवंचनी त्रल बघे का
ल करनी । यह है अवलावली विराजै त्रिभुअनरानी यहै देवी सक्ति अनेक भांति व
रनी ॥ ६ ॥ यह है कामनासिनी कमरष्या कलिमैं कहावै यह है ब्रह्मचारिनी कुमारी है अप
रनी । यह है है भगौती यह है दुगौऊर्गगति जाकी यह है छत्रपती पुनि पाप ताप हरनी । यह है रा
मरमनी सहज सरूप सीता यह है यह है आदि संदरी विवेक सिंघ वरनी । यह है जगमाता
अनु कंपारूप देषियति यह है देवी सक्ति अनेक भांति वरनी ॥ ७ ॥ यह है सरसती हं
सवाहिनी प्रगट रूप यह है भवमोदिनी भवानी सिंघचरनी । यह है ध्यान लच्छन सोलि

नम और या जनम और आगैं और फिरतार है पै याकी थिरता न तनमैं। कोई कलपना करि जे
ई नाउ धरै याकौ सोई जीउ सोई नाउ मानै तिहूं पन मैं। ऐसौ विरतंत लषि संत सौं सुगुरु कहै
तेरौ नाउ भ्रम तू विचारि देषु मन मैं ॥७॥ दोहा ॥ नाउ अनेक समीप तुव। अंग अंग सब और
जासु तू अपनौं कहै। सो भ्रमरूपी और ॥८॥ सवैया ॥ ३१ ॥ केस सीस भाल भौंह वरुनी पलक
नैन गोलक कपोल गंड नासा मुष श्रौन है ॥ अधर दसन ओठ रसना मसूढा तालु घांटिक च
बुक कंठ कंधा उर भौंन है ॥ कंष कटि भुजा कर नाभि कुच पीठि पेट अंगुली हथेरी नष
जंघा थल मौन है ॥ नितंब चरन रोम एते नाउ अंगनि के तामैं तू विचारु नर तेरा नाउ कौन है
॥९॥ दोहा ॥ नाउ रूप नाहि जीउ कौ नाहि पुदगल कौ पिंड नहि स्वभाउ संजोग कौ प्रगट
भरम कौ पिंड ॥१०॥ यह सु नाउ निरनै कथा। कही सुगुरु संषेप। जे समुझैं जे सरदहैं। ते
निरमस निरलेप ॥११॥ इति श्री नाम निर्णय विधानं ॥ ॥ अथ नवरत्न कवित्त लिख्यते ॥

वसौ ताकौ नांउ विनासीक है ॥ फूल मरै वास जीवै यह है भ्रम रूपी वात दोऊ मरै दोऊ जीवैं यह वात ठीक है ॥ अनादि अनंत भगवंत कौ सुजस नांउ सर्वसिध्ध तारनतरन तह की कहै ॥ अवतरै मरै भी धरै जु फिरि फिरि देह तिनकौ सुजस नांउ अथिर अली कहै ॥३॥ दोहा ॥ थिर नर है नर नांउ की । कथा जथा जलरेष । एते पर मिथ्यामती । ममता करै विसेष ॥४॥ सवैया ॥३१॥ जग मैं मिथ्याती जीउ भ्रम की है सदीउ भ्रम कौ प्रवाह मैं वह्या है आगै वहैगा । नांउ राषिवे कौ महा रंभ करै दंभ करै यौं न जानै दुर्गति मैं दु:ष कौंन सहैगा । वार वार कहै मैं ही भागवंत धनवंत मेरा नांउ जगत मैं सदा काल रहैगा । याही ममता सौं गहि आयौ है अनंत नांउ आगै जौनि जौनि मैं अनंत नांउ गहैगा ॥५॥ दोहरा ॥ वौलिउं वै बित चौकि नरै । अनंत नांउ की हांक । वहै सवद सतगुरु कहै । है भ्रम कूप धमाक ॥६॥ सवैया ॥३१॥ जगत मैं एक एक जन के अनेक नांउ एक एक नांउ देषियै अनेक नेक जन मैं वाज

जलसिंचै | ऊरध गार नवाइ भूमिगत करथापै | जम लीनभू रजाइ टूक दै तिनकिं
रैं | कूम्हा कंटक गलित पत्र बाहिर चुनि डारै | लघु वृद्ध करै जे दैं ऊगल | वाहि
सवारै फल लषै | मालीसमान जो नृपचतुर | सो चिरलसै संपति अषै ॥५॥छप्पय
मूढ तपा समकती इष्टमानी गृहस्थ नर | नर नायक आलसी विपुल धनवंत कृपन
कर | धरमी हठ सहस भाउ वेदपाठी अधरम रत | पराधीन सुचितवंत भूमिपालक
निंदै हसत | रोगी दरिद्री पीनित पुरुष | वृद्ध नारि रस गृद्ध चित | एते विडंबक संसा
रमय | इन सबकौं धिक्कार नित ॥६॥छप्पै॥ ज्ञात धर्म चितवै सहज हित मंत्र विचारै |
चरच लाइ चकं और देस पुर प्रजा संभारै | राग द्वेष हिय गोप्य वचन अमृत सम बोलै ॥
समै गौर पहिचानि कविनको मल गुन षोलै ॥ निज जतन करै संचैरतन न्याय मित्र
अरि समगनै | रन में निसंक होइ संचरै | सो नरिंद रिपु दल हनै ॥७॥छप्पय॥ कृपन

६१॥

॥दोहरा॥ धन्नंतरि क्षपनक अमर। घटकर्पर वेताल। वररुचि संकु वराहमिहर। कालिदास नवलाल॥१॥ विमलचित्त जाचिका सिथिल। मूढ तपस्वी घात। कृपन बुद्धि तिप नरपती। ध्यान वेत नव वात॥२॥ छप्पय छंद॥ विमल चित्त करि मित्त सत्रु छल बल वसि किज्जिय। प्रभु सेवा वसि करिय लोभवंत हि धन दिज्जिय। जुवति पेम वस करिय साधु आदर वसि आनिय। महाराज गुन कथन वेधसम रस मन मानिय। गुरु नमित सीस रस सौं रसिक। विद्या बल बुध मन हरिय। मूरख विनोद विकथा वचन। कन सुभाउ जग वसि करिय॥३॥ छपै॥ जाचक लघु पद लहै। काम आतुर कलंक पद। लोभी उर रज मल लहै। असन लालची लहै गद। उन्नत लहै निपात। दुष्ट पर दोष लहै तकि। कुमन विकलता लहै। लहै संसै कुर है चकि। अपमान लहै निरधन पुरुष। ज्वारी वक संकट सहै। जो कहै सहै गकर कवस वचन। सो जग अप्रिय ताल है॥४॥ छपै॥ सिथिल मूल दिढ करै फूल चुटै

विपुलधन मंमन सिद्धंत लखिसंतकहत कायामदन लवनघन॥१०॥ छप्पै॥ ग्यानवं
तरुवगहै निधनपरिवारवढावै वधावाकरै गुमानधनी सेवकहोइधावै श्रवनस
मुजैधर्म नारिनरता अपमानैं पंडिताक्रियाहीन राउडरकुद्विप्रवानैं कुलवं
तपुरुषकुल विधितजै वंधन मानैं वधहित सन्यासधारिधनसंग्रहै राजगामेंमूरख
विरित॥११॥ इतिश्री नवरत्नकवित्त॥ ॥ अथ जिनपूजाअष्टप्रकारी॥ दोहा॥
जलधारा चंदन पुहप। अक्षत अरु नैवेद। दीपधूपफल अर्घजुत। जिनपूजावसुभे
द॥१॥ अथ जलपूजा॥ मलिनवस्तु ज्यौं जलकरै यह सुभाउ जलमाहिं जलसौं जि
नपद पूजतैं कृतिकलंक मिटिजाहिं॥२॥ अथ चंदनपूजा॥ तपत वस्तु सीतल क
रै चंदन सीतल आप चंदनसौं जिनपूजतैं मिटै मोह संताप॥३॥ पुहपपूजा॥ पुहप
चापधर पुहपसर धारी मनमथ वीर यातैं पूजा पुहपकी हरै मदन सरपीर॥४॥ अ

पू२१

कुविजन सहनैं कोप दहै प्रीति विछोहै। दंभ न विधंसै सत्य कुधर्म मर्यादा तोरै। कुविसन धन छय करै विपति थिरता पद टारै। मोह मरारै ग्यान विषय सुख न ध्यान विफारै। अभिमान विछेदै विनय गुन। पिसुन कमैं गुरुता गिलै। कुकला अभ्यास नासै सुपथ। दारिद सौं आदर विलै ॥८॥ छप्पय॥ तिय बल जोवन समय साधु बल शिव पथ संवर। नृप बल तेज प्रताप कवि बल वचन अडंबर। निरधन बल सु मिलाप दान सेवा जाचक बल। वानिज बल विवहार ग्यान बल वर विवेक दल। विद्या विनय उदार बल गुन समूह ग्रह बल दरब। परिवार सु बल सु विचार करि। होहि एक संमत सरव ॥९॥ छप्पय॥ नरपति मंडन नीति कुल सुष मंडन मन धीरज पंडित मंडन विनय ताल सर मंडन नीरज कुल तिय मंडन लाज वचन मंडन प्रसन्न मुष मति मंडन कवि कर्म साधु मंडन समाधि सुभट भुजबल समरथ्य मंडन छमा ग्रहपति मंडन

षरीति अनुभवकथा। जोसमझै सोदान॥२॥ चौपई॥ सोकहियै इंद्री अभिधाना। वछ
राउमगु भोगपयपाना। जोइन्द्रकेरसमैंनहिंराचा। सोवछरागोदानीसांचा॥३॥ कनककु
रंगसक अंकूरवानी तीनौंसवद स्कवनैकहानी ज्यौंत्यमेतीनिकंकीसाता सोकहियै
सुवर्णकौदाता॥४॥ पराधीनपररूपगरासी। यौंकरकुबुद्धिकहावैदासी। ताकीरीतितजै
तवग्याता। तवदासीदातारविष्याता॥५॥ तनमंदिरचेतनघरवासी ग्यानदिष्टिघटअंत
६३।६ रभासी समुझैयहपरयहगुनमेरा मंदिरदानहोंतिहिवेरा॥६॥ अठमहामदधरकै
साथी। एककर्मकुदिसाकेहाथी। इनकौत्यागकरैजोकोई॥ गजदातारकहावैसोई॥७॥
मनतुरंगचढिग्यानीदौरै। लषैतुरंगऔरमैऔरै। निजडगकौंनिजरूपकैहावै। वहतुरंग
मैदानकहावै॥८॥ अविनासीकुलकेगुनगावै॥ औ।कुलतैंवसदकुबुद्धिकहावै॥ बुद्धिअ कलत्रः
तीतधारनाफैली। वहकलत्रदानकीसैली॥९॥ व्रसनविलासतेलषलिमाया मिस्त्रपिंक

॥अक्षतपूजा॥ तंदुल धवल पवित्र अति। नाम सु अक्षत तास। अक्षत सौं जिन पूजतैं॥
अक्षत गुन परगास॥५॥ नैवेद्यपूजा॥ परम अन्न नैवेद्य विधि। छुधा दहन तन पोष
जिन पूजत नैवेद्य सौं। मिटै छुधादिक दोष॥६॥ दीपपूजा॥ आपा पर देषै सकल
निस मैं दीपक हेत। दीपक यौं जिन पूजतैं निरमल ग्यान उदोत॥७॥ धूपपूजा॥ पाव
क दहै सुगंध कौं। धूप कहावै सोइ। षेवत धूप जिनेस कूं। कर्म दहन बल होइ॥८॥
फलपूजा॥ जैसी करनी करै। सो तैसो फल लेइ। फल पूजा जिन देव की। निहचै सि
व फल देइ॥९॥ यह पूजा जिन अष्ट विधि। कीजे करि सुचि अंग। प्रति पूजा जल धा
रसौं। दीजे अर्घ अभंग॥१०॥ इति श्री अष्टप्रकार पूजा विधान॥ ॥अथ दसदं
न विधान लिष्यते॥ दोहा॥ गो सुवर्न दासी भुवन। गज तुरंग परधान। कुल कलत्र तिल
भूमि रथ। ए पुनीत दस दान॥१॥ अब इन को विवरन कहौं भावित हू पवषानि अल

॥३॥ जिनपद जथा॥ विधि निषेध जामैं नहीं जह अबंध रसपान विमल अवस्था जो धरै
सो जिनपद परवान॥४॥ धर्म जथा॥ लहियै वस्तु अवस्तु मैं। जथा अवस्थित जोइ। जो स्व
भाव जामैं सधै। धरम कहावै सोइ॥५॥ जिनधर्म जथा॥ जो परतजि आपा भजै। जहां स्वदिष्टि
जीतकर्म। असरन रूप अजोग पथ। सो कहियै जिनधर्म॥६॥ आगम जथा॥ पुरुष प्रमान
परंपरा। वचन बीज विस्तार। धरै अरथ की अगमता। यह आगम की ठार॥७॥ जिन आगम
जथा॥ जहां दरव षट तत्व नव। लोकालोक विचार। विवरन करै अनंत नय। सो जिन आगम
सार॥८॥ वचन जथा॥ दो कहुं अक्षर मुद्रा धरै। कहूं अनक्षर धार। मृषा सत्य अनुभै
उभै। वचन चारि परकार॥९॥ जिनपद जथा॥ जाकी दसा अनक्षरी। महिमा अक्षर रूप। स्या
द्वाद जुत सत्यमय। सो जिनवचन अनूप॥१०॥ मत जथा॥ थापै जिनमत की क्रिया निंदै प
रमत रीति कुलाचार सौं बंधि रहै यह मत की परतीति॥११॥ अथ जिनमत जथा॥ अरहं

तिलेनाम कहाया। पिंडरूप गति ऊ विधा मानी। क विध्यात जैसो इ तिलदानी॥१०॥ जो विव
हार अवस्था होई। अंतर भूमि कलावै सोई॥ तजि औहार जो निद्र चैमानैं। भूमिदान की
विधि सो जानैं॥११॥ एक कल ध्यान रथ चढै सयाना। मुकति पंथ कौं करै पयाना। रहै अजो
ग जोग सौं पागी। वहै महार घर रथ कौ त्यागी॥१२॥ दोहा॥ ए दस दान जु मैं कहे। ए सिव सा
धन मूल। ग्यानवंत सूछम गहै। मूढ विचारै थूल॥१३॥ ईई हित वित ग्यान कौं। एई अहित
अज्ञान। राग रहित विधि सहित हित। अहित आन की आन॥१४॥ इति श्री दान दसमी॥ ॥
अथ दस बोल लिख्यते॥ चौपई॥ जिन की भाति कहै समुझाई। जिनपद कहा सुनहु रे भाई।
धर्म सरूप कहावै ऐसा। सो जिनधर्म बषानौं जैसा॥१॥ आगम कहौं जिनागम साषा वरनौं व
चन और जिनवाचा मत भाषौं जिनमत समझावै ए दस बोल जथारथ गावै॥२॥ जिनजथा॥
दोहा॥ सहज नंद वंदकरा हित सहित अनंत चतुष्ट जोगी जोग अतीत मुनि सो जिन आतम रूप

करषै। कवहूं परषै माया॥ जव तन कौ त्यौ नार करै। तव परै सौति पर छाया॥ ८॥ तौ रहियैं क
हयौ आवै हौं कुलीन वह वैरी कहै मषी क्रा निदीन दयाली। यह है हयाली तेरी॥ ९॥ दोहरा॥ हि
य आंगन मैं येम तरु। स्मर विशाल गुन पात। मगन रूप फैल रूलदै। विनाकडैकपवात॥ १०॥
भरम भाग्यौ षम गयौ। सरस भूमि चित मांहि॥ देह दसा इक सम नै॥ यह सौति पर छांहि॥ ११॥ इ
ति श्री कहरा नाम कौ चाल॥ ॥ अथ प्रश्नोत्तर सदोहा लिष्यते॥ दोहरा॥ कौन वस
वपु माहि है कहां आवै कहां जाइ ग्यान प्रकास कहा लषै कौन वैर वह राइ॥ १॥ उत्तर॥ चि
दानंद वपु माह है॥ भूम माहि आवै जाइ॥ ग्यान प्रगटि आप लषै॥ आप माहि वह राइ॥ २॥
॥ प्रश्न॥ जाकौ साधत जगत सव करि करि नाना भेष ताहि वतावौ कहां है जाकौ नाउ अलेष
॥ ३॥ उत्तर॥ जोग साधत कछु और कौं। वह तौ और न होइ। वह अलेष निर भेष मुनि। षोज
न हारै सोइ॥ ४॥ प्रश्न॥ उपजै विनसै रूप सव वह अविनासी नाउ भेटौ तुम भारी भल

ल५॥

न देव सु साधु गुरु। दयाधरम जहां होइ। केवल भाषित रीति जह। कहिये जिन मत सोइ॥१२
॥इति श्री दसबोल॥ ॥अथ कहरानामा की चाल॥ कुमति सुमति दोऊ व्रज वनिता
उभै कौ कंत अवाची। वह अजान पति मरम न जानै। वह भरता सौं राची॥१॥ यह सुबुद्धि स
ब विधि संपूरन॥ आपा पर पहिचानै। लषि लालन की चाल चपलता। सौति साल उर आ
नै॥२॥ करै विलास हास कौतूहल अगनित संग सहेली काहू समै पाइ सखियन सौं कहै पु
नीत हेली॥३॥ मोरे आगन विरवा उलह्यौ बिना पवन उकुलाई ऊंचि डाल वड पात स
घनवा छांह सौति कैं जाई॥४॥ बोलै सखी बात मैं समझी॥ कहौ अरथ अब जोहै॥ तोरे घट
अंतर घट नायक। अद्भुत विरवा सोहै॥५॥ ऊंची डाल चेतना उद्धत। वहै पात गुन भारी॥
ममता बात गात नहि फरसै॥ छा। कनि छांह छतनारी॥६॥ उदै सुभाउ पाइ पद चंचल। पातै
इत उत डोलै। कबहू घर कबहू दरवाहर। सहज सरूप कलोलै॥७॥ कबहूं निज संपति आ

हा। लाभ विद्या कहा। लज्जा लछिमी मूढ। सुष अरु दुष है सो कहा। को पंडित को मूढ ॥४॥
पंथ कुपंथ कहो कहा। सुरग नरक चितौन। को वंधव अरु ग्रह कहा। धनी दरिद्री कौन ॥
५॥ कौन पुरुष कहियै कृपन। को ईसुर जग मांह। ए सब प्रश्न विचारि मन। करि मस्तक प
हरि पांह ॥६॥ श्रीभगवानोवाच॥ दोहरा॥ नारायन उत्तर कहै। सुनि उधव मन लाइ
द्वादस जम द्वादस नियम। कहौं तोहि समुझाइ ॥७॥ दया सत्य थिरता छमा। अभय दं
अचोरज मौंन। लाज असंग्रह आस्तिमत। संग त्याग तिय वौंन ॥८॥ हरि पूजा संतोष गुर। न
गति होम उपकार। जप तप रषट विधि सुचि। श्रद्धा अतिथि आहार ॥९॥ सोरठा॥ कहे भेद चौ
वीस भिन्न भिन्न जम नियम के। रही प्रश्न चौतीस तिनके उत्तर अब सुनहु ॥१०॥ चौपई
॥ समता ध्यान सोधम रस पीजै। दम इंद्रिन कौ निग्रह कीजै। संकट सहन तितिक्षा वीर
ज। रसना मदन जीतिवो धीरज ॥११॥ दान अनै जहां दंड न दीजै तप कामना निरोध

मोहि वैना वौ गंउ ॥५॥ उत्तर ॥ उपजै विनसै रूप जड । वह चिद्रूप अबंध । जोन जुगति जगमें लसै
वैसै पिंड ब्रह्मंड ॥६॥ प्रश्न ॥ सबद अगोचर वस्त है । कछू कहौं अनमान । जैसी गुरु गम तुम
लषी । तैसी कहौं सुजान ॥७॥ उत्तर ॥ सबद अगोचर कहत हौं । सबद माहि फुनि सोइ । स्या
द्वाद सैली अगम । विरला बूझै कोइ ॥८॥ प्रश्न ॥ वस्त अरूप के रूपमें । उरकैं कियौं उ
राव । जैसैं पावक काठमैं । प्रगटै होत लषाव ॥९॥ उत्तर ॥ ज्ञातौ प्रगट फिरि गुपत नौं । घ
हतौ ऐसैं नाहिं । है अनादि ज्यौं षानिमें प्रगटै होत लषाव । कंचन पाहन माहि ॥१०॥ इति प्र
श्नोत्तर के षान कौ ॥ ॥ अथ प्रश्नोत्तर माला लिष्यतैं ॥ दोहरा ॥ नमित सीस गोविं
दै सौं उदय पूछत राम । कौ विधि जम के विधि नियम । कहै जथावति जेम ॥१॥ समता कैसी
दम कहा । कहा तितिक्षा भाउ । धीरज दान जु तप कहा । कहा सकृनट अवसाउ ॥२॥ कहा स
त्यरित है कहा ॥ ॥ सौच त्याग धनदृष । जप्पर दानवल कहा । कहा दया उतकिष्ट ॥३॥ क

लौं कहौं। विचछन। गुन अरु दोष दुकौ कै लछन ॥अडिल्ल॥ इष्ट कौ गुन अरु दो
षकौ। दोषकलावै सोइ। गुन अरु दोष जहा नहीं। तहां गुन परगट होइ ॥२०॥ इति अ
क्षौतरमालिका। ऊँध वहरि सनाह। भाषा कहत बनारसी। भान कौ गुरु परसाद ॥२१॥ इ
ति श्री अक्षौतरमालिका॥ ॥अथ अवस्था एका लिष्यते॥ दोहा॥ चेतन लछन
नियत नय। सबै जीव इक सार। मूढ विचछन परम सौ। त्रिविधि रूप विवहार ॥१॥ मूढ आ
तमा एक विधि। त्रिविधि विचछन जानि। दुविभाव परमातमा। षट विधि जीव वषानि ॥२॥
विधि निषेध जानै नहीं। हित अनहित नहि सूज। विषै मगन तन लीनता। यहै मूढ की बू
ज ॥३॥ जो जिन भाषित सरदहै। भ्रम संसै सब षोइ। समकितवंत असंजमी। अधम विचछ
न सोइ ॥४॥ वैरागी त्यागी दमी। सपर विवेकी होइ। देस संजमी संजमी। मध्यम पंडित
होइ ॥५॥ अपरमाद गुनथान सौं। छीन मोह लौं दौर। अनिधारना जो धरै सो पं

पं

कहीजै। अंतर विजै सूरता सांची। सत्य ब्रम्ह दरसन निरवाची ॥२२॥ रति आनंद उरी धुनि ज
हा होइ करम अभाव सोच विधि सोई। त्याग परम सन्यास विधान परम धरम धनु दस नि
धान ॥२३॥ धूव धारना जप की करनी। हित उपदेस दक्षिना वरनी। प्रानायाम वोध वचन
अक्षा। दया असेष जंतु की रक्षा ॥२४॥ नाम स्मरन गति भाव परगासा। विसाद्या सो जु
अविद्या नासा। लाज कु कर्म गिलान कहावै। लाछि मी नाम निरासा पावै ॥२५॥ स्वरूप
त्याग बुद्धि स्वपरेषा। इष विषया रस भोग विसेषा। पंडित वंध मोष जो जानैं। मूरख देहा
दिक निज मानैं ॥२६॥ मारग श्री मुष आगम भाषा। उतपथ कुधी कुमन अभिलाषा।
स्वअंत वासना स्वरग विलासा। डरि तउछाह नरक पुरवासा ॥२७॥ वेध वहितू स्वर
ग स्वष दाता। ग्रह मानुष वपु सरीर विष्याता। धनी सो जु गुन रतन भंडारी। सरो दरिद्री त्रि
स्नाधारी ॥२८॥ कृपन सो जु विषया रस लोभी। ईसर त्रिगुनातीत अछोभी। वकत कहा

मांसक मत॥ देव अलख षट्दरवेस गुरु। मानै करम गरंथ। धरम कुबंकत फल उदै
यह मीमांसक पंथ॥६॥ अथ जिन मत॥ देव तिथंकर गुरु जती। आगम केवल बैन
धरम अनंत नयातमक। जो जानै सो जैन॥७॥ छह मत छ भेद सों। महा मूढ़ कव्व वेर। व्र
ति बोधन सपा बंन सौं। दसा ज्ञान वै और॥८॥ इति षट्दरसनाष्टकं॥ ॥अथ च्यारि
वर्न निर्नय लिख्यते॥ दोहा॥ जो निहचै मारग गहै। रहै ब्रह्म गुन लीन। ब्रह्म दिष्टि सुख
अनुभवै। सो ब्राह्मन परवीन॥१॥ जो निहचै गुन जानि कें। करै शुद्ध व्यवहार। जी
तै सेना मोह की। सो षत्री भुज भार॥२॥ जो जानै व्यवहार नय। दिढ व्यवहारी होइ। सु
भ करनी सौं रमि रहै। वैस्य कहावै सोइ॥३॥ जो मिथ्या मत आदरै। राग दोष की षानि॥
विन विवेक करनी करै। सूद्र वरन सो जानि॥४॥ चारि भेद करतूति सों। ऊंच नीच कु
ल नाम। और वरन संकर सबै। जे मिश्रित परिनाम॥५॥ इति च्यारि वर्न निर्णय॥

जितसिरमौर॥६॥ जो केवलपद आचरै। चादिसंजोग गुनथान। जो संजमपर
मातमा। भववासी भगवान॥७॥ जिहिंपद सबपद मैं मगन ज्यौं जलमैं जलबूंद
सोऽविचलपरमातमा निराकार निरदुंद॥इति अवस्थाष्टकं॥ ॥अथ षट्
दर्शनाष्टकं॥दोहा॥ सिवमति बौधसु वेदमत। नैयायकमतदंद। मीमांसक
जिनमत्तए। षटदरसन परतन्द॥१॥ अथ सिवमत जथा॥ देव सदा जोगीसु गुरु
आगम सिवमुख भाष। गनैं कालपरनति धरम। इह सिवमत की साष॥२॥ अथ बौ
धमत जथा॥ देव बुद्ध गुरु पाधरी॥ जगत वस्तु छिन औध। ग्यानवाद आगम भनै
चारवाक मत बोध॥३॥ अथ वेदमत जथा॥ देवधर्मै अद्वैत जग गुरु वैरागी भेष
वेद ग्रंथ निहचै धरम मत वेदांत विसेष॥४॥ अथ नैयायक मत॥ देव जगत करता
पुरुष। गुरु सन्यासी होइ। न्याय ग्रंथ उद्यम धरम। नैयायक मत सोइ॥५॥ अथ मी

जए। चामर सिंघासन प्रभामंडल छत्र तिन्नि विराजए। नमदेव कंकेलि सभा वारह
चौंतीसै अतिसै सही॥ सुर असुर किंनर गन बनारसि रचत गठ जोग नमही॥४॥
लछ वेहत्तरि पूरव आयाजी। जोग भोग विजिन वरा सिवपद पायाजी। सिवपद विना
यक सिद्धि दायक कर्मसह रिपु भंजनो। वरनरि मैं रावाद मंडन भविय जन मनरंज
नौ। सोलसै सत्तरि समय आसकनि मास सित पष वारसी। वीनवै वै कर जोरि सेवकासि
रीमाल वनारसी॥५॥ इति श्री॥ अजितनाथके॥ ॥वाकी महर्मद षान कै छंद की ढ
ला॥ सहिएरी दिन आजु सुहाया मुज भाया आया नाह घरे। सहिएरी मन उदधि अ
नं। दामषकंदा चंदा देह धरे। चंद जिवा मेरा वल्लभ सोहै नैन चकोर हसुरकेकरै।
जगजोति सुहाई कीरति छाई वहु दुष तिमिर वितान हरे॥ सहिकाल विनानी अंवि
त वानी अरु मृगल छन कहिए। सिरी संति जिनेस नरोत्तम का पभु आजु मिलामै

॥राग बिलावल॥दोहा॥गो घणमनहरपघनमौं।सुमरिसकगुरुरविचंद।सरससति दे
विपमायपलहि।गावौं अजिय जिनंद॥१॥छंद॥श्री अवजापुरि देसकैहायाजी॥
राजकरैतहां जितसत्रु रायाजी।रापाकधर्मनिधानसंकेररदेविविजमातसोघरै
तसकैउवरिविजयविमालसुरवरसकपनसूचितअवतरै॥तवजननमउछववकारहिवा
सवमधरधानिगावहिसारी।आनंदत्रिभुवनजनवनारसिधन्यश्रीउवजापुरी॥
२॥महिमलिराजीउ अजितजिनंदाजी।गयवरलछननिरमलचेराजी।चंदासकउरै
तदरयागवेंसहकुमततिमरविनासए।सघमाढधारिसकचापपरमितदेहकेंचनभाल
ए।दिढपालिराजसकगहियसंजमसुकतिपधरघसाजियो।उपनकेवलसक
बवनारलि अजितमहियलिराजियो॥३॥गढजोजनमहिरचहिसुरहेवाजी अप
छातेहारीकराहिसकसेवाजी सेवहिं अमोकमसूनवरषितदिव्यध्वनितहांग

दित चरन जुग वंदौं सांति जिनेस ॥३॥ छंद ॥ श्री सांति जिनेसं जगत महेसं विगत कलेसं
मंडेसं भवि कमल दिनेसं मति महिसेसं मदन महेसं परमेसं ज्ञान कुमुद निसेसं कवि
रादेसं धर्म धरेसं चक्रेसं भवजलपोतेसं महिमन गेसं निरुपम वेसं तीर्थेसं ॥४॥ दोहा ॥
करत-अमर नर मधप जस्स वचन सुधा रस पान वंदौं सांति जिनेस वर वदन विसेस
समान ॥५॥ छंद ॥ वररूप-अमानं-अरितमभानं निरुपम ध्यानं गतमानं मुन निकर
स्थानं मुक्ति वितानं लोक निदानं सुध्यानं भवतारन जानं कृपानिधानं जगत प्रधानं
मतिमानं प्रगटित कल्यानं वर महिमानं सिव पद दानं मुगजानं ॥६॥ दोहा ॥ भवसा
गर भवपनीत वक्र भक्ति लोक प्रतिपाल वंदौं सांति जिनाधिपति कुगति लनाक
रवाल ॥७॥ छंद ॥ भंजित भव जालं जित कलिकालं कीर्ति विसालं जनपालं गति
विजित मरालं-अरिकुल कालं वचन रसालं वरभालं मुनि जलज मृनालं

१००॥

री सहिए ॥१॥ सहि हारी ॥ तू परम सयानी सुरथानी रानी राजत्रिया सहिहारी । तू अ
ति सुकुमारी । वर नारी न्यारी ग्यान त्रिया ग्यान त्रिया लषि रूप अचंभा । रति रंभा म
नि लाज रही । कलधौत कुरंग कौल करि केसरि । एसरि तोहि न होहि कही ॥ अनु
राग सुहाग भाग गुन आगरि । नागरि कुन हिल हिल नहिए ॥ मिलिया तुऊके तन रोच
म का ग्रन्तु धन्य सयानी रासहिए ॥३॥ इति सांति नाथ छंद ॥ ॥ अथ सांति नाथ को त्रि
भंगी छंद लिष्यते ॥ दोहा ॥ विश्वसेन नि कुल कमल रवि ॥ अइरा उर अवतार । धनु
ष सु चालिस कनक तन । वंदौ सांति कुमार ॥१॥ छंद ॥ गजपुर अवतारं सांति कुमा 1
रं सिवदातारं सुषकारं निरुपम आकारं रुचिराचारं जगदाधारं जितमारं ऋतसं
रि संहारं महिमापारं विगतविकारं जगसारं परिहिल संसारं गुनविस्तारं जगनि
स्तारं सिवधारं ॥२॥ दोहा ॥ सकल सुरेस नरेस अरु किंनरेस नागेस तिन्हगन वं

थ पत्ति जथा ॥ एक मतंगज एक रथ। तीनि तुरंग परधान। सुभट पंच पाइक सहित। पत्ति कटक परवान ॥४॥ अथ सेना जथा ॥ चौपई ॥ नौ तुरंग रथ तीनि सभाइक। हस्ती तीनि पंचदस पाइक ॥ बल चतुरंग और नहि लेना ॥ यह परवान कहा वै सेना ॥५॥ अथ सेनामुष जथा ॥ सत्ताईस घोरे नौ हाथी। पैंतालीस पाइक नर साथी ॥ नव रथ सहित कटक जो होई ॥ दल सेनामुष कहियै सोई ॥६॥ अथ अनीक जथा ॥ मत्त मतंग सात अरु बीस पवनवेग रथ सत्ताइस अनुग एकसौ पैंतिस ठीक यह इक्यासी सहित अनीक ॥७॥ अथ वाहिनी जथा ॥ आलानक छंद ॥ इक्यासी गजराज घोर घन गाजनैं। इक्यासी परवान महारथ राजनैं। तीनि अधिक चालीस तुरंगम दोइसे। अनुषग चारिसैं पंच वाहिनी होइसे ॥८॥ अथ चमू जथा ॥ गीता छंद ॥ गज दोइसै इतेताल रथ वर दोइसै तेताल हय सात सै उनतीस पर मिति जाति बेत रसाल

मवनयसालं। सिवउरमालं ककुमालं। नवृतकमतमालं त्रिभुवनपालं नयनविस
लंगुनमालं॥४॥ कलसा छप्पय॥ हीरहिमालयहेलकेदसरदसूनिसाकर। कीर्त्ति
कांतिविसारसारगुनगनरत्नाकर। कःकृतसंततिधामकामविदेबुविदालन। मा
नमतेगजसींघमोहतमदलनसकवारन। श्रीसांतिदेवजयजितमदन। वानारसि
वेदतचरन। भवतापहारहिमकरवदन। सांतिदेवजयजितकरन॥५॥ इतिश्रीसांति
नाथकेत्रभंगीछंद॥ ॥अथनवसेनाविधानलिख्यते॥ वेसरीछंद॥ प्रथमहिंपति
नामदललैना॥ तासौंत्रिगुनकहावैसेना। सेनत्रिगुनसेनामुषपतीका॥ सेनामुषसौं
त्रिगुनअनीका॥१॥ कीजैत्रिगुनवाहिनीसोई। वाहिनत्रिगुनचमूंदलहोई। त्रिगुनव
रूथिनिदलपरचैना॥ ताकौंत्रिगुनकहावैदंन॥२ सेना॥ दंनकाटकदलगुनकर
गा। नवअछोहिनीजानं। हयगयरथपायकसहित। नवकटककवपानि॥३॥ अ

ये इहिं विधि अंग चतुरंग दल अछौ दिन परवान किय ॥१४॥ इति नवसेना विधान
समाप्त॥ ॥ अथ नाटक समयसार सिद्धांत के चारि कलसे पांतर निकले तिनके
चारि कवित्त कीने ते लिषीयै छै॥ सवैया इकतीसा॥ श्री॥ प्रथम अग्यानी जीव कहै मैं
सादीव एक दूसरौ तन और मैं ही करता करम कौ॥ अंतर विवेक आयौ आपा पर भे
द पायौ भयौ बोध गयौ मित्र भारथ भरम कौ। भासे छहौ दरब के गुन परजाइ सब नासे
दुष लष्यौ मुष पूरन परम कौ। करम कौ करतार मान्यौ पुदगल पिंड आपु करतार
भयौ आतम दरब कौ॥१॥ दोहा॥ जीव चेतना संजुगत। सदा काल सब ठौर। ताते चेतन
भाव कौ। करता जीव न और॥२॥ गीताछंद॥ जे पुंय करम उदै विषै रस भोग मगन
सदा रहै। आगम विषै कषभोग वंछहि ते न पंचम गति लहै। जिस हियै केवल विर
ष अंकुर सक ढ अन भौ दीपए किरि घास कलता जे हो हि सम रस तिन्ह हि मोषन

जहं सुभट बारहसै कषायक दस अधिक अरु पंच सो चमूल चतुरंग सो मि-
त सहित नर तिरजेंच ॥५॥ अथ वरूथिनि जथा ॥ रथ सात सै उनतीस कुंजर
सात सै उनतीस ॥ हय एकाविंसति सै सतासी । चपल उन्नत सीस । सत्रीस सै बल-
वंत पायक अधिक पैंतालीस । सो है वरूंथ्रु निकट कटक अपार चटक सुंदरदी-
स ॥१०॥ सैनका ॥ कुंजर दोइ हजार एक सौ असी सात जुनि जेते गज तेते रवान
रथ राजर हैं वनिं नौ सै पाति दस हजार एक सौ असी सात जुनि पायउचंडबल
पैसा विसे इकसा वि तुरंग यह दैन नाम दल ॥११॥ अथ अक्षौहनी जथा ॥ छप्पय ॥
गज इकवीस हजार आठ सै सत्तरि ग जहिं रथ इकवीस हजार आठ सै सत्त-
रि सजहिं एक लाख अरु नौ हजार नर सुभट सनायक तिसं उपरि तीनि से
अधिक पंचास कपायक सो हत तुरंग पैसठि सहस छसै अधिक दस औरलि

के मन मानी पाप की कहानी उ बखानी दोष भरी है ॥४॥ मैल की बनाइ मूरत सौं कहैं
भयौ गनेस सरिता सौं कहै सूरज सौं अवतरी है ॥ द्रौपदी सती कौं कहैं याकै पं
च भरतार कुंती हू कौं कहै पाच विन चरी है ॥ राम सौ विवेकी कौं कहै मनुष अवता
र मावैं न कौं सवा सौ क्रत नाम कुसहरी है ॥ ऐसी मिथ्या मत बानी मूढनि के म
नमानी पाप की कहानी उ बखानी दोष भरी है ॥५॥ दोहरा ॥ कुगाह गहा गहिल्या
नैं ॥ मूढो जो देइ धर्म उवएसो । सो चम्मासी कुक्कर । वयनम्मि षइ कपूरं ॥६॥ इति
मिथ्याववानी ॥ ॥ अथ वस्तावीक कवित्त ॥ सवैया ॥३१॥ पूरब की पछिम
हौ उत्तर कि दछिन हौ दिसि कै विदिस हौ कहा न तहां धाईयै पढियै पढाइयै कि
गाढियै गढाइयै कि नाचियै नचाइयै कि गाइयै गवाइयै न्हाए विनु षाइयै कि न्हाइ
कर षाइयै कि षाइ करि न्हाइयै कि न्हाईयै न षाइयै जोग कीजै भोग कीजै दान

मीपरा ॥३॥ जो कोऊ विचक्षन कहै मोहि यक्षक्त अनजो मोहरा । मैं ना विनयपरवा
न निर्मल निरासी निरमोहरा ॥ मम ध्यान देवल वाहि केवल देव परगट भासरा । करि
रूप जोग विभाव परनति अष्ट कर्म विनासरा ॥४॥ इति नाटक कवित्त ॥ ॥ मिथ्यात
वानी लिख्यते ॥ सवैया ॥३१॥ नारायन देव कौ कहै याकी मारी सृष्टि मरी है ॥ अवलौं
कहावै भूमि सौं कहै पताल गई अनंत वरहि रूप धरिकै उद्धरी है ॥ असी मिथ्यमत
त वानी मूढनि के माननि मानी पाप की कहानी कछु पदानी दोष भरी है ॥२॥ याके कवित्त में भू
क लवकी जै सौ वाकुलौं में देषौ तैसौ लिषौ । मो हि दोसु मति दीजौ ॥ संतान उपजै नर देव कै सं
जोग सेती कनक कीलका कहै आगिनि सौं जरी है । साक्त नौक मेरु सो उपारि कहै म
छ्यौ सिंधु इंद्र कौ कहै कि गौतम की नारि धरी है । भीम नरै हाथी तें आकास में फि
रै सदीव वायस्कानु संग अविनासी काया करी है ॥ ऐसी मिथ्यामत वानी मूढनि

न जगत ललना रासोई कामिनी कनकाकृ जाउ हूकौं बनारसी। हे अविनासी सदीव तू
है अविनासी जीव पा जगत कूप बीच पई तौ बनारसी ॥ इनकौ तू संग त्यागि कूप
सौं निकसि नागु ग्यानी मेरै कहै लागु कहत बनारसी ॥४॥ चतु:पदजमककवित्त॥
जीवके वधैया वाम विद्याके सधैया दावानलके दधैया वन आषेट ककरमी ॥ जु
वारीलवार परधनके हननहार चोरीके करनहार दारीके असरमी ॥ मासके भ
षैया सुरापानके चषैया परवधूके लषैया जिन्हके हिये न नरमी। रोसके गहै
या परदोसके कहैया एते पापी नर नीच निरदै महा अधरमी ॥५॥ सवैया ॥२३॥ सम
कग्यान नही उर अंतर कीरति कारन भेष बनावै। मौंन तजै वनवास गहै मृगमौं
नट है तपसौं तनतावै ॥ जोग अजोग कछू न विचारत मूरख लोगनिकौं नरमावै। पैं
न करै वक्र जैन कथा कहि जैनविना नर जैन कहावै ॥६॥ सवैया ॥२४॥ धीरज तात

हीजैछीनलीजैजेहिविधिजानैंजाकौ।सोविधिवताईयै॥१॥दिसिऔविदिसिदे
कैजगतकीमरजाद पढियैसवदगाढियैसकाजदमाजहै॥नाचियैसचितचप
लाईगाइयैसधुनि न्हाइयैसतनसौचिपाइयैसनाजहै॥परकौंसजोगक
तौजोगविषैस्वादभोगदीजैलीजैमायासौतौभरमकौकाजहै।इनतैंअतीतकौ
कैचेतनकौपुंजतामैताकेरूपजानिवेकौजानिवौइलाजहै॥२॥जोपुरुषलोभ
वंततामैऔगुनअनंतजाकेहियेरुहेतौसकपापीपरधानहै॥जाकेमुषसत्यवा
नीसोईतपकौनिधानीजाकौमनसौपवित्रसौतीरथकौथानहै।जामैसज्जनकी
रीतिताकौसवहीसोंशीलजाकौभलीमहिमासुआभरनबानहै॥जामैहैसुविद्य
सिद्धिताहींकैअष्टरिद्धिजाकौअपजससौतौमृतकसमानहै॥३॥केचेनभं
गारपाईरंचनमगनहैजैपाइनवजोवनानरसी कालअसिधाराजि

ला बिना सतामैं तू भगन जयौ त्याग धर्म अपनौ ॥ ए ॥ सवैया ॥ २३ ॥ कुंन संजोग जुरे रथ पा
इक मात मतंग तुरंग तबेले । मानि विसौ अंग गयौ सिर भार कियौ बिसतार परिग्रह लेले ॥
बंधव वाढ करी थिति पूरन अंत चले उवि आपु अकेले ॥ हारि हृ माल की पाट सीनारि कैं
औरदे चानकी ओट दैषेले ॥ २० ॥ इति सवैया ॥ ॥ अथ छप्पय ॥ थान पान मिष्टान
मौम माद कन वनिज्जिय ॥ लवन हिंगु घृत तेल वाने जे कारन नन दिलिज्जिय । १ सम मा
मा पसक वंनिज्ज सस्त्र विक्रयन करिज्जिय । जहां निरंतर अगिनि करम सो वनिज नकि
ज्जिय । मधु नील लाष व निज्ज तजि कूपतलाउ न सो षिये । लहियै न धर्म गृह वास वसि
हिंसक जीवन पाषिये ॥ २१ ॥ इति कुकरम विंसतिका ॥ सवैया ॥ २२ ॥ मुकता कौ स्वामी चँ ६
मूंगा नाथ माहीनेंद गोमेद कौ राजा राज लीलापति सनी हैं । केतु लहसने स्वर कुष्यरा
ग देव कुस पन्ना कौ अधिकैं पकु धक क्र हीरा धनी हैं । याही क्रम कीजे घर दछिना

छमा जननी परमारथ मीत महा रुचि मासी। ग्यान सपुत्र सुता करुना मति पुत्रे वधू समता प्रतिभासी। उद्यम दास विवेक सहोदर बुद्धि कलत्र सुभोदय दासी। भाव कुटुंब सदा जिन्हकै ढिग यौं मुनिकौं कहियै ग्रहवासी॥७॥ सवैया ३१ मानुष जनम लहि सम्यक दरस गह्यौ अजहूं विषै विलास त्यागु मन बाउरे। संपति विपति आयें हरष विषाद छोड़ु तेही उरपी वितउ कु जैसी वहै बाउरे॥ भौ थिति निकट आये समता सुधा कहु पाइ गयो है निघटि जल मिथ्यात कु धाउरे॥ टूटैगो करम सब छूटैगो जगतवास केवल उदै समीप आयो परे बाउरे॥८॥ जामैं सदा उतपात रोगनि सौं छीजै गात कछू न उपाउ छिन छिन आउ षपनौं कीजै बहु पाप औ नरक दुष चिंता व्याप आपदा कलाप मैं विलाप ताप तपनौं जामैं परिगह कौ विषाद मिथ्या बकवाद विषै भोग सुष कौ सवाद जैसौं सपनौं ऐसौ है जगतवास जैसौ चप

सवैया ॥ ३२ ॥ सीलगर दरजी नबोली रंगवाल ग्वाल बढई संगतरास तेली धोबी धुनिया ।
कंदोई कहार काछी कुलाल कलाल माली कुंदीगर कागदी किसान पटबुनिया ।
चितेरा बंधेरा बारी लखेरा ठठेरा राज पटुवा छपरबंध नाई भार भुनियां ॥ सुनार लु
२ हार सिकलीगर हलवाई गर धीवर चमार ई छत्तीसौ है पौनिया ॥ ३४ ॥ इति छत्तीस पौन नाम
नाम ॥ ॥ अथ एक सौ अठतालीस प्रकृति सत्व स्थानक केती जा हैं तिसका विवरन
लिष्यते ॥ वस्तु छंद ॥ सत्त उदै हि रउरि मगुनथान तहां तिनि विसत्त मइ नव मठान व
तीस जानऊ ॥ दह मै पुनह कम निवार मै विसोलह वियानऊ ॥ बाऊत्तरि तेरह मै वि
हि तेरह चौदस ठावि ॥ एम पयदि अठताल सौं इमि सत्ता देवि ॥ छंद ॥ ७५ ॥ एक जानि देती
रितीनि रमिथ्या तिनि भास ऊ पंच जीति बट राषि सात तत जिआव विनास ऊ नौस
मारि दस धारि ग्यारह वदि बारह मा ऊ तेरह तारि चौदह चढंत पंदह विलगा वऊ

२०६

वरतफेर मानिकस्तंभेर वीचप्रभु दिनमनी हैं ॥ आवो दल आव औरकर निकाम
धाठौर कैलकैसेरूप नोपही अनूपबनी है ॥१२॥ बालक दसाकी मरजाद दसव
रषलौं वीसलौं बाढ नितीसलौं स्थविर ही है। चालीसलौं चतुराई पचासलौं धू
लताई साविलगुलोचनकी दृष्टि लहलही है। सत्तरिलौं श्रवन असीलौं पुलपन
नता नब्बैलगु इंद्रीनकी सकति जगही है ॥ सौलौं चितचेतनाक सो दसौतरलौं आउ
मानुषजनमताकी पूरी थिति कही है ॥१३॥ इति मर्यादावर्ननं ॥ ॥ अथ चौदहवि
द्याकेनाम ॥ छप्पय ॥ ब्रह्मज्ञान चातुरीवान विद्या ह्य वाहन। परम धरम उपदेस वा
क्यबल जल अवगाहन ॥ सिद्धरसायन करन साधि सपत स्वर गावन ॥ वर संगीत प्रव
न नृत्य वाजित्र बजावन ॥ व्याकरन पाठ मुष वेदधुनि। जोतिष चक्र विचार चित।
वैदक विधान परवीनता। इति विद्या दस चारि नित ॥१४॥ अथ छतीस पौन कथन

ग्रवावै । जो बिन्दु बिनु नकुंसक जीवा । कहि गोरष तीनौं घर षावा ॥१॥ जो घर त्यागि कहा
वै जोगी । घरवासी कहै कहै कुजोगी ॥ अंतर नाउ न परषै जोई ॥ गोरष बोलै मूरष
सोई ॥२॥ पढि गरंथ जो ग्यान वषानै । पवन साधि परमारथ मानै । परम तत को होइ
न मर्मी । कहै गोरष सो महा अधरमी ॥३॥ माया जोरि कहै मैं ठाकुर माया गई ए कहा
वै चाकर. माया त्यागि होइ जो दानी कहि गोरष तीनौं अग्यानी ॥४॥ कोवल पिंड क
हावै चेला । कविन पिंड सो वेलापेला ॥ जूंना पिंड कहावै बूढा । कहि गोरष ए तीनौं
मूढा ॥५॥ बिन्दु परचै जीव सकति बिचारै । ग्यान अगनि बिन्दु तन पर जारै । ग्यान मा
न बिन्दु रहै अबोला । कहै गुरू सो बाला भोला ॥६॥ सो निरवाचा कुनियां मुनियां । उल
ट वेध सौं उलटी उनिया ॥ सतगुर कहै सहज का धंधा । वाद विवाद करै सो अंधा
॥७॥ इति गोरषबचन ॥ ॥ अथ वैद्यलछनं ॥ चौपई ॥ करम रोग की परक न पावै ॥

सोलहनि मेटि सत्तरह मंजक अग्यारह को करै क्षय ॥ सममगति उनीस बीसहि विरचि
वानारसि आनंदमय ॥१७॥ इति का तातपर्य ॥ दोहा ॥ सुद्ध आतम पाइक निज । राग
दोष दोय बंध । तीनि सुद्ध ग्याना दिगुन । नागे विकथा धंध ॥१८॥ प्रवल पंच इंद्री कने
ट ॥ षट विधि जीव विनिकाइ । जुवा आदि सातौ विसन । आठ करम समुदाइ ॥१९॥ व्रह्मच
र्यकी वाड़ि नौ । दस मुनि धरम विचार । ग्यारह प्रतिमा श्रावकी । वारह भावन सार ॥२०॥
तेरह थानक जीव के । चौदह गुनथानाइ । पंद्र जोग सरीर के । सोलह भेद कषाइ ॥२१॥
सतरह विधि संजम सही ॥ जीवसमास उनीस ॥ दोष अगारह जानि सब । पुद्गल के गुन
वीस ॥२२॥ अथ सतमिथ्यात्वदसावननं ॥ जीव जागृत तथा जागृत । महाजागृत जथैव च ॥ जा
गृत स्वप्न तथा स्वप्ना स्वप्न जागृत सुषु सिषु ॥२३॥ इति प्रतापिक कवितानि ॥ ॥
अथ गोरषनाथ वचन लिष्यते ॥ चौपई ॥ जो भग देषि भामिनी मानैं । लिंग देषि जौं पुरुष

वाचिये। वेउपढहिकतेव एकवस्तुकेनांउहै। जैसैसोनाजेव॥११॥ तिनकोंउविद्या
जैलषै। सोविरंगीचाम॥ मेरनैंननदेषिये। घटघटअंतरराम॥१२॥ पढैहैगुपुतपद
है प्रगट। पदवाहिरपदमाहिं॥ जवलगुयहकछुकैरहा। तवलगयहकछूना
हिं॥१३॥ ब्रह्मग्यानआकासमैं। उडहिंसुमतिषगहोइ। जथासकतिउद्यमकरहिं
पारनपावैकोइ॥१४॥ गईवस्तुसोचैनहीं॥ आगमचिंतानाहिं। वरतमानवरतैसदा
सोग्यानीजगमाहिं॥१५॥ जोविलसैसुषसंपदा। गऐंताहिदुषहोइ। जोधरतीवहुत्रि
नवती। जरैअगिनिसोंसोइ॥१६॥ धनपायैंमनलहलहै। गयैंकरैचिंतसोक॥ जोज
नकरिकरिदृरिलषै। वरसचिकौसोंवोक॥१७॥ मायाछायाएकहै। घटैवढैछि
नमाहिं। इसकीसंगतिजेलगैं॥ तिनहिंकहीसुषनाहिं॥१८॥ जेमायासौंराचिकैं
मनमहिंराषैंवीज॥ कैतौतिनसौंघरभलै। कैजंगलकेरोज॥१९॥ इसमायाकेका

जथाजोग औषद फुरमावै ॥ ऊदै नाटिका की गति जानैं ॥ सो सुवैद मेरे मन मानैं ॥१॥
अथ जोतिषी ॥ जोर सरूप गरह पहिचानैं ॥ बारह रासि भावना मानैं ॥ सहज संक मन नसा
धै सोई ॥ जोतिषराइ ज्योतिषी सोई ॥२॥ वैस्नव के लछन ॥ दोहा ॥ तिलक तोष माल
विरति ॥ मति मुद्रा स्रुति छाप ॥ इन लछन सौं वैस्नव ॥ समुझै हरि परताप ॥३॥ जो ह
रि घट मैं हरि लषै ॥ हरि वानी हरि होइ ॥ हरि छिन हरि स्मिरन करै ॥ विमल वैस्नव
सोइ ॥४॥ मुसलमान के लछन ॥ जो मन मूसै आपनौं साहिब के रुष होइ ग्यान मुसल्ला
गहि टिकै मुसलमान है सोइ ॥५॥ अथ गवर के लछिन ॥ जो मन लावै भरम सौं ॥ पर
मपरापति षोइ ॥ जहां विवेक को वर गयौ ॥ गवर कहावै सोइ ॥६॥ एक रूप हिंदू तुरक
दूजी दसा न कोइ ॥ मन की दुविधा मानि करि ॥ भए एक सौं दोइ ॥७॥ दोऊ भूले भरम कै
करहिं वचन की टेक ॥ राम राम हिंदू कहै ॥ तुरक सलामालेक ॥८॥ इनके पुस्तक

परिधान पद। निद्रा मूत पुरीष।२। षट कर्म सबै करै॥ राज्ञाकरं क्षसरीष॥२७॥ उचित
वसन सु सुचित आसन। सलिल पान सुष सैन॥ वडीनीति लघुनीति सौं॥ होइ सब
निकौं चैन॥२८॥ अथ चौदह नेम लिष्यते॥ विगै दरव तंबोल पट। सीलं सचित नहान
दिसि आहार पानह पुहप॥ सैन विलेपन जान॥२९॥ सीलवंत मंगै जतन॥ अधि
पद गहै न संत। पिता जात न हनै पिता॥ सतीन मारै कंत॥३०॥ कामी वनमंछ न करै॥
दुष्ट गहै अधिकार। जार जात मारै पिता॥ असती हनै भरतार॥३१॥ ध्यानहीन क
रनी करै॥ यौं निज मन आमोद॥ ज्यौं छेली निज पुरीतैं। छुरी निकासै बोदि॥३२॥ रा
गरिद्धि सुष भोगवै। अैसे मूढ अज्ञान॥ मता सन्निपाती करै। जैसैं सरवत पान॥३३॥
जहां आपा तहां आपदा। जहां संसा तहां सोग॥ सद्गुरु विनु भाजहि नहीं। दोऊ जा
लिम रोग॥३४॥ जे आसा के दास ते पुरुष जगत के दास आसा दासी जासकी जग

रनै। जौरे कटव दिससम। ते मूरष क्यौं करि सकै। हरि भगतन की रीस ॥१८॥ लोभ
मूल सब पाप को। रुष को मूल सनेह। मूल अजीरन व्याधि को। मरन मूल यह देह
॥१९॥ जैसी मति तैसी दसा। तैसी गति तिहिं पाहिं। पसू मूरष नूपर वलैं। षद पंडितन
न माहिं ॥२०॥ सम्यक दृष्टी कुक्रिया। करै न अपने वस्य। पूरव करम उदोत कौ। रस
दे जाहिं अवस्य ॥२१॥ जो महंत है ग्यान विनु। फिरैं फुलाऐं गाल। आप मत्त और
नि करै। सो कलि माहिं कलाल ॥२२॥ ज्यौं पावक विनु नहिं सरै। करै जदपि कुरदाह
त्यौं अपराधी मित्र की। होइ सबनि कौं चाह ॥२३॥ करता जीव सदीव है। करै करम स्व
यमेव। पोतन आश्रम ह्वै रहा। ता मैं चेतनि देव ॥२४॥ केवल ग्यानी करम कौ। नहिं क
रता विनु प्रेम। देह अकृत्रिम ह्वै रहा। देव निरंजन एम ॥२५॥ भूमि जान धन धान गृह
भाजन कूप्य अपार। सेनासन चौपद दुपद। परिग्रह दस परकार ॥२६॥ षान पांन

परमानू अनंत गुन अनंत पर्याय सहित विराजमान यह एक संसारावस्थित जीवपिंड की अवस्था याही भांति अनंत जीव द्रव्य सपिंड रूप जाननां एक जीवद्रव्य अनंत अनंत पुदगल द्रव्य करि संजोगित माननें ताकौ न्यारो अन्य २ रूप जीव द्रव्य की परनति अन्य अन्य रूप पुदगल द्रव्य की परनति ताकौ न्यारो एक जीवद्रव्य जा भांति की अवस्था लियें नानाकार रूप परिनमैं सो भांति अन्य जीव सौं मिलै नाही वा की और भांति अनंतानंत रूप जीवद्रव्य अनंतानंत स्वरूप अवस्था लियें वर्तै है काहू जीवद्रव्य के परिनाम काहू जीवद्रव्य और सौं मिलै नाही इहि भांति एक पुदगल परिवांनू एक समय माहि जा भांति की अवस्था धरै सो अवस्था अन्य पुदगल परवानू द्रव्य सौं मिलै नाही तातैं पुदगल द्रव्य की भी अन्यता जाननी अब जीवद्रव्य पुदगल द्रव्य

९ एक छेत्रावगाही अनां काल के तामैं विसेष इतनौ जो जीवद्रव्य एक पुदगल परवा

तहां सहै तास ॥३५॥ संसारी उद्धारत जो। धरै रोक परद्वार। पापना रोकन आदरै
करै हद्दरव उद्धार ॥३६॥ कारन काज न जो लषै। भेद अनेद न जान। वस्तु रूप जानै
नहीं। सो मूरष परधान ॥३७॥ देव धर्म गुर ग्रंथ मत। रतन जगत मैं चारि। सो चेली जे प
रषिकैं। जू वे दीजै दारि ॥३८॥ अठारह दूषन रहित। देव सुगुरु निरगंथ। धरम द
यापूरन अपर। मत अविरोध गरंथ ॥३९॥ सब निकै वानी जैनकी। जैन धरै मन ठीक।
जैन धरम विनु जीवकी। जैन होइ तहकीक ॥४०॥ उपजै अरु संतुष्टता॥ द्रिग दुष्टता
न होइ॥ मिटै मोह मद दुष्टता॥ सहज पुष्टता होइ ॥४१॥ इति वैद्यलछिनादि सप्तात्तावि
क समाप्ता॥ ॥अथ वचनिका लिष्यते॥ एक जीव द्रव्य ताकै अनंत गुन। अनंत पर्या
य॥ एक एक गुनके असंख्यात प्रदेस॥ एक एक प्रदेसनि विषैं अनंत अनंत कर्म
वर्गना॥ एक एक कर्मवर्गना विषैं। अनंत अनंत पुद्गल परवानूं॥ एकर पुदगल

वती तिन्हं अवस्था कौ व्यवहार लिष्यते यावत् मिथ्यात्व अवस्था तावत्काल असुद्ध निश्चयात्मक द्रव्य असुद्ध व्यवहारी सम्यकदृष्टि होत मात्र चतुर्थ गुनस्थानक सौं बारसम गुनस्थानक पर्यंत मिश्र निश्चयात्मक द्रव्य मिश्र व्यवहारी केवलग्यानी सुद्ध निश्चयात्मक द्रव्य सुद्ध व्यवहारी अब निश्चै तौ द्रव्य कौ स्वरूप व्यवहार संसारावस्थित भाव ताकौ लिष्यते मिथ्यादृष्टी जीव आपनौ स्वरूप नाहीं जानतौ तातें पर स्वरूप विषैं मगन होइ करि कार्ज मानतु है ता कार्य करतौ संतौ संतौ असुद्ध व्यवहारी कहियै सम्यकदृष्टी अपनौ स्वरूप परोक्ष प्रमान करि अनुभवतु है पर सत्ता स्वरूप सौं आपनौ कार्य नाहीं मानतौ जोग द्वारे करि अपनौ स्वरूप कौ ध्यान विचार रूप क्रिया करतु है ता कार्य करतौ मिश्र व्यवहारी कहियै केवलग्यानी जथाष्यातचारित्र केवल करि सुद्धात्म स्वरूप कौ रमनसील है तातें सुद्ध व्यवहारी कहियै जोगारूढ अवस्था

नूं द्रव्य अनंतानंतचलाचलरूप आगमनगमनरूप अनंताकारपरिनमनरूप वंधमुक्ति
सक्तिलियैं वर्त्तै है अथ जीवद्रव्यकी अनंता अवस्था तामैं तीनि अवस्था मुख्य व्यापीए
अ क असुद्ध अवस्था एक सुद्धासुद्धस्वरूप मिश्र अवस्था एक सुद्ध अवस्था ए तीनि अवस्था ।
संसारी जीवद्रव्यकी संसारातीत सिद्ध अनवस्थितरूप कहियै अब तीनहू अवस्थाकौ
विचार एक असुद्ध निश्चयात्मक द्रव्य एक मिश्र निश्चयात्मक द्रव्य एक सुद्ध निश्चया
त्मक द्रव्य असुद्ध द्रव्यकौ सहकारी असुद्ध द्रव्य विवहार मिश्र द्रव्यकौ सहकारी मिश्र
विवहार सुद्ध द्रव्यकौ सहकारी सुद्ध व्यवहार अब निश्चै व्यवहारकौ विवरन लिष्यते
निश्चै तौ अभेदरूप द्रव्य व्यवहार द्रव्यके यथास्थित भाव परंतु विसेष इतनौ जु याव
त् काल संसारावस्था तावत्काल द्रव्य विवहार कहियै सिद्ध व्यवहारातीत कहियै
यातैं जु संसार व्यवहार एकरूप दिषायौ संसारी सो व्यवहारी व्यवहारी सो संसारी अ

आगमरूप कर्मपद्धति अध्यात्मस्वरूप सुद्धचेतनापद्धति ताकौ ब्यौरौ कर्मपद्धति पौद्गलिकद्रव्यरूप अथवा भावरूप द्रव्यरूप पुद्गलपरिनाम भावरूप पुद्गलाकार आत्माकी असुद्धपरनतिरूप परिनाम ते दोऊ परिनाम आगमरूप थापे॥ अब सुद्धचेतनापद्धति॥ सुद्धात्मपरिनाम सोभी द्रव्यरूप अथवा भावरूप द्रव्यरूप तौ जीवत्वपरिनाम भावरूप ग्यान दर्सन सुख वीर्य आदि अनंतगुनपरिनाम ते दोऊ परिनाम अध्यात्मरूप जाननैं अगम अध्यातम दुहूं पद्धति विषैं अनंतता माननी अनंतता कहा ताकौ विचार अनंतता कौ स्वरूप दृष्टांत करि दिखाइयतु है जैसैं वटवृक्ष कौ वीर्य एक हाथ विषैं लीजै ताकौ विचार दीर्घदृष्टि सौं कीजै तौ वा वट के वीर्य वीर्य विषै एक वट कौ वृक्ष है सो वृक्ष जैसो कछु भाविकाल होनहार है तैसो विस्तार लियैं विद्यमान वामैं वास्तवरूप बर्तै है अनेक साखा प्रसाखा पत्र पुष्प फल संयुक्त है फल२ विषैं अनेक वीर्य होहिं इस भांति की अवस्था एक व

विद्यमान है तातैं व्यवहारी नाम कहिये सुद्धव्यवहारी की सरदह त्रयोदसम गुनस्थान
कसौं लेइकरि चतुर्दसम गुनस्थानक पर्यंत जाननी असिद्धत्वपरिनमनत्वात् व्यवहार
॥१॥ अव तीनि हूं व्यवहार कौ स्वरूप कथन॥ असुद्ध व्यवहार सुभासुभाचार रूप सुद्धासु
द्ध व्यवहार सुभोपयोग मिश्रित स्वस्वरूपाचरन रूप सुद्ध व्यवहार सुद्ध स्वरूपाचरन रूप॥
परंतु विशेष इतनौं जु कोई कहै कि सुद्ध स्वरूपाचरन तौ सिद्ध हू विषै छतो है उहां भी व्य
वहार संग्या कहिये सो यौं नाही संसारावस्था पर्यंत व्यवहार कहिये संसारावस्था के मिट
ते व्यवहार भी मिटा कहिये इहां यथापनो कीनी है तातैं सिद्ध व्यवहारातीत कहिये॥ इति
। व्यवहार विचार समाप्त॥ ॥अथ आगम अध्यातम कौ स्वरूप कथ्यते॥ आगम वस्तु कौ जु भा
व सो आगम कहिये आत्मा कौ जु अधिकार सो अध्यातम कहिये आगम तथा अध्यातम स्व
रूप भाव आत्मद्रव्य के जाननै ते दोऊ भाव संसारावस्था विषै त्रिकालवर्ती माननै ताकौ ब्यौरो

मात्र अवधिग्यानी मनपर्येग्यानी ए तीनौं यथावस्थित ग्यानप्रवान न्यूनाधिकरूप जानने मिथ्या
दिष्टी जीव न आगमी न अध्यात्मी काहे ते याते जु कथन मात्र तौ ग्रंथपाठ के बल करि आ
गम अध्यात्म को स्वरूप उपदेस मात्र कहे कहे परंतु आगम अध्यात्म को स्वरूप सम्यक प्रका
र जानै नहीं। ताते मूढ जीव न आगमी न अध्यात्मी विनिर्वेदकत्वात् अब मूढ जीव तु ग्यानी
जीव कौ विसेषपनौ और भी सुनौ ग्याता तौ मोक्षमार्ग साधि जानै मूढ मोक्षमार्ग साधि
न जानै सो काहे तें याते सुनौ मूढ जीव आगमपद्धति को व्यवहार कहै अध्यातम
पद्धति को निश्चै कहै ताते आगम अंग एकांतपनैं साधि कैं मोक्षमार्ग दिषावै अध्यात्म
अंग को व्यवहार न जानै यह मूढ दिष्टि को स्वभाव वाहि याही भांति सूझै काहे तें याते
जु आगम अंग बाह्य क्रियारूप प्रत्यक्ष प्रमान है ताको स्वरूप साधिवौ सुगम ता बाह्य क्रि
या करतौ संतौ आपु कौं मूढ जीव मोक्ष को अधिकारी मानै अंतर्गर्भित जो अध्यात्मरू

ट के वीर्य विषैं विचारियैनी और सूक्ष्म द्रिष्टि दीजै तौ जे जे वटवृक्ष विषैं वीर्य होइ ते ते अंतरगर्भित वटवृक्ष संयुक्त हैं याही भांति एक वट विषैं अनेक अनेकौं एक २ वीर्य विषैं एक २ वट ताकौ विचार कीजे तौ भाविनैं प्रवान वटवृक्षनि की मर्यादा पाईयै न वीर्यनि की मर्यादा पाईयै याही भांति अनंतता कौ स्वरूप जानैं तौ ता अनंतता के स्वरूप कौ केवलग्यानी प्रत्यक्ष भी अनंत ही देषै जानैं कहै अनंत कौं और अंत करै हीन ही जो ग्यान विषैं भासै तातैं अनंतता अनंत ही रूप प्रतिभासै याभांति आगम अध्यातम की अनंतता जाननी तामैं विसेष इतनौं जु अध्यात्म कौ स्वरूप अनंत आगम कौ स्वरूप अनंतानंत रूप याथापना प्रवान करि अध्यात्म एक द्रव्याश्रित आगम अनंतानंत पुद्गलद्रव्याश्रित इन दुहुंकौ स्वरूप सर्वथा प्रकार तौ केवलग्यानगोचर अंसमात्र मतिग्यान ग्राह्य तातैं सर्वथा प्रकार आगमी अध्यात्मी तौ केवली अंसमात्र मतिग्यानी ग्यानादि स

नाहिं ताहि नैं जानत किंतू कहा कहतु है अथवा चुप करै है बोलै नाही गहलरूप सोनी
ती सरौ पुरष विभ्रम वालो वा क्यौंकि यह तौ प्र॰ त्यक्ष प्रवान रूपौ है याकौ सीप कहै
मेरी द्रिष्टि विषै तौ रूपौ सूझतु है तातै सर्वथा प्रकार यह रूपौ है सो तीनौं पुरुष तौ वानी
ताकौ स्वरूप जान्यौ नाहीं तातै तीनौं मिथ्यावादी अब चौथो पुरुष ४ वोल्यौ क्यौंकि यह
तौ प्रत्यक्ष प्रमान सीप कौ षंड है यामैं कहा धोषौ सीप सीप सीप निरधार सीप याकैं
जु कोई और वस्तु कहै है सो प्रत्यक्ष प्रनाम भ्रामक अथवा अंध तैसैं सम्यकदृष्टी
कौ स्वपर स्वरूप विषै न संसै न विमोह न विविभ्रम यथार्थ द्रष्टि है तातै सम्यकदृष्टी
जीव अंतरद्रष्टि करि मोक्षपद्धति साधि जानैं वाह्यभाव वाह्य निमित्त रूप मानैं सो
निमित्त नाना रूप परा कल्पना नाहीं अंतरद्रष्टि के प्रमान मोक्ष मार्ग साधै सम्यकग्यान
स्वरूपावरन की कनिका जगाई मोक्षमार्ग साधै मोक्ष मार्ग कौ साधिबौ यहै व्यवहार

पक्रिया सो अंतरदृष्टि ग्राह्य है सो क्रिया मूढ न जानैं अंतरदृष्टि के अभावसौं अंतरक्रिया दृष्टि गोचर आवै नाही तातैं मिथ्यादृष्टी जीव मोक्षमार्ग साधिवेकौं असमर्थः ॥१॥ **अथ सम्यग्दृष्टि कौ विचार कहै॥** सम्यक्दृष्टि कहा सो कहै संसै विमोह विभ्रम ए तीनि भाव जामैं नाही सो सम्यक्दृष्टि संसै विमोह विभ्रम कहा ताकौ स्वरूप दृष्टांत करि दिषाइयतु है सो कहै जैसैं पुरष च्यारि काहू एक स्थानक विषैं ठाढे तिन च्यारिहु के आगैं एक सीप कौ षंड किनही और पुरषनें आनि दिषायौ प्रत्येक प्रत्येक प्रश्न कीनौ कि यह कहा है सीप है कि रूपौ है प्रथम ही एक पुरष संसैवालौ बोल्यौ कि कछु सुधि नाहिनैं परति किधौं सीप है किधौं रूपौ है मेरी दृष्टि विषैं याकौ निरधार होतु नाहिनैं दूजौ पुरष विमोह वालौ बोल्यौ कि कछु मोहि यह सुधि नाही कि तुम सीप कौनसौ कहतु हौ रूपौ कौनसौ कहतु है मेरी दृष्टि विषैं कछु आवतु नाही तातैं हम

ध्यान हेयगेयउपादेयरूप सक्तिध्यानताकी होइ ज्यौं ज्यौं हेयगेयउपादेयरूप सक्ति वधै
मान होइ त्यौं त्यौं गुनस्थानककी वढवारि कही है गुनस्थानक प्रमान ध्यान गुनस्था
नक प्रवान क्रिया तामैं विसेष जानौं जु एक गुनस्थानकवर्त्ती अनेक जीव होहिं तौ अने
करूपकौ ध्यान कहियै अनेकरूपकी क्रिया कहियै भिन्न २ सत्ताके प्रवान करि एक
ता मिलै नाहीं एक २ जीवद्रव्य विषै अन्य २ रूप उदीक भाव होहिं तिन्ह उदीक भावानु
सारी ध्यानकी अन्य अन्यता जाननी परंतु विसेष जानौं जु कोऊ जातिकौ ध्यान ऐसो नहो
इ उपरसत्तावलंबनसीली होइ करि मोक्षमार्ग साक्षात कहै करै तौ अवस्थाप्रवान
परसत्तावलंबक है ध्यानकौं परसत्तावलंबी परमार्थतः न कहै जो ध्यान होइ सो स्वसत्ता
वलंबनसीली होइ ताकौ नाउ ध्यान ता ध्यानकी सहकारभूत तानिमत्तरूप नानाप्रकारके
उदीक भाव होहिं तिन्हकी उदीक भावनिकौ ध्यानातमा सरीर न कर्त्ता न भोक्ता न अवलंबी

१९५

साद्धड थे सक्रियरूपता निश्चै ऐसें निश्चै व्यवहार कौ सरूप सम्यक दिष्टी जानें मूढ
जीव न जानें न मानें मूढ जीव बंधपद्धति कौं साधि करि मोक्ष कहै सो बात ग्याता मा
नैं नहीं काहेतें यातें जु बंध के साधतें बंध सधै मोक्ष सधै नाहीं ग्याता जब कदाचित बं
धपद्धति विचारै तब जानें कि या पद्धति सौं मेरौ द्रव्य अनादि कौ बंधरूप चल्यौ आयौ है अ
ब या पद्धति सौं मोहि तोरिबै है तौ या पद्धति कौ राग पूर्वक ज्यौं नारकहीं करौं छनमा
त्र भी बंधपद्धति विषैं मगन होइ नाहीं सो ग्याता आपनौं स्वरूप विचारै अनुभवै ध्यावै
गावै श्रवन करै नौधाभक्ति रूप क्रिया आपनैं सुद्ध स्वरूप के सन्मुख होइ करि करै य
ह ग्याता कौ आचार याही कौ नाउ मिश्र व्यवहार ॥४॥ अब हेय ग्येय उपादेय रूप ग्याता कौ
विचार लिष्यते ॥ हेय त्यागरूप तौ आपनें द्रव्य की असुद्धता ग्येय विचाररूप अन्य षट् द्रव्य
कौ स्वरूप उपादेय आचरन रूप आपनें द्रव्य की सुद्धता ताकौ ब्यौरौ गुनस्थान क्रम

निर्नय लिख्यते॥ अथ सही कोई पूछतु है कि निमित्त कहा उपादान कहा ताको ब्यौरो निमित्त तो संजोग कारन उपादान वस्तु की सहज सक्ति ताको ब्यौरो द्रव्यार्थिक निमित्त उपादान गुन भेद कल्पना पर्यायार्थिक निमित्त उपादान परजोग कल्पना ताकी चौभंगी साधी प्रथम ही गुन भेद कल्पना ताकी चौभंगी कौ विस्तार कहौ सु कैसें ऐसें सुनो जीव द्रव्य ताके अनंत गुन सब गुन असहाय स्वाधीन सदा काल तामैं दोइ गुन प्रधान मुख्य थापे तापर चौभंगी कौ विचार एक तौ जीव कौ ग्यान गुन दूसरा चारित्र गुन ए दोनूं गुन सुद्ध रूप भी जानने असुद्ध रूप भी जानने जथा जोग्य स्थानक मानने ताकौ ब्यौरो इन दुहू की गति न्यारी सक्ति न्यारी न्यारी जाति न्यारी न्यारी न्यारी सत्ता न्यारी २ ताकौ ब्यौरो ग्यान गुन की तौ ग्यान अग्यान रूप गति स्वपर प्रकासक सक्ति ग्यान रूप तथा मिथ्यात्व रूप जाति द्रव्य प्रमान सत्ता परंतु एक विसेष इतनौ जु ग्यान रूप जाति कौ नास नाहीं मिथ्यात रूप जाति कौ नास सम्यक दर्सन उत्पत्ति पर्यंत यह तौ ग्यान गुन कौ निर्नय भ

२१६

तातैं कोऊ अैसा कहै कि या भांति का उदीक भाव होहि सर्वथा तौ फल नानौं गुनःस्थानक कहियै सो ऊंधौ तिनि इनकौ स्वरूप सर्वथा प्रकार जान्यौ नाहीं काहेतैं यातैं जु और गुनस्थानकनि की कौन बात चलावै केवली कैं भी उदीक भावनि की नानत्वता जाननी। केवली कैं उदीक भाव एक सो होहि नाहीं काहू केवली कौं दंडकपाटरूप क्रिया उदै होइ काहू केवली कौं नाहीं तौ केवल विषै भी उदै की नानत्वता और गुनस्थानक की कौन बात तातैं उदीक भावनि कै भरोसैं ग्यान नहीं ग्यान स्वसक्ति प्रवान है स्वपर प्रकासक ग्यान की सक्ति ग्यायक प्रवान ग्यान स्वरूपाचरन रूप चारित्र जथा अनुभव प्रमान यह ग्याता कौ सामर्थ्यपनौ। इनि बातनि कौ ब्यौरो कहा ताईं कहीयै वचनातीत इंद्रियातीत मतिग्यानातीत तातैं यह विचार बहुत कहां लिखहि जो ग्याता होहिगो सो थोरौ ही लिख्यौ बहुत करि समुझैगो समुझैगौ ताहि कल्यानकारी है भाग्यप्रमान॥ इति परमार्थवचनिका॥ १॥ अथ निमित्तकारन उपादानकारन दुहूंकौ भेद

सचारित्र याभांति अमंद दसा जीवकी सदाकाल अनादिरूप ताकौ थोरौ ग्यानरूप ग्यान की शुद्धता कहिये विशुद्धरूप चारित्र की शुद्धता कहिये अगानरूप ग्यान की अशुद्धता कहिये संकलेसरूप चारित्र की अशुद्धता कहिये अब ताकौ विचार करनौं मिथ्यात अवस्था विषैं काहू समैं जीवकौ ग्यानगुन जानरूप है तब कछु जानतु है ऐसौ जानतु है कि लक्ष्मी पुत्र कलत्र इत्यादिक मोसौं न्यारे हैं प्रतक्ष प्रमान हौं मरौंगो ए यह ठाई रहैंगे अथवा ए जाहिंगे हौं रहौंगो कोई काल तौ इनसौं मोहि एक दिन वियोग है ऐसौ जानपनौ मिथ्यादृष्टि कौ होतु है सो तौ शुद्धता कहिये परंतु सम्यक शुद्धता नाहीं गर्भित शुद्धता जब वस्तु कौ स्वरूप जानैं तब सम्यक शुद्धता सौं ग्रंथिभेद बिना होइ नाहीं परंतु गर्भित शुद्धता सौं भी अकामनिर्जरा है वाही जीवकौं काहू समैं ग्यानगुन अजानरूप है गहलरूपता करिकैं वलबंध है याही भांति मिथ्यात अवस्था विषैं काहू समैं चारित्रगुन विशुद्धरूप है तातैं चारित्रावरन करम मंता मंद

यो अब चारित्रगुनकौ ब्यौरौ संक्लेस विसुद्ध रूप गति थिरता अथिरता सक्ति मंद तीव्र स्वरूप जाति द्रव्य प्रमान सत्ता परंतु एक विसेष जु मंदता की स्थिति चतुर्दसम गुनस्थानक पर्यंत तीव्रता की स्थिति पंचम गुनस्थानक पर्यंत यह तौ कहे है कौ गुनभेद न्यारौ न्यारौ कियो अब इनकौ व्यवस्थान ग्यान चारित्र के आधीन न चारित्र ग्यान के आधीन दोऊ असहाय रूप यह तौ मर्यादा बंधी॥ अब तौ चौभंगी कौ विचार लिख्यते॥ ग्यान गुन निमित्त रूप चारित्र गुन उपादान रूप ताकौ ब्यौरौ एक तौ असुद्ध निमित्त असुद्ध उपादान दूसरौ असुद्ध निमित्त सुद्ध उपादान तीसरौ सुद्ध निमित्त असुद्ध उपादान चौथौ सुद्ध निमित्त सुद्ध उपादान ताकौ ब्यौरौ सूक्षम द्रिष्टि करि एक समय की अवस्था द्रव्य की ले समुच्चय रूप मिथ्यात सम्यक्त की बात नाहीं चलावनी काहू समै जीव की अवस्था या भांति की होति है जु जान रूप ग्यान विसुद्ध चारित्र काहू समै अजान ग्यान विसुद्ध चारित्र काहू समै जान ग्यान संकलेस चारित्र काहू समै अजान ग्यान संकले

रु विसुद्धता चारित्रकी है क्रमो मोक्षमार्ग अनुसारी है तातैं दोउ विषैं सुद्धता माननी परं
तु विसेष इतनौं जु गर्भित सुद्धता प्रगट सुद्धता नांही इन दुहूं गुनकी गर्भित सुद्धता
जवताई ग्रंथभेद न होइ तवताई मोक्षमार्ग न सधै परंतु ऊर्द्धताकौं करहि अवस्य करहि
। दोऊ गुनकी गर्भित सुद्धता जब ग्रंथभेद होइ तब इन दुहूकी सिषा फूटै तब दोऊ गुन धा
रा प्रवाहरूप मोक्षमार्गकौं चलहि ग्यानगुनकी सुद्धताकरि ग्यानगुन निर्मल होइ चा-
रित्रगुनकी सुद्धताकरि चारित्रगुन निर्मल होइ वह केवलग्यानकौ अंकूर वह जथाख्या
कि त चारित्रकौ अंकूर ॥३॥ इहां कोऊ तरक करता कहतु है॥ तुम कह्यौ जु ग्यानकौ जानपनौ अरु
चारित्रकी विसुद्धता दोऊ सौं निर्जरा है सु ग्यानके जानपने सौं निर्जरा यह हम मानी चारित्रकी विसु
द्धता सौं निर्जरा कैसैं यह हम नाहीं समझी ताकौ समाधान किसु निमैया विसुद्धता थिरता
रूप परनाम कहियै सौ थिरता जथाख्यातकौ अंस है तातैं विसुद्धता मैं सुद्धता आई

ताकी निर्जरा है काहू समै चारित्रगुनक्लेसरूप है तातैं केवल तीव्र बंध है या भांति करि मिथ्यात अवस्था विषै जासमै ज्ञानरूप ध्यान है अरु विसुद्धरूप चारित्र है तासमैं निर्जरा है जामैं अज्ञानरूप ध्यान है संक्लेसरूप चारित्र है तासमैं बंध है तामैं विसेष इतनो जु अल्प निर्जरा बहुत बंध तातैं मिथ्यात अवस्था विषै केवल बंध कह्यौ अल्प की अपेक्षा जैसैं काहू पुरषकौ नफौ थोरौ टोटौ बहुत सो पुरुष टोटाउ ही कहिये परंतु बंध निर्जरा बिना काहू अवस्था विषैं नाहीं दृष्टांत ऐसो जु जो विसुद्धता करि निर्जरा न होती तो एकेंद्री जीव निगोद अवस्थासौं व्यवहार रासिकौं न केवल आवतौ उहां तो ध्यान गुन अज्ञानरूप गहलरूप है अबुद्धरूप है तातैं ध्यान गुनकौ तौ बल नाहीं विसुद्धरूप चारित्र के बल करि जीव व्यवहार रासि चढ़तु है जीव द्रव्य विषैं कषाइकी मंदता होति है ताकरि निर्जरा होति है वाही मंदता प्रवान सुद्धता जाननी ॥ अब और विस्तार कनौ ॥ ज्ञानपनौं ध्यानकौ अ

स्वभाव करि वर्द्धमान रूप भई तब पूर्न जथाख्यात प्रगट कह्यौ विसुद्धता कौं ऊर्द्धता बढ़ै वाकी सुद्धता ॥१॥ और सुनि ॥ जहां मोक्षमार्ग साध्यौ तहां कह्यौ कि सम्यक्दर्सन ग्यान चारित्राणि मोक्षमार्गः और यौं भी कह्यौ ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः ॥ ताकौ विचार ॥ चतुर्थ गुनस्थानक सौं लेकरि चतुर्दसम गुनस्थानक पर्यंत मोक्षमार्ग कह्यौ। ताकौ ब्यौरौ सम्यक्रूप ग्यान धारा विसुद्धरूप चारित्र धारा दोऊ धारा मोक्ष कौं चली सो ग्यान सौं ग्यान की सुद्धता क्रिया सौं क्रिया की सुद्धता जो विसुद्धता है तो जथाख्यात रूप हो। इति है जो विसुद्धता मैं सुद्धता न होती तो ग्यान गुन सुद्ध होतो क्रिया असुद्ध रहती केवली विषै सो यौं तौ नहीं वा मैं सुद्धता ही ता करि सुद्धता भई इहां कोई कहैगो कि ग्यान की सुद्धता करि क्रिया सुद्ध भै सो यौं नाहीं कोई गुन काहू गुन के सारे नहीं सब असहायरूप है और भी सुनि जो क्रिया पद्धति सर्वथा असुद्ध होती तो असुद्धता की एती उक्ति नाही

मीनहूं उद्दंक नावारौ बोल्यो कि तुम विशुद्धतासौं निर्जरा कही हम कहत है कि विशुद्ध-
तासौं निर्जरा नाहीं शुभबंध है ताको समाधान कि शुभनि भैया यह तौ तू च साचौ विशुद्धता-
सौं शुभबंध संक्लेस तासौं अशुभबंध यह तौ हम मानी परंतु और भेद यामैं है सो शुभनि अशु-
भप्रकृति अधोगतिकौ परिनमन है शुभप्रकृति ऊर्द्धगतिकौ परिनमन है तातै अधोरूप सं-
सार ऊर्द्धरूप मोक्ष यानय करि शुद्धतामैं आई मानि मानि यामैं धोषौ नाहिं है विशुद्धता
सदाकाल मोक्षकौ कारन है परंतु ग्रंथभेद बिना विशुद्धताकौ जोर चलता नाहिं नैं जैसैं कोऊ
तारू कुसल नदीमैं डूबक मारे फिरि जब उठै तब दैवसंजोग सौ कोऊ टेरता कुसल कै
नौका आइ जाइ तौ जद्यपि तारू कुसल है तथापि कौंन भांति निकलै वाकौ जोर चलै
नाहीं वकू तेरा कलवल करौ पै कछू वसाइ नाही तेरा विशुद्धताकी उर्द्धता जानती तावा
सौं गर्भित शुद्धता कही वहै गर्भित शुद्धता ग्रंथिभेद भये मोक्षमार्गकौ चली अपने

जानैथा एकही। उपादान सौं काज। थकै सहाई पौन विनु। पानी मांहि जिहाज॥२॥ अब इन
कौ उत्तर कहै है॥ ग्यान नैन किरिया चरन। दोऊ सिवमग धार। उपादान निहचै जहां तहां
निमित्त व्यौहार॥३॥ उपादान निजगुन जहां॥ तहां निमित्त पर होइ॥ भेदग्यान परवान विधि
विरला बूझै कोइ॥४॥ उपादान बल जहां तहां। नहि निमित्त कौ दाउ। एक चक्र सौं रथ चलै
रवि कौ यहै सुभाउ॥५॥ सधै वस्तु असहाय जहां॥ तहां निमित्त है कौन। ज्यौं जहाज पर
वाह मैं। तिरै सहज विनु पौन॥६॥ उपादान विधि निरवचन। है निमित्त उपदेस। वसै जु जैसे
देस मैं। करै सु तैसो भेस॥७॥ बनारसीकृत॥१॥ राग भैरौं॥ या चेतन की सब सुधि गई। व्याप
त मोह विकलता भई। है जड़रूप अपावन देह। तासौं राषै परम सनेह॥१॥या॥ आइ मिले ज
न स्वारथ बंध। तिनहि कुटंब कहै जा चंध॥ आपु अकेला जनमैं मरै। सकल लोक की ममता
धरै॥२॥या॥ होत विभूति दान के दियैं। यह परपंच विचारै हियैं॥ भरमत फिरै न पावै ठौर॥

१२०॥

गुमोक्षमार्गकौचलै तातैविसुद्धतामैंजथाख्यातकौअसह्या तातैवदेश्रैसंक्रमनक्रमनपूरन
भयौ रागैपाउटंकनावारै तैविसुद्धतामैंसुद्धता मानीकिनाहिं जौतौनाहींमानीतौत
रौइम्पयाहीजातिकौपारनयौहै हमकहाकरहिं जौमानीतौस्याबासि यहतौद्रव्यार्थिक
कीचौभंगीसंपूरनभई निमित्तउपादानसुद्धअसुद्धरूपविचार॥ अथपर्यायार्थिककीचौ
भंगीकथनौ॥१॥ एकतौवक्ताअग्यानी श्रोताभीअग्यानी सोतौनिमित्तभीअसुद्धउपादान
भीअसुद्ध दूसरौवक्ताअग्यानीश्रोताग्यानीसोतौनिमित्तअसुद्धउपादानसुद्ध तीसरौवक्ता
ग्यानीश्रोताअग्यानीसुतौनिमित्तसुद्धउपादानअसुद्ध चौथौवक्ताग्यानीश्रोताभीग्यानी
दो सोतौनिमित्तभीसुद्धउपादानभीसुद्ध यहपर्यायार्थिककीचौभंगीसाधी निमित्तउपादानसु
द्धअसुद्धरूपविचार॥ इतिचौभंगीरूपकारनवचनिका॥ अथनिमित्तउपादानकादोहा॥ गुरु
उपदेसनिमित्तविनु उपादानवलहीन। ज्यौंनर दूजेपाउविनु चालवेकौंआधीन॥१॥ हौं

क

पूरन हास धरै स पूरन। निविचार मै तैसा। दरसवित सदा अवै सुषसागर। भावित अनप
ति वैसा॥४॥ सा धौ॥ नाहीं कहत होइ नाहीं सा। है कोहि यैतौ हैसा॥ एक अनैं रूप कै वरता॥
कहैं कहालौ कैसा॥५॥ सा धौ॥ वद अपार ज्यौं रतन अमोलिक। वुधि विवेक ज्यौं पैसा॥ कल
पित वचन विलास वनारसि। वह जै सा का तैसा॥६॥ सा धौ॥ ३॥ राग विलावल॥ दोहा॥ जि
न प्रतिमा जिनसार षी। कही जिनागम मांहि। पै जाकूं दूषन लगै वंदनीक सो नाहिं॥१॥ मेटी
मुद्रा अवधि सौं। कुमती कियौ कुदेव। विघन जानि जिनविंब की। तजै समकती सेव॥
॥२॥ इहि विधि देव अदेव की। मुद्रा लषि लीजै। मुनि लछन पहिचानि कै। पद पूजा की
जै॥३॥ पट भूषन पहिरैं रहै। प्रतिमा जो कोई॥ सो गृहस्थ मायामयी। मुनिराज न
होई॥४॥ जाकै त्रिय संगति नहीं। नहिं वसन न भूषन॥ सो सबी है सरवग्य की। निरमल निर
दूषन॥५॥ वाम अंग जाकै त्रिया। अथवा अरधंगी। सो तो प्रगट कुदेव है। विषया रस रंगी॥

गनै मूढ औरकी और ॥३॥ या०॥ वंधकु हेतु कहै करै जु षेद। जानैं नहीं मोष को भेद। मिटै स
हज संसार निवास॥ तव सुष होइ वनारसिदास॥४॥ या०॥१॥ राग रामकली॥ चेतन तूं तिहूं
काल अकेला। नंदी नाव संजोग मिलै। ज्यौं॥ त्यौं कुटंब का मेला॥१॥ टे०॥ यह संसार असार रू
प सब। ज्यौं पट पेषन षेला। सुष संपति सरीर जल बुदबुद। विनसत नाहीं वेला॥२॥ चेतन नि०॥ मो
ह मगन आतम गुन भूलत। परी तोहि गलजेला। मैं मैं करत चहूं गति डोलत। बोलत जैसैं छे
ला॥३॥ चे०॥ कहत वनारसि मिथ्यामत तजि होइ सुगुरु का चेला तासु वचन परतीति आ
नु जिय होइ सहज सुरझेला॥४॥ चे०॥ २॥ राग रामकली॥ मगन होय आराधौ साधौ॥ अलष
पुरुष प्रभु ऐसा॥ जहां २ जिस रस सौं राचै। तहां २ तिस मैं तैसा॥१॥ सा०॥ सहज प्रवान प्रवा
न रूप मैं। संसै मैं संसैसा॥ धरै चपलता चपल कहावै। लै विधान मैं लैसा॥२॥ सा०॥ उद्यम करत
उद्यमी कहिये। उदै सरूप उदैसा। व्यवहारी व्यवहार करम मैं॥ निहचै मैं निहचैसा॥३॥ सा०॥

ज्यौं मृग नाभि सुवास कौं । ढूंढत वन दौरै ॥ त्यौं तुझ मैं तेरो धनी ॥ तू षोजत औरै ॥७॥ ऐ०॥
करता भरता भोगता घट सौं घट माही ॥ ग्यान विना सदगुरु विना तू समुझत नाही ॥८॥ ऐ
सैं०॥ इति पदं ॥ ५ ॥ राग विलावल ॥ ऐसैं यौं प्रभु पाइये ॥ सुनि पंडित ग्यानी ॥ यौं मथि
माषन काढियै ॥ दधि मेलि मथानी ॥१॥ ऐ०॥ ज्यौं रस लीन रसाइनी ॥ रस रीति आराधै ॥ त्यौं
घट मैं परमारथी ॥ परमारथ साधै ॥२॥ ऐ०॥ जैसैं वैद विथा लषै ॥ गुन दोष विचारै । तैसैं पं
डित पिंड की । रचना निरवारै ॥३॥ ऐ०॥ पिंड सरूप अचेत है ॥ प्रभु रूप न कोई ॥ जानै मानै
र थिर है । घट व्यापक सोई ॥४॥ ऐ०॥ चेतन लछन है धनी ॥ जड़ लछन काया । चंचल लष
न चिन्ह है ॥ भ्रम लछन माया ॥५॥ ऐ०॥ लछन भेद विलेछि कैं । सु विचछन वेदै । सत्त स
रूप हियैं धरै । भ्रम रूप उछेदै ॥६॥ ऐ०॥ ज्यौं रज सोधत न्यारिया । धन सौं मन कीलै । त्यौं
मुनि कर्म विपाक मैं । अपनै रस झीलै ॥७॥ ऐ०॥ आपु लषै जब आपु कौं । दुविधा पद

॥६॥ निरदुंदी निरपरगृही । जोगासनध्यानी । सो है मूरति सिद्धकी । कैवलग्यानी ॥७॥ जो ग्रवं
मत्रायुध लियैं । कर चक्र धरवाह ॥ प्रगट विरोधी देवता मारै सौ काह ॥८॥ जो न कछू क
रनी करै । नहिं आयुध पानी । सो प्रतिमा भगवंतकी । निरवैर निसानी ॥९॥ जे पसु रूपी वस्त
मुखी पसु वाहनधारी ते सब असुर अवंदनी निरदै संसारी ॥१०॥ ४ ॥ राग विलाव
ल ॥ ऐसैं क्यौं प्रभु पाइयै । सुनु मूरख प्रानी । जैसैं निरखि मरीचिका । मृग मानत पानी ॥१॥ ज्यौं ऐसैं॥
पकवान चुरैलकौ । विषयारस त्यौं ही । ताके लालच तू फिरै । भ्रम भूलत यौं ही ॥२॥ ऐसैं॥ दे
ह अपावन खेहकी अपनी करि मानी भाषा मनसा करमकी तै तैं निज जानी ॥३॥ ऐसैं॥
नाउ कहावति लोककी सो ताहि न भूलौ जाति जगतकी कलपना तामैं तू फूलौ ॥४॥ ऐसैं॥
माटी भूमि पहारकी ताहि संपति सूझै प्रगट पहेली मोहकी तू तऊ न बूझै ॥५॥ ऐसैं॥ तैं क
बहूं निज गुन विषै । निज दिष्टि न दीन । पराधीन परवस्त सौं । अपनाइति कीनी ॥६॥ ऐसैं॥

कीहानि ॥३॥ रमन० ॥ नारकिनके पाइ सेवत मरु विमानन संक ॥४॥ ध्यानकरि बूझत वना
रसि को नृपति कौरक ॥३॥ रमन० ॥ इति गीतं ॥ ८ ॥ राग भैरवी ॥ वालम तुहं तन चितवन । गा
गरि फूटि । अंबरा गहै उफहराइ । सरम गई बूटि ॥१॥ उतिकर ज्ञानै सजनी रजनी घोर । अघर
करके उन जागे । चकाहि सि चौर ॥२॥ पियसुधि पा वत वनमह । पैसिउ पेलि । ज्ञान उराज मेण
रिया । भैउ अकेली ॥३॥ इति गीतं ॥ ९ ॥ राग बलनावर बाधवा ॥ संवरो मारद सामिनि औगु
र भान कछु बलना परमारथ करो बखान काइ नगरीया भीतर चेतन भूप करम लेप लप
टावल जोतिसरूप ॥१॥ दरसन ध्यान चरनमय चेतन सोई ॥ पीपर मरव सचीकन कंचन होइ
चेतन चित अवधार लगुर उपदेस । किछु एक जागलि जोति ध्यान गुन लेस ॥ अथिर समस व
है धिसि बिन वैराग । चेतनि आपुहि आपु कु जावै लाग ॥४॥ चेतन तुहं जनि सोवहु नींद
अघोर । चारि चोर घर मूसहि सरवस तोर । चेतन तुहं वन साव ज काल किरात । निसदिन

भैटै। सेवग साहिब एक है। तब को कहि भैटै॥५॥श्री॥ इति गीतं॥ ६ ॥ राग बिलावल॥ तू
आतम गुन जानि रे जानि॥ साधु वचन मन आनि रे आनि॥तू॥ भरत चक्रवर्ति षट षंड सा
धे॥ भावन भावत लही समाधि॥१॥तू॥ प्रसनचंद्र रिषि भयो सरोष। मन फेरत फिरि
पायो मोष॥तू॥ रावन समकित होत उदोत तब बांध्यौ तीर्थंकर गोत॥३॥तू॥ सुकल ध्या
न धरि गई सुकमाल॥ पहुंच्यौ पंचम गति तिहिं काल॥तू॥ दृढ प्रहारि करि हिंसा चारि
भयो मुकति निज गुन अवधारि॥४॥तू॥ देषहु परतषि भृंगी ध्यान॥ करत कीट भयो
ताहि समान॥तू॥ कहत बनारसि बारंबार। और न तोहि छुडावनहार॥५॥तू॥श्री॥ इति गी
तं॥७॥ राग आसावरी॥ रे मन कर सदा संतोष जातें मिटत सब दुषदोष॥रे॥ बढत परि
ग्रह मोह बढावत। अधिक त्रसना होति। बहुत ईंधन जरत जैसें अगिनि ऊंची जोति॥१॥रे म॥
लोभ लालच मूढ जनकें कहत कंचन दानि॥रे॥ फिरत आरत नहिं बिचारत धरम धन

गि बिचारि पाप तरुमूल ॥१९॥ गरभवास तु कूं चेतन कूं रथपाउ। से कष देषि बिचारि धर
म चित लाउ। चेतन इहि भवसागर धरम जहाज॥ तिहिं चढि बैस कू छांडि लोक की लाज।
॥२०॥ कहिया दकूं अब चेतन होव ऊवाट। कहिया जाव मुकति पुर संजम वाट। उधवा गाइ
सुनाई उ चेतन छैतु ॥ कहत बनारसि थान नरोत्तम हेतु ॥२१॥ इति उधोवा कंधे ॥ १०॥ राग ध
न्यासिरी ॥ चेतन उलटी चालि चलै॥ जड संगति तैं जडता व्यापी। निज गुन सकल टलै॥२
॥चे०॥ हित सौं विरचि ठगनि सौं राचे। मोह पिसाच छलै। हसि हसि फंद संवारे आपु ही। मे
लत आपु गलै॥२॥चे०॥ आए निकसि निगोद सिंधु तैं। फिरि तिहि पंथ टलै। कैसैं
प्रगट होइ आगि जो दवी पहार तलैं॥३॥चे०॥ भूले भव भ्रम बीच बनारसि तुम सम्या
न भले॥ गुन सुभ ध्यान ग्यान नौका चढि। बैठे ते निकलै॥४॥ इति गीत॥ १२ ॥ राग धन्या
सिरी॥ चे॰ तंन ने कुल तोहि संभार नष सिष लौं दिढ बंधन बैठे कौन करै निरवार

करै अहो अचानक घात ॥३॥ चेतन हौ तुम हे चेत न परम कुनीत ॥ तजहु कनक अरु कामि नि
वस होहु निचीत ॥ परेहु करम मैं चेतन जैसैं नट कीस । कोऊ न तोर सहाइ छाडि जगदीस ॥४॥
चेतन निबूझि विचारि धरहु संतोष ॥ राग द्वेष दुइ बंधन छूटत मोष । मोह जाल महि चेतन स
ब जग जानि । तेहि तु बाऊ तुहु बाऊहु सकति कुलानि ॥५॥ चेतन नराहु अ चेतन संगति पा
इ ॥ जसि चकमक आगि दबि नहि जाइ ॥ चेतन तोहि लपटान प्रेम रस फांद ॥ जस राषत घ
न तोपि विमल ससि चांद ॥६॥ चेतन तोहि कुलान नरक दुष वास ॥ आगि निधूम नतसु सरित
करवत पास । चेतन जे तिर जग जोनि फिराउ ॥ पांच पांच वग वेगि तोर अब दाउ ॥७॥ देव जो
नि सुष चेतन सुर गव सेर । जस विकुनी उ धतुर हरष सतन बेर ॥ चेतन नरतन पाइ बोध नहि
तोहि ॥ कुनिदहु कागति होइ हि अविरज मोहि ॥८॥ आदि निगोद निकेतन चेतन तोर भ
व अनेक फिरि आए हु कत हु न ओर विषै महारस चेतन विषय सम तूल छांडहु वे

विगारै कौंनसौं॥१॥ हि०॥ गए विलाइ भरमके वाहर। परमारथ पथ पौंनसौं। अब अंतरगत भ
ई हमारै॥ परचै राधारौंनसौं॥२॥ हि०॥ प्रगटी सुधपनकी महिमा। मन नहि लागै वौंनसौं॥ वि
नन सुहाहि और फीके रस॥ रुचि साहिबके लौंनसौं॥३॥ हि०॥ रहे अघाइ पाइ सुख संप
ति। कौंन कसै निज भौंनसौं॥ सहज भाव सदगुरकी संगति। सुरझे आवागौंनसौं॥४॥ हि
म०॥ इतिगीतं॥ २४॥ राग सारंग विंद्रावनी॥ सुषदायक सुषदेव। जगतमैं सादेवीनै
कौ देव॥ जासु चरन कर सत इंद्रादिक। होहि मुक्ति स्वयमेव॥१॥ जग०॥ जौंन छुधित न
त्रषित न भयाकुल। इंद्री विषयन वेव॥ जनम न होइ जरा नहि व्यापै। मिटी मरनकी टेव
॥२॥ जग०॥ जो कनहिं विषाद नहि विस्मय। नहि आगै अहमेव। राग विरोध मोह नहि जाकै
नहि निद्रा नहि सेव॥३॥ जगत॥ तन रोग न हिं श्रम न हिं चिंता॥ दोष अठारह भेव। मिटे स
हज जाकै ताप्रभुकी॥ करत वनारसि सेव॥४॥ जगत०॥ इतिगीतं॥ २५॥ राग सारंग॥ विरा

जैसैं आगिप षान काठ मैं। लषी न परति लगार। मदिरा पान कियैं मतवालौ। ताहि न क
बू विचार॥१॥ वै॰॥ ज्यौं गजराज पषारि आप तनु। आपु ही डारत छार। आपु ही उगिलि
पाट कौ कीरा तन हि लपेटत तीर॥२॥ वै॰॥ सहज कबूतर लोटन कौ सौ। षुलैं न पेच अपा
र। औरउ पाइ न बनैं बनारसि। सुमिरन भजन अधार॥३॥ इति गीत॥ ६२॥ राग सारंग॥
दुविधा कव जैहै या मन की। कव निज नाथ निरंजन सुमिरौं। तजि सेवा जन जन की॥१॥ कु॰॥
कव घट अंतर तै है निरंतर। दिढता सुगुरु वचन की। कव सुष ध्यान धरौं समता गहि।
करौं न ममता तन की॥२॥ कु॰॥ कव रुचि सौं पीवै डिग चातिक। बूंद अषैपद घन की। अव
सुष लहौं। मेटि परमारथ॥ मेटि धारना धन की॥३॥ कु॰॥ कव घर छांडि होउं एका की। लि
ये लालसा वन की॥ ऐसी दसा होइ अव मेरी॥ हौं वलि २ वा छिन की॥४॥ दुविधा॥ इति गी
त॥ ६३॥ राग सारंग॥ हम बैठे अपने मौन सौं। दिन दस के महमान जगत जन बोलि

गुरु कोमल भावसौं। कहै मूढ कौं सीष ॥१॥ सुगुरु सुपचारै मूढ कौं ॥ चेतु अचित चेतु ॥ सतगुरु
सतगुरु गुरु कौ सबद ॥ यह तेरो हित हेतु ॥२॥ सुगुरु का मारो सतगुरु जाहि सबद ॥ सतगुरु जि
न नूं लाहि रंच। तू मूरति ना टायनीवै तो षातिर जेव ॥३॥ हो हि ज्ञा हरी जगत मैं घट कौं
आपु षोल ॥ तू लास वास विवेक की। सबद जवाहर तोल ॥४॥ सबद जवाहर सबद
गुरु। सबद ब्रह्म कौ बीज ॥ सकल नगर नित सबद मे ॥ सतगुरु सबद कौ चीज ॥५॥ सत
जि के ता समझ ॥ अब है उरतें मदेह ॥ फिरि यह संगति कब मिलै। तू चात्रिक हौ मेह ॥६॥ इ
ति पदं ॥ २७ ॥ राग गौरी मौं दूं भाई सतगुरु सबद यह मेरा ॥ जो तूं देषै दरु आपि रुसौ
ता मैं कछु पन तेरा ॥१॥ मौं० ॥ आपैं तुम ही सौं उपजी ॥ तुम ही करे समाणी ॥ जहां रतु
मत ढूंढन कौ भ्रम। तू इन ही कौ राणी ॥२॥ मौं० ॥ आपै हो ऊर रईं चाम की ॥ चाम हि चाम
विलौवै। ताकी डेट मोह निदा जूत। सुपन रूप तू जावै ॥३॥ मौं० ॥ दरु आपि निकौ कौं

जैरामायनघटमाहिं॥मरमीहोइमरमसोजानैं॥मूरषमानैंनाहिं॥१॥विराज०॥आतम
रामग्यानगुनलछिन॥सीतासुमतिसमेत॥सुभउपयोगवानरदलमंडित॥वरविवेकरन
षेत॥२॥विरा०॥ध्यानधनुषटंकारसोरसुनि॥गैविषइदितिभागि॥भैभसममिथ्याम
तिलंका॥उठीधारनाआगि॥३॥वि०॥जरेअग्यानभावराषसकुल॥लरेनिकांछितसूर॥जू
झेरागदोषसेनापति॥संसैगढचकचूर॥४॥वि०॥विलषितकुंभकरनभवविभ्रम॥पुल
कितमदनदरियाव॥थकितउदारवीरमहिरावन॥सेतबंधसमभाव॥५॥वि०॥मूरछितमंदो
दरीदुरासा॥सजगचरनहनुमान॥घटीचतुरगतिपरनतिसेना॥छुटेछपकगुनबान॥६॥वि०
निरषिसकतिगुनचक्रसुदरसन॥उदैविभीषनदीन॥फिरैकमंधमहीरावनकी॥प्रानभाव
सिरहीन॥७॥विरा०॥इहिविधिसकलसाधघटअंतर॥होइसहजसंग्राम॥यहववहारदिष्टिराम
यन॥निहचैंकेवलराम॥८॥विराजि०॥५६॥रागगौरी॥ जोदातारदयालहो देहुदीनकौंभीष त्यौं

॥३॥ मौं०॥ जिन्ह आपि बिन सौं निरषि भेद गुन। ग्यानी ग्यान विचारै। जिन्ह आपि बिन्ह सौं ल
ष सरूप मुनि। ध्यान धारना धारै॥४॥ मौं०॥ जिन्ह आपि बिन्ह के आगे जगत के। लगै काज स
व झूठे। जिन्ह सौं सुमन होय सिव सनमुष। विषै विकार अपूठे॥५॥ मौं०॥ जिन्ह आ
पि तन मे अना परमकी। पर सहाइ नहि लेषै॥ जे समाधि सौं तकै अषंडित। ढकै नैप
लक निमेषै॥६॥ मौं०॥ जिन्ह आपि बिन की जोति प्रगटि कै। इन आपि बिन मै भासै। तव
इन दू की मिटै विजमना॥ समता रस परगासै॥७॥ मौं०॥ जिन आपि बे पूरन सरूप धरि। लो
कालोक लषावै॥ एवै पर वहु सब विकलप तजि॥ निरविकलप पद पावै॥८॥ मौं०॥ इति
गीतं॥ २५॥ रागकाफी॥ तू भ्रम भूलि न रे प्रानी सग्यानी। तू॥ धर्म विसारा विषै सुष से
वत। वे मतहीन अग्यानी॥१॥ तू॥ तन धन जन जीवन नर जोवन। दा मन अग्नी ज्यौं पानी। दे षिद
मा परंत छि बनारसि। ना करि होहु विरानी॥२॥ तू०॥ इति गीतं॥ रागकाफी॥ चिंतामनि

न मनरौसौ ।२। विनसौं ठानि मांही ॥ दै इनकौ परथै पुदगलसौं । तातें पुदगल नांही ॥४॥ मौं ॥
पराधीन बल इनु आंषिनु कौ । विनु पर गास न सूझै । सो परगास अगिनि ससि रवि कै
तू अपनौ करि बूझै ॥५॥ मौं ॥ षुलै पलक का किछु इक देषै । मुंदै पलक नहि सोऊ ॥ क
बहू जाहि होहि फिरि कबहू ॥ भ्रामक आंषें दोऊ ॥६॥ मौं दूं भाई ॥ जंगम काइ पाइ एप्र
गटै नहि थावर के साषी । तू तोइ नैं मानि अपने ढिग नयौ भीम कौ हाथी ॥७॥ मौं दूं ॥
तेरे द्रग मुंदित घट अंतर अंध रूप तू डोलै । कै तौ सहज षुलै वे आंषें कै गुरु संगति
षोलै ॥८॥ मौं ॥ इति गीतं ॥१८॥ राग गौरी ॥ मौं दूं भाई ते हिरदे की आंषें ॥ जे करषें अपनी
सुष संपति ॥ भ्रम की संपति नाषें ॥१॥ मौं ॥ जेन्ह आंषें अमृत रस । परषैं केवल वानी ॥ जिन्ह
आंषिन विलोकि परमारथ । होइ कृतारथ प्रानी ॥२॥ मौं ॥ जिन्ह आंषिन मैं दसा के
वल की कर्म लेप नहि लागै जिन्ह आंषिन के प्रगट होत घट अलष निरंजन जागै

वैगसंवर निकटसेवक। निरजरी दंत। आनंदकंद स्कंध साहिब। सुबस समाधि सेसत॥४
॥स०॥ जहा षिपक रूप समचमर ढारै। धर्मध्यान वजीर॥ आगम अध्यातम अंगरछिक
सातर सवर वीर ॥५॥स०॥ ऊनंधान विधि दस चारि विद्या। सकति निधि विसतार। संतो
षमित्र षवास धीरज। सुजस षिजमतिगार ॥६॥स०॥ धारना समता षिमा करुना। वारिसी
षिवकैं औरं॥ निर्जरा दोक चकुरदासी। कराहि षिजिमति जोर ॥७॥स०॥ जहां विनयधि
लि सातौ मकहा गिनि। करहिं धुनि जनकार॥ ऊसवचन राग सिंधत धुरपद। सारैन
अथिर विचार ॥८॥स०॥ सद्दहन साची मेघमाला। दानगर जैत घोर॥ उपदेस वरषा अ
ति मनोहर। भविक चातिक मोर ॥९॥स०॥ अनुभूति दामिनि दमकदी सै। सील सीतल
मीर। तप भेद तपति उछेद परगट। भाव रंगित वीर ॥१०॥स०॥- कवहु असेष प्रदेस
पूरनं। करत वस्ता संभाल। कवक विचारै करम परकिति। एकसौ अठताल ॥११॥ क

स्वामी। साचा साहिब मेरा॥ सोक हरै तिहुं लोक को। उठि लीजत नाउ सवेरा॥१॥ चिं०॥ सू
रसमान उदोत है। जग तेज प्रताप घनेरा। देषत मूरति भावसों। मिटि जात मिथ्यात अंधेरा।
॥२॥ चिं०॥ दीनदयाल निवारियै। दुष संकट जोनि वसेरा। मोहि अभै पद दीजियै। फिरि
होइ नहीं भव फेरा॥३॥ चिं०॥ विंव विराजत आगरै। थिर थान थयो सुभ वेरा। ध्यान धरै विन
ती करै। वानारसि वंदा तेरा॥४॥ चिंता॥ इति गीतं॥२४॥ हींडोलना लिष्यते॥ सहज हिंडोल
ना हरष हिंडोलना॥ झूलत चेतन राउ॥ जहां धर्म कर्म संजोग उपजत। रस स्वभाव विभा
व। जहां सुमन रूप अनूप मंदिर। सुरुचि भूमि सुरंग। तहां ग्यान दर्सन षंभ अविचल
चरन आन अभंग॥ स०॥१॥ मरुवा सुगुन परजाइ विवरन। भवर विमल विवेक। व्यव
हार निश्चै नय सु दंडी। सुमति पटली एक॥२॥ स०॥ षट कील जहां। षट द्रव्य निरनै।
अभय अंग अडोल। उद्यम उदय मिलि देहि झौंटा॥ सुभ असुभ कलोल॥३॥ स०॥ सं

ई॥ यातैं होति, और की औरै॥ गुन करनी कष दाई॥३॥ दे०॥ जोगासन करि पवन नि-
रोधै। अंतर दिष्टि न जागै। कथनी कथत महंत कहावै। ममता मूल न त्यागै॥४॥ दे०॥
आगम वेद सिद्धांत पाठ सुनि। हियैं आठपद आनैं। जाति लाभ कुल बल विद्या॥
अरु तासूप वषानैं॥५॥ दे०॥ जड़सौं राचि परमपद साधै। आतम सकति न सूझै। बिन
विवेक विचार दरब के। गुन परजाइ न बूझै॥६॥ दे०॥ जसवाले जस सुनि संतोषैं। तप
वाले तन सोषैं। गुनवाले परगुन कौं दोषैं॥ मतवाले मत पोषैं॥७॥ दे०॥ गुरु उपदेस सहज
उदयागति। मोह विकलता छूटै॥ कहत बनारसि है करुनाकरि। अलष अषै निधि
लूटै॥८॥ दे०॥ इति अष्टपदी॥ सवैया॥ ३१॥ नगर आगरे मैं अगरवाल आगरो गरंगगो-
त आगरे मैं नागर नवलसा संघही प्रसिद्ध अभैराज राजमाननीक पंचवाला नलिनी
मैं भयाहै कवलसा ताके परसिद्ध लघु मोहनदे संघइनि जाके जिनमारग विराजत ध

वकै अवेध अदीन असरन। लखत आपौ आप॥ अवहू निरंजन नाथ मानत। करत सुमि
रन जाप॥१२॥सं०॥ कवहूं गुनी गुन एक जानत। नियत नय निरधार॥ कवहूं सुकर
ता करम किरिया। कहत विधि विवहार॥१३॥सं०॥ कवहूं अनादि अनंत चेतन। क
वहूं रहित उपाधि। कवहूं सु आतम गुन संभारन। कवहूं सिद्ध समाधि॥१४॥सं०॥ इति
मोतिसह उजाहि मोल जूनत। करत उत्तम काम। भव तरन तारन दुष निवारन। सकल
सु निसिर ताज॥१५॥सं०॥ ते नर विच॰कून सदयल कून। करत प्पान विलास। क
र जोरि नमति विसेष विधि सौं। नमत केसौदास॥१६॥सं०॥ इति गीत॥ राग माला अथ सोर
ठ॥ देषौ भाई महाविकल संसारी दुषित अनादि मोह के कारन राग दोष भ्रम भारी
।देषौ भाई॥ हिंसारंभ करत सुष समझै। मृषा बोलि चतुराई॥ परधन हरत सम
थ कहावै। परिग्रह वढत वडाई॥२॥दे०॥ वचन राषि काया दिढ़ राषै मिटै न मन चपल॰

वलसा॥ ताही कौ सपूत जगजीवन सुदिढ जैन वनारसी वैन जाके हिये मैं सवलसा॥१॥ समै जो
ग पाइ जगजीवन विख्यात भयौ ग्यातनि की मंडली मैं जिसकौ विकास है। तिन नैं विचार
कीना नाटक वनारसी का आपके निहारवे कौं आरसी श्वका -स है॥ और का विघनी घरी
करी है वनारसीनैं सो नीए कक्रम सेती कीजै त्पान नाम है॥ औसी जानि एक ठौर कीनी सव
भाषा जोरि ताकौ नाम धस्यौ यौं वनारसी विलास है॥२॥ दोहा॥ सं·त्रह सै एकोतरे। समै
चैत सित पांष॥ इति या सौ पूरन भई। यह वनारसी भाष॥१॥ इति श्री वनारसी विलास भाषा
समाप्त॥ संवत् अगरह सै सैंतीस : १८३७ मिती फागुन वदि अष्टमी : ८ दिन सुक्करवार
कौं पूरन कियौ: लिपी कृतं कन्हीमल पदमावतीपुरवार : पठनार्थं वावू लछिमीनाराम न॥१॥
।इति श्री वीतरागाय नमः॥ श्री श्री श्री॥ श्री श्री श्री॥ श्री श्री श्री॥

(रा) ए॰ श्री जैन सिद्धांत भवन

SHRI JAIN SIDDHANTA BHAVAN * ARRAH *
श्री जैन सिद्धान्त भवन । आरा ।